



विक्रम संवत् 2082 • कार्तिक मास/अगहन (मार्गशीर्ष) (09) • 01 नवम्बर 2025 • मूल्य : 23 रु.

चरैवेति



भारतीय नौसेना
हिंद महासागर की संरक्षक



- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गांधी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।



- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्रीशैलम में श्री भ्रामराम्बा मल्लिकार्जुन स्वामी वरला देवस्थानम में दर्शन और पूजा की।



- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की।



- भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने “सरदार@150 एकता मार्च” अभियान कार्यशाला का उद्घाटन किया।



- केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने बिहार में जनसभा को संबोधित किया।



- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तथा भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने बीजेपी सीईसी की बैठक में भाग लिया।



- भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने खादी के वस्त्र खरीदे।



- भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने नेक्स्टजेन जीएसटी सुधारों के संबंध में व्यापारियों से बातचीत की।

अनुक्रमणिका

- » **संपादकीय** - संजय गोविन्द खोचे **04**
- मोदी जी के नेतृत्व में मजबूत व आत्मनिर्भर भारत
- » **कवर स्टोरी** **05**
- भारतीय नौसेना हिंद महासागर की संरक्षक

05



- **गुवाहाटी इन्टरैक्टिव सेशन** **08**
- » मध्यप्रदेश आइडियल डेस्टिनेशन मुख्यमंत्री डॉ. यादव
- **घुसपैठ, जनसांख्यिकी परिवर्तन और लोकतंत्र** **10**
- » घुसपैठ, जनसांख्यिकीय, एसआईआर देश का मुद्दा है...
- **आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान** **15**
- » आत्मनिर्भर भारत-आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश हेतु प्रतिबद्ध...
- » मध्यप्रदेश आत्मनिर्भर भारत बनाने में बड़ा योगदान देगा...
- **श्री विजयादशमी उत्सव 2025** **17**
- » स्वदेशी तथा स्वावलंबन का कोई पर्याय नहीं...
- **किसान आभार सम्मेलन** **21**
- » हर निर्णय किसानों के कल्याण हेतु - डॉ. मोहन यादव
- **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** **23**
- » पहचान

17



- **सांसद खेल महोत्सव** **24**
- » युवाओं को जोड़ने का काम कर रहा खेल महोत्सव...
- **संघ शताब्दी वर्ष** **25**
- » संघ शाखा से स्वयंसेवक की अहम से वयम की यात्रा...
- **आलेख : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव** **30**
- » मध्यप्रदेश में निवेश, नवाचार और रोजगार के संकल्प...
- **मन की बात** **32**
- » 'वन्देमातरम्' की भावना भारत की अमर चेतना से जुड़ी है...
- **जयंती** **38**
- » प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री रानी लक्ष्मीबाई
- » बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक
- » सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले
- **विचार प्रवाह** **41**
- » कांग्रेस बनाम जनसंघ

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. देवउठनी (प्रबोधिनी) ग्यारस 2. चातुर्मास समाप्त 3. प्रदोष व्रत 4. वैकुण्ठ चतुर्दशी 5. स्नानदान व्रत रास पूर्णिमा, कार्तिक, त्रिपुरारी पूनम 8. गणेश चतुर्थी व्रत 12. काल भैरवाष्टमी 15. उत्पन्ना एकादशी व्रत 17. प्रदोष व्रत 18. शिव चतुर्दशी व्रत 19. श्राद्ध अमावस 20. स्नानदान अमावस्या 22. चन्द्रदर्शन 24. विनायक चतुर्थी व्रत 25. विवाह पंचमी, नाग दिवाली 26. चम्पा छठ, बैंगन छठ 27. नंदा सप्तमी

• मुख्य जयंती-दिवस

1. श्री खाटूश्याम अवतरण दिवस, पंढरपुर यात्रा, कवि कालिदास ज., म.प्र., छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस 5. नर्मदा परिक्रमा भेड़ाघाट जबलपुर 14. अंतर्राष्ट्रीय मधुमेह दिवस 15. राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस 17. लाला लाजपत राय बलिदान दिवस 22. वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि 25. गुरू तेगबहादुर शहीदी दिवस 26. संविधान दिवस, डॉ. हरिसिंह गौर जयंती



वर्ष-57, अंक : 09, भोपाल, नवम्बर 2025



हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

समृद्धि का आधार धर्म है। इस संबंध में हम पाते हैं कि हमारा आधार धर्म, अभावात्मक नहीं है। हमारे यहां अभाव का नहीं संयम का विचार किया गया है। सादा जीवन का विचार किया गया है, धन पैदा किया तो उसका उपयोग धर्मानुसार करना चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

सम्पादक

मुद्रक एवं प्रकाशक
संजय गोविंद खोचे*

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक

योगेन्द्रनाथ बरतरिया

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.वी.एक्ट के तहत जिम्मेदार



मोदी जी के नेतृत्व में मजबूत व आत्मनिर्भर भारत

मोदी जी के नेतृत्व में जनता को भाजपा व कांग्रेस शासन की नीतियों, कार्यक्रमों और योजनाओं के अंतर को साफ-साफ अनुभव करने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के शासन प्रमुख की भूमिका में 6 अक्टूबर को 24 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। मोदी जी के नेतृत्व में जनता को भाजपा व कांग्रेस शासन की नीतियों, कार्यक्रमों और योजनाओं के अंतर को साफ-साफ अनुभव करने का अवसर प्राप्त हुआ। भाजपा सरकार मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा के गठन के उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल रही है। जनता से किये गये प्रमुख वादे- जैसे धारा 370 का खात्मा, तीन तलाक से मुक्ति, राम मंदिर का निर्माण, पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा, संविधान की भावना के अनुरूप शासन व्यवस्था का परिचालन, परिवारवाद- भाई भतीजावाद से मुक्ति, हमारा कोई नहीं-कोई हमसे दूर नहीं-कोई पराया नहीं, भ्रष्टाचार मुक्त पारदर्शी शासन, तनाव के क्षेत्र में स्थाई शांति व्यवस्था, नक्सलवाद से मुक्ति, घुसपैठियों को डिडकट-डिलीट और डिपोर्ट की व्यवस्था, आतंकवाद से मुक्ति, आतंकवाद का स्थाई समाधान, सीमा पर शांति व सुरक्षा, सेना का सम्मान, आत्मनिर्भर व विकसित भारत@2047 का निर्माण, अंत्योदय, हर घर बिजली, हर घर नल से पानी, हर घर शौचालय, गरीबों को पक्की छत, गरीबों का मुफ्त इलाज, आयकर सीमा में वृद्धि, एक देश-एक कर, पर्यावरण संरक्षण, संस्कृति संरक्षण, संस्कृति का विकास, महिलाओं की शासन व नीति निर्णय में सक्रिय भागीदारी का सुनिश्चितकरण, 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय स्तर का इंफ्रास्ट्रक्चर, रेल-रोड-जल- हवाई यातायात का विस्तार, शिक्षा, आयात का निर्यात में परिवर्तन, स्वतंत्र, सक्षम व मजबूत देश का निर्माण- जैसे अनेकों वादों व लक्ष्यों को 12 वर्षों के शासन की अल्प अवधि में पूरा कर लिया गया है। यही वह कारण है जो श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व को विशिष्ट, विशेष व अद्वितीय बनाते हैं। श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा मजबूत व आत्मनिर्भर भारत का निर्माण कर रही है। मजबूत व आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के सभी लक्ष्यों को पाने व पूरा करने का भरसक प्रयास तेजी से जारी है। जल्दी ही भारत के नए 60 करोड़ लोग अपने आप को गरीबी रेखा से बाहर आने की घोषणा करेंगे और भारत अपने आप को विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बना लेगा, जीएसटी रिफॉर्म व आयकर सीमा में वृद्धि का घरेलू मार्केट पर जोरदार असर प्रकट होगा, निश्चित ही भारत का

भविष्य प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मजबूत नेतृत्व में सुरक्षित और संरक्षित है, एवं विकसित भारत@2047 की तरफ तेजी से अग्रसर है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी दीपावली पर्व सेना के परिजनों के साथ मनाते हैं। इस बार की दीपावली मनाने प्रधानमंत्री जी आईएनएस विक्रांत पर भारतीय नौ सेना के सानिध्य में गए। आईएनएस विक्रांत केवल एक युद्धपोत नहीं है यह विशाल है, विराट है, विशिष्ट है। आईएनएस विराट 21वीं सदी के भारत के परिश्रम, प्रतिभा, प्रभाव व प्रतिबद्धता का परिणाम है। आत्मनिर्भर भारत का प्रमाण है। यह आज के भारत की ताकत है।

घुसपैठ और जनसंख्या परिवर्तन देश का मुद्दा है। लोकतंत्र में सरकार, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री चुनने का अधिकार देश के नागरिकों को दिया गया है। पर घुसपैठिए अगर इस प्रक्रिया में भाग लेंगे तो वह ऐसी सरकार, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को चुनेंगे- जो उनको सहयोग प्रदान करें। ऐसे में लोकतंत्र की भावना ही नष्ट हो जावेगी। चुनाव आयोग की जिम्मेदारी मतदाता सूची के शुद्धिकरण की है और चुनाव आयोग एसआईआर के माध्यम से मतदाता सूची का शुद्धिकरण कर रहा है। सभी राजनीतिक दलों व मतदाताओं को स्वप्रेरणा से चुनाव आयोग के इस पुनीत कार्य में सहयोग कर लोकतंत्र को मजबूत करने में सहयोग प्रदान करना चाहिए। राजनीतिक दलों में मतभेद स्वाभाविक हैं पर मतदाता सूची के शुद्धिकरण पर सभी राजनीतिक दलों को मतभेदों से ऊपर उठकर देश हित में सहयोग करना चाहिए।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई जी ने देश के अतीत को गौरव के साथ देखने को कहा था। उन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी में भाषण देकर न केवल मातृभाषा को सम्मान दिया था बल्कि देश का गौरव भी बढ़ाया था। स्वदेशी उत्पाद भारत का गौरव हैं, आत्मनिर्भर भारत का रास्ता- आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश से होकर निकलता है। आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश का रास्ता स्वदेशी उत्पादों के सम्मान भाव व उपभोग से होकर निकलता है। इस प्रकार स्वदेशी उत्पादों का सम्मान व उपभोग ही आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश-आत्मनिर्भर भारत के आधार की नींव है। आत्मनिर्भर भारत निर्माण में आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश की हिस्सेदारी व सहयोग आवश्यक है।

संघ की गौरवमयी यात्रा के 100 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। संघ शताब्दी वर्ष में श्री नरेंद्र मोदी जी ने विशेष डाक टिकट व सिक्का जारी किया। 100 रुपये के सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय चिन्ह है और दूसरी ओर सिंह के साथ वरद मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि और समर्पण भाव से उसे नमन करते हुए स्वयंसेवक दिखाई देते हैं। इस सिक्के के ऊपर संघ का बोध वाक्य अंकित है। “राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं ना मम”।

भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाले महान विभूति की 150 वीं जयंती का अवसर भारत के लिए बहुत महत्व का अवसर है। सरदार वल्लभभाई पटेल की इस जयंती के अवसर पर देश भर में ‘रन फॉर यूनिटी’ का आयोजन किया गया। भोपाल में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल ने ‘रन फॉर यूनिटी’ को हरी झंडी दिखाकर खाना किया तथा युवाओं को एकता की दौड़ से एकता को मजबूत करने का संदेश वा अवसर प्रदान किया।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी व भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश बनाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। मुख्यमंत्री जी निवेशकों को मध्य प्रदेश आमंत्रित करने का सघन प्रयास कर रहे हैं। निवेश के साथ-साथ मध्य प्रदेश के राजस्व, रोजगार उपलब्धता पर खासा प्रभाव आने वाला है। वहीं प्रदेश अध्यक्ष जी विकसित मध्य प्रदेश के लक्ष्य को हासिल करने के लिए संगठन को घर-घर तक पहुंचाने व संगठन को मजबूत करने के लिए विशेष प्रयास जारी रखे हैं। प्रधानमंत्री जी की मन की बात कार्यक्रम जो अभी तक 82 प्रतिशत बूथों पर सुना जा रहा था उसे 100 प्रतिशत बूथों पर सुनने का संगठनात्मक प्रयास हैं। 100 प्रतिशत बूथों पर भाजपा संगठन की पकड़ भाजपा को प्रदेश में मजबूती प्रदान करेगी और संगठन की जड़ों को गहराई तक ले जाने में सफलता मिलेगी। सरकार के स्थायित्व के लिए संगठन की मजबूती बहुत आवश्यक है। ■

(संजय गोविन्द खोचे)

सम्पादक



भारतीय नौसेना हिंद महासागर की संरक्षक



विक्रांत विशाल है, विराट है, विहंगम है। विक्रांत विशिष्ट है, विक्रांत विशेष भी है, विक्रांत केवल युद्धपोत नहीं है, यह 21वीं सदी के भारत के परिश्रम, प्रतिभा, प्रभाव और प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

जिस दिन देश को स्वदेशी आईएनएस विक्रांत मिला था, उसी दिन भारतीय नौसेना ने गुलामी के एक बड़े प्रतीक चिन्ह का त्याग कर दिया था। नेवी ने छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रेरणा से नया ध्वज अपनाया था।

- आईएनएस विक्रांत सिर्फ एक युद्धपोत नहीं है, यह 21वीं सदी के भारत की कड़ी मेहनत, प्रतिभा, प्रभाव और प्रतिबद्धता का प्रमाण है।
- आईएनएस विक्रांत आत्मनिर्भर भारत और मेड इन इंडिया का एक विशाल प्रतीक है।
- तीनों सेनाओं के बीच असाधारण समन्वय ने पाकिस्तान को ऑपरेशन सिंदूर के दौरान आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया।
- पिछले एक दशक में, हमारे रक्षा बल लगातार आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़े हैं।
- हमारा लक्ष्य भारत को दुनिया के शीर्ष रक्षा निर्यातकों में से एक बनाना है।
- भारतीय नौसेना हिंद महासागर के संरक्षक के रूप में खड़ी है।
- सुरक्षा बलों के पराक्रम और दृढ़ संकल्प की वजह से, देश ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है, हम माओवादी आतंकवाद को खत्म कर रहे हैं।
- नौसेना के वीर जवानों के बीच दिवाली पर प्रधानमंत्री।

एक ओर अथाह समुद्र, तो दूसरी ओर मां भारती के वीर सिपाहियों का अथाह सामर्थ्य। एक ओर अनंत क्षितिज, अनंत आकाश, तो

दूसरी ओर अनंत शक्तियों को समेटे विशाल, विराट आईएनएस विक्रांत।

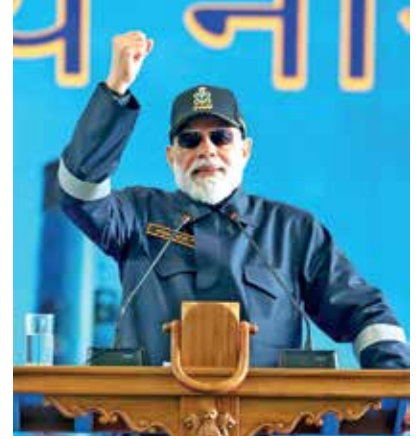
समुद्र के पानी पर सूर्य की किरणों की चमक, वीर जवानों द्वारा जलाए दीपावली के दीये हैं। यह हमारी अलौकिक दीप मालाएं हैं।

समुद्र की गहरी रात और सुबह का सूर्योदय, दिवाली कई मायनों में खास बन गई।

दीपावली के पर्व में हर किसी को अपने परिवार के बीच दिवाली मनाने का मन करता है। मुझे भी मेरे परिवारजनों के बीच दिवाली मनाने की आदत हो गई है और इसलिए परिवारजन के बीच दिवाली मनाने चला जाता हूं।

आईएनएस विक्रांत को देश को सौंपा जा रहा था, तो मैंने कहा था विक्रांत विशाल है, विराट है, विहंगम है। विक्रांत विशिष्ट है, विक्रांत विशेष भी है, विक्रांत केवल युद्धपोत नहीं है, यह 21वीं सदी के भारत के परिश्रम, प्रतिभा, प्रभाव और प्रतिबद्धता का प्रमाण है। जिस दिन देश को स्वदेशी आईएनएस विक्रांत मिला था, उसी दिन भारतीय नौसेना ने गुलामी के एक बड़े प्रतीक चिन्ह का त्याग कर दिया था। नेवी ने छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रेरणा से नया ध्वज अपनाया था।

आईएनएस विक्रांत आत्मनिर्भर भारत और मेड इन इंडिया का बहुत बड़ा प्रतीक है। महासागर को चीरता हुआ, स्वदेशी आईएनएस विक्रांत भारत की सैन्य क्षमता का प्रतिबिंब है। जिसका नाम ही दुश्मन के साहस का अंत कर दे, वो है आईएनएस विक्रांत!



भारतीय नौसेना द्वारा पैदा किया भय, भारतीय वायुसेना द्वारा दिखाए गए अद्भुत कौशल तथा, भारतीय सेना की जांबाजी, तीनों सेनाओं के जबरदस्त समन्वय ने ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान को जल्दी घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया था।

जब दुश्मन सामने हो, जब युद्ध की आशंका हो, जब जिसके पास अपने दम पर लड़ाई लड़ने की ताकत हो, उसका पलड़ा हमेशा भारी रहता है। सेनाओं के सशक्त होने के लिए उनका आत्मनिर्भर होना बहुत आवश्यक है। वीर जवान इसी मिट्टी में पैदा हुए हैं, इसी मिट्टी में पले हैं, जिस मां की गोद से उन्होंने जन्म लिया है, वो मां भी इसी मिट्टी में पली बड़ी है और इसलिए इस मिट्टी के लिए मरने के लिए, इस मिट्टी के मान सम्मान के लिए अपने आप को खपा देने की वो प्रेरणा रखता है। दुनिया से साढ़े 6 फिट के हट्टे-कट्टे जवानों को लाकर मैं खड़ा कर दूंगा और कहूंगा, आपको पैसे बहुत दूंगा, लड़ लो, क्या वो आपकी तरह मरने के लिए तैयार होंगे? क्या आपकी तरह वो जान लगा देंगे? जो ताकत आपका भारतीय होने में है, जो ताकत आपका जीवन भारत की मिट्टी से जिस प्रकार से जुड़ा हुआ है, वैसे ही हमारा हर औजार, हमारा हर शस्त्र, हमारा हर पुर्जा जैसे-जैसे भारतीय होता जाएगा, हमारी ताकत को चार चांद लग जाएंगे। हमें गर्व है कि पिछले एक दशक से हमारी सेनाएं तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही हैं। हमारी सेनाओं ने हजारों ऐसे सामानों की लिस्ट बनाई और तय किया कि अब यह सामान बाहर से नहीं मंगवाया जाएगा। नतीजा यह हुआ कि सेना के लिए जरूरी ज्यादातर सजो सामान अब देश में ही तैयार होने लगा है। पिछले ग्यारह वर्षों में हमारा डिफेंस प्रोडक्शन तीन गुना से ज्यादा हो गया है। पिछले साल तक यह रिकॉर्ड डेढ़ लाख करोड़ रुपए से अधिक पहुंच गया है। 2014 से अब तक भारतीय शिपयार्ड से नौसेना को 40 से

ज्यादा स्वदेशी युद्धपोत और पनडुब्बियां मिले हैं। आज हमारी क्षमता क्या है, अब तो औसतन हर 40 दिन में एक नया स्वदेशी युद्धपोत या पनडुब्बी नेवी में शामिल की जा रही है, हर 40 दिन में एक।

हमारी ब्रह्मोस और आकाश जैसी मिसाइलों ने ऑपरेशन 'सिंदूर' में भी अपनी क्षमता साबित की है। ब्रह्मोस का तो नाम ही ऐसा है कि सुनते ही कई लोगों को चिंता हो जाती है कि ब्रह्मोस आ रहा है क्या! अब दुनिया के कई देश इन मिसाइलों को खरीदना चाहते हैं। विश्व के जो भी लोग मिलते हैं, उनकी इच्छा एक होती है कि हमें भी मिल जाए। भारत तीनों ही सेनाओं के लिए हथियार और उपकरण एक्सपोर्ट करने की क्षमता बिल्ड कर रहा है। हमारा लक्ष्य है कि भारत पूरी दुनिया के टॉप डिफेंस एक्सपोर्टर देशों में शामिल हो। पिछले एक दशक में हमारा डिफेंस एक्सपोर्ट 30 गुना से अधिक बढ़ गया है। और सफलता के पीछे बहुत बड़ी भूमिका डिफेंस स्टार्टअप की है, स्वदेशी डिफेंस इकाईयों की है। आज हमारा स्टार्टअप भी दम दिखा रहा है।

शक्ति और सामर्थ्य को लेकर भारत की परंपरा रही है-

ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय !

अर्थात्, हमारा विज्ञान, हमारी समृद्धि और हमारी ताकत, मानवता की सेवा और मानवता की सुरक्षा के लिए होती है। आज जब interconnected world में देशों की अर्थव्यवस्था और प्रगति समुद्री रास्तों पर निर्भर है, तब भारत की नेवी ग्लोबल stability में अहम भूमिका निभा रही है। आज दुनिया की 66 परसेंट oil supply, दुनिया के 50 परसेंट कंटेनर शिपमेंट, हिंद महासागर से होकर गुजरते हैं। इन रूट्स की सुरक्षा में इंडियन नेवी भारतीय महासागर की guardian की तरह तैनात है। इसके अलावा, Mission-based deployments के जरिए, Anti-piracy patrols के जरिए और मानवीय

मदद वाले operations के जरिए, भारतीय नौसेना इस पूरे रीजन में ग्लोबल सेक्योरिटी पार्टनर की भूमिका निभाती है।

हमारे islands की security और integrity में भी नेवी का बड़ा रोल है। कुछ समय पहले, हमने फैसला लिया था कि 26 जनवरी को देश के हर island पर तिरंगा फहराया जाना चाहिए। देश के उस संकल्प को नेवी हर 26 जनवरी को आन-बान-शान के साथ पूरा करती रहती है, आज भारत के हर द्वीप पर नौसेना तिरंगा फहरा रही है।

जब भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है, तो हम प्रयास कर रहे हैं कि भारत के साथ ग्लोबल साउथ के सभी देश भी तेजी से आगे बढ़ें और इसके लिए हम 'महासागर मैरिटाइम विजन', उस पर हम तेज गति से काम कर रहे हैं। हम कई देशों के विकास में उनके पार्टनर बन रहे हैं और साथ ही, अगर जरूरत पड़ती है, तो हम धरती के किसी भी कोने में मानवीय मदद के लिए भी मौजूद रहते हैं। अफ्रीका से लेकर साउथ ईस्ट एशिया तक, आपदा के समय, विपत्ति के समय दुनिया भारत को विश्वबंधु के रूप में देखती है। 2014 में हमारे पड़ोसी देश मालदीव में पानी का संकट आया, हमने ऑपरेशन नीर चलाया। हमारी नेवी स्वच्छ पानी लेकर मालदीव पहुंची। 2017 में श्रीलंका में बाढ़ की विभीषिका आई, भारत ने सबसे पहले मदद का हाथ बढ़ाया। 2018 में इंडोनेशिया में सुनामी की तबाही आई, भारत राहत बचाव के कामों में इंडोनेशिया के लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो गया। इसी तरह, म्यांमार में भूकंप से आया विनाश या फिर 2019 में मोजाम्बीक और 2020 में मेडागास्कर का संकट हो, भारत हर जगह सेवा की भावना से पहुंचा।

हमारी सेनाओं ने विदेशों में फंसे लोगों को सुरक्षित लाने के लिए भी समय-समय पर अभियान चलाए हैं। यमन से लेकर सुडान तक, जहां-जहां



जरूरत पड़ी, आपके शौर्य और साहस ने दुनिया भर में रह रहे भारतीयों के भरोसे को बहुत मजबूत किया है, हमने हजारों विदेशी नागरिकों का भी जीवन बचाया है, सिर्फ भारतीयों का नहीं, उस देश में फंसे हुए कई देश के नागरिकों को भी हम बचा कर के निकाल कर के लाए, उनके घर तक पहुंचाया है।

हमारे सैन्य बलों ने जल-थल-नभ, हर मोर्चे पर और हर परिस्थिति में देश की सेवा की है, समर्पण भाव से सेवा की है, पूरी संवेदनशीलता के साथ सेवा की है। समंदर में हमारी नेवी देश की समुद्री सीमाओं और व्यापारिक हितों की सुरक्षा के लिए तैनात रहती है। आकाश में हमारी एयरफोर्स भारत की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहती है और जमीन पर, तपते रेगिस्तान से लेकर ग्लेशियर्स तक, हमारी सेना, हमारे BSF के जवान, हमारे ITBP के जवान सब मिलकर के चट्टान की तरह खड़े रहते हैं। इसी तरह, अलग-अलग मोर्चों पर, SSB, असम राइफल्स, CRPF, CISF और इंटेलिजेंस एजेंसीज के जवान भी seamlessly एक unit के रूप में हर जवान माँ भारती की सेवा में डटा रहता है।

सुरक्षा बलों के पराक्रम और सुरक्षा बलों के साहस के कारण ही बीते वर्षों में देश ने एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है। यह उपलब्धि है- माओवादी आतंक का खात्मा! आज देश नक्सली-माओवादी आतंक से मुक्ति की कगार पर है, मुक्ति दस्तक दे रही है। 2014 से पहले देश के करीब सवा सौ जिले माओवादी हिंसा की चपेट में थे, पिछले 10 साल की मेहनत के कारण यह संख्या घटती गई। और अब सवा सौ से घटकर के सिर्फ 11 रह गई है, और थोड़ा अभी भी उनका प्रभाव नजर आ रहा है, वो संख्या तो सिर्फ 3 जिले बचे हैं, 125 में से सिर्फ 3, सौ से ज्यादा जिले माओवादी आतंक से पूरी तरह आजाद होकर पहली बार खुली हवा में सांस ले रहे हैं, शानदार

दिवाली मना रहे हैं। करोड़ों लोग पीढ़ियों बाद पहली बार डर और खौफ से, उसके साथे से निकलकर विकास की मुख्यधारा का हिस्सा बन रहे हैं। जिन इलाकों में माओवादी नक्सली सड़कें नहीं बनने देते थे, स्कूल नहीं खुलने देते थे, अस्पताल नहीं बनने देते थे, बने-बनाए चल रहे स्कूलों को बम से उड़ा दिए जाते थे, अस्पतालों को, डॉक्टरों को गोलियों से भून दिया जाता था, मोबाइल टावर्स नहीं लगने देते थे, वहाँ अब हाइवेज बन रहे हैं, नए उद्योग लग रहे हैं, स्कूल और अस्पताल वहाँ के बच्चों का भविष्य गढ़ रहे हैं। देश को सफलता हमारे सभी सुरक्षा बलों के तप, त्याग और साहस से ही मिली है।

पुलिस बेटे के अलग-अलग जवानों ने, चाहे बीएसएफ हो, सीआरपीएफ हो, सारे बेटे के जवानों ने नक्सलियों के साथ जो लोहा लिया है, जो लड़ाई लड़ी है, काबिल-ए-दाद है, मैं ऐसे जवानों को जानता हूँ, जिनके पास अब पैर नहीं है, लेकिन जज्बा वैसा ही है, किसी का हाथ कटा हुआ है, किसी के लिए व्हीलचेयर से उतरना मुश्किल हो गया है, मैं ऐसे अनेक परिवारों को जानता हूँ, जिन्हें माओवाद नक्सलियों ने उनको शिकार बनाया, हाथ काट दिए, पैर काट दिए, गांव में जीना मुश्किल कर दिया, ऐसे अनगिनत लोगों ने जो सहा है, जो बलिदान दिया है, शांति के लिए, नागरिकों की जिंदगी बेहतर बनाने के लिए, बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो, स्कूल चले, इसके लिए उन्होंने अपने आपको न्योछावर कर दिया है।

शायद आजादी के बाद पहली बार पुलिस बेटे के सामने इतनी बड़ी चुनौती आई और पिछले 10 साल में 50 साल की इस भयंकर बीमारी को वो खत्म करके रहेंगे और 90 परसेंट केस में वो सफल हो चुके हैं।

GST बचत उत्सव में इन जिलों में रिकॉर्ड बिक्री हो रही है, रिकॉर्ड खरीदी हो रही है। जिन जिलों में कभी माओवादी आतंक ने संविधान का

नाम नहीं लेने दिया, संविधान के दूर से भी दर्शन नहीं करने दिए, आज उन्हीं जिलों में स्वदेशी का मंत्र गूंज रहा है और गुमराह हुए नौजवान 3 नॉट 3 छोड़कर के संविधान को माथे पर लगा रहे हैं।

भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। हम 140 करोड़ देशवासियों के सपनों को पूरा कर रहे हैं। जमीन से लेकर अंतरिक्ष तक, पहले जो कल्पना से भी परे था, आज वो सफलताएँ, वो उपलब्धियाँ हम अपने सामने देख रहे हैं। यह गति, यह प्रगति, यह परिवर्तन, देश का विश्वास और विश्वास की कोख से पैदा हुआ विकास का मंत्र राष्ट्र निर्माण के इस महान कार्य में हमारे सैन्य बलों की बहुत बड़ी भूमिका है। आप प्रवाह में बहने वालों में नहीं हैं। गंगा कहे गंगादास, जमुना कहे जमुनादास, यह सेना की रागों में नहीं होता है, प्रवाह में बह जाने वाले लोग आप नहीं हैं। आप में क्षमता है- प्रवाह को दिशा देने की, प्रवाह को मोड़ने की! आप में साहस है- समय को मार्ग दिखाने का! आप में पराक्रम है- अपरिमित को पार कर जाने का! आप में हौसला है- अलंघ्य को लांघ जाने का! हमारी सेना के जवान जिन पर्वत शिखरों पर डटे हैं, वो शिखर भारत के विजय स्तम्भ बनकर के उभरे हैं।

आप जिस सागर के सीने पर खड़े हैं, इस समंदर की महान लहरें भी भारत का जयघोष कर रही हैं। भारत माता की जय! सिर्फ आप नहीं, एक-एक लहर बोल रही है, आप से ही सीखा है। आपने समंदर की इन लहरों को भी माँ भारती का जय जयकार करने का जज्बा पैदा कर दिया है। इस कोलाहल से भी एक ही स्वर निकलेगा, समंदर की हर लहर से, पहाड़ों से चलती हुई हवा से, रेगिस्तान से उड़ती हुई मिट्टी से, अगर कान खोलकर के सुनेंगे, दिल-दिमाग को जोड़कर के देखेंगे, तो मिट्टी के कण-कण से, जल की बूंद-बूंद से एक ही आवाज निकलेगी-

भारत माता की जय!

भारत माता की जय! ■

मध्यप्रदेश आइडियल डेस्टिनेशन मुख्यमंत्री डॉ. यादव



मध्यप्रदेश की देश में केंद्रीय स्थिति, भरपूर बिजली-पानी, कुशल श्रमशक्ति और उत्कृष्ट लॉजिस्टिक्स सुविधाओं से हमारा राज्य उद्योग स्थापना के लिए देश का आइडियल डेस्टिनेशन बन चुका है। मध्यप्रदेश की देश के प्रमुख शहरों से बेहतरीन कनेक्टिविटी भी निवेशकों को अतिरिक्त लाभ देती है।

- म. प्र. में उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाएं और करें अपना उद्योग स्थापित।
- उद्योगपतियों और निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश के लिए किया आमंत्रित।
- श्रीकृष्ण और माता रूक्मणी प्रसंग में आपस में जुड़े हैं मध्यप्रदेश और असम।
- गुवाहाटी में हुआ इन्टरैक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट अपॉर्च्युनिटीज इन मध्यप्रदेश।
- पीएम मित्र पार्क में उद्योग लगाने के लिए निवेशकों को आमंत्रित किया।

- म. प्र. और असम मिलकर कर सकते हैं कई सेक्टर में काम।
- मध्यप्रदेश में उद्योग लगाने के लिए सभी जरूरी साधन-संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं।
- वनों को समृद्ध करने वन्य प्राणियों का हो आदान-प्रदान।
- मध्यप्रदेश बिजली उत्पादन में देश में है अग्रणी।
- उद्योगपतियों ने दिखाई म. प्र. में निवेश की रूचि, दिये प्रस्ताव।

मध्यप्रदेश, देश का दिल है। नदियों के मायके और बाघों की सहज दृश्यता

वाली ये वो पवित्र धरती है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अपना बचपन बिताया और शिक्षा-दीक्षा भी प्राप्त की। मध्यप्रदेश और असम का 5 हजार साल पुराना संबंध है। इतिहास में श्रीकृष्ण और माता रूक्मणी प्रसंग में मध्यप्रदेश और असम आपस में जुड़े हैं। बावन शक्ति-पीठों में से एक देवी कामाख्या शक्तिपीठ असम की धरती पर है और मध्यप्रदेश में कालों के काल बाबा महाकाल विराजमान हैं। मध्यप्रदेश हृदय प्रदेश होने के साथ आज देश का सबसे उपयुक्त निवेश प्रदेश है। मध्यप्रदेश की देश में केंद्रीय स्थिति, भरपूर बिजली-पानी, कुशल श्रमशक्ति और उत्कृष्ट लॉजिस्टिक्स सुविधाओं से हमारा राज्य उद्योग स्थापना के लिए देश का आइडियल डेस्टिनेशन बन चुका है। मध्यप्रदेश की देश के प्रमुख शहरों से बेहतरीन कनेक्टिविटी भी निवेशकों को अतिरिक्त लाभ देती है। मध्यप्रदेश में निवेश हर मायने में फायदे का सौदा है। असम के उद्योगपति और निवेशक मध्यप्रदेश में उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाएं और यहां अपने उद्योग एवं निर्माण ईकाइयां स्थापित करें। सरकार हर कदम पर निवेशकों को पूरा सहयोग और आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराएगी। यदि निवेशक कोई रोजगार आधारित उद्योग लगाते हैं, तो हमारी सरकार बिजली, पानी, कनेक्टिविटी की सुविधा के साथ श्रमिकों के वेतन के लिए 5000 रुपए

प्रति श्रमिक की सब्सिडी भी देगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देश के पहले और सबसे बड़े पीएम मित्र पार्क का भूमि-पूजन मध्यप्रदेश की धरती पर 17 सितम्बर को किया जा चुका है। यह मेगा टेक्सटाइल पार्क निवेश के लिए एक अनूठा और सुनहरा अवसर है। निवेशक इस टेक्सटाइल पार्क में या मध्यप्रदेश के किसी भी अंचल में अपनी औद्योगिक इकाई स्थापित करना चाहें, तो सरकार इसमें सहयोगी और मददगार के रूप में साथ देगी।

असम एक ऐसा राज्य है, जो चाय के पते-पत्ते को सोना बनाकर बेचता है। गुवाहाटी एक बेहद पवित्र नगरी है। नॉर्थ-ईस्ट हमारे लिए भारत को दुनिया से परिचित कराने का गौरवशाली गेट-वे है। मध्यप्रदेश और असम में काफी समानताएं हैं। हम मिलकर कई सेक्टरों में काम कर सकते हैं। हम यहां मध्यप्रदेश में उपलब्ध बहुत सी संभावनाओं की जानकारी लेकर आए हैं।

मध्यप्रदेश का बाघ और असम का गैंडा दोनों ही जंगल में एक साथ रफ्तार भर सकते हैं। दोनों राज्य मिलकर इन वन्य प्राणियों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। मध्यप्रदेश असम को गौर, घड़ियाल और मगरमच्छ दे सकता है। असम हमें गैंडा देकर हमारे वनों को समृद्ध कर सकता है। चीता पुनर्वास प्रोजेक्ट एक ऐसा ही अनुपम उदाहरण है, जिसमें हमने अफ्रीकन चीतों को मध्यप्रदेश की धरती पर बसाया है। इसी तरह हम अन्य विलुप्त प्राय वन्य जीव प्रजातियों को बसाकर उनकी प्रजाति बचा सकते हैं। मध्यप्रदेश का बिजली उत्पादन के मामले में देश में एक अलग ही स्थान है। दिल्ली की मेट्रो ट्रेन मध्यप्रदेश की बिजली से चल रही है। हम ग्रीन एनर्जी प्रोडक्शन की ओर बढ़ रहे हैं। विंड एनर्जी प्रोडक्शन में तो हम आगे हैं ही, हमारे राज्य में जमीन और पानी पर भी सोलर एनर्जी प्रोडक्शन प्लांट लगाए गए हैं।

मध्यप्रदेश में उद्योग-धंधों और निर्माण इकाइयों की स्थापना को बढ़ावा देने के लिए हम औद्योगिक इकाई स्थापना, राँ मटेरियल अवेलेबिलिटी, गुड्स ट्रांसपोर्ट कनेक्टिविटी, एक्सपोर्ट, लॉजिस्टिक्स और कुशल श्रम शक्ति उपलब्ध कराने जैसे सभी सेक्टरों में आगे बढ़कर इन्हें प्रोत्साहन भी दे रहे हैं। देश के समग्र विकास के लिए सभी राज्यों के मध्य एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा आवश्यक है और तभी हमारा देश वर्ष 2047 तक विकसित भारत बन पाएगा। मध्यप्रदेश और असम दोनों इस लक्ष्य की ओर मिलकर आगे बढ़ेंगे।

गुवाहाटी में आयोजित इन्टरैक्टिव सेशन में जाने माने उद्योगपतियों ने म.प्र. की खूबियों को

जाना और निवेश की रूचि दिखाई। उद्योगपतियों से वन-टू-वन चर्चा कर उन्हें मध्यप्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित किया गया। चर्चा के दौरान चेयरमैन जीईआरडी फार्मास्युटिकल्स एवं चेयरमैन, फिक्की असम राज्य परिषद डॉ. घनश्याम धनुका ने मध्यप्रदेश में ISO 9001: 2015 और GMP मानकों के अनुरूप अत्याधुनिक फार्मास्युटिकल एवं हाइजीन उत्पाद निर्माण की स्थापना, लोहिया समूह के चेयरमैन श्री कैलाश चंद्र लोहिया ने प्रदेश में प्लास्टिक्स और पैकेजिंग निर्माण संबंधी इकाइयाँ स्थापित करने, प्रबंध संचालक असम बंगाल नेविगेशन एवं पूर्व अध्यक्ष, फिक्की असम राज्य परिषद श्री आशीष फूकन ने मध्यप्रदेश में नर्मदा, चंबल आदि प्रमुख नदियों पर ईको लॉज तथा बुटीक रिवर क्रूज परियोजनाओं की शुरुआत और टाइगर रिजर्व एवं संरक्षित क्षेत्रों में सस्टेनेबल

हॉस्पिटैलिटी सर्विसेज के पायलट प्रोजेक्ट्स, बीएमजी इंफॉर्मेटिक्स प्रा. लि. के सह-अध्यक्ष श्री जाँयदीप गुप्ता ने मध्यप्रदेश में ईको-रिजॉर्ट और सस्टेनेबल हॉस्पिटैलिटी के साथ ईको-टूरिज्म क्लस्टरों के विकास, होटल पोलो टावर के हेड श्री प्रशांत गुप्ता ने ईको टूरिज्म, वन्य जीव पर्यटन एवं अंतर्देशीय जल पर्यटन, स्टार सीमेंट प्रा. लि. के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर श्री प्रदीप पुरोहित ने मध्यप्रदेश में सीमेंट प्लांट, ग्राइंडिंग यूनिट और लॉजिस्टिक्स हब स्थापित करने, आश्रम फूड्स प्रा. लि. के प्रबंध संचालक श्री अमृत देयोरह ने मध्यप्रदेश में नए खाद्य प्रसंस्करण इकाई की स्थापना, श्री सीमेंट प्रा. लि. के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट श्री भारत शर्मा ने एकीकृत क्लिंकर और सीमेंट निर्माण संयंत्र की स्थापना के प्रस्तावों पर विचार-विमर्श के साथ सहमति प्रदान की। ■

भाजपा सरकार सदैव किसानों के प्रति समर्पित - हेमंत खण्डेलवाल



■ किसानों की मेहनत और अन्न का अपमान किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जा सकता।

■ किसान भाजपा के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता में थे, हैं और रहेंगे।

कर्जमाफी के नाम पर किसानों को छलने वाली कांग्रेस पार्टी ने कभी किसानों के हित में कोई कार्य नहीं किया। कांग्रेस ने हमेशा किसानों को धोखा दिया और अब तो उन्होंने अन्न देवता का भी अपमान करना शुरू कर दिया है। कांग्रेस ने अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए जिस तरह बीच सड़क पर अनाज

फैलाया, वह न केवल किसानों की मेहनत का अपमान है बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं का भी अनादर है। कांग्रेस का यह कृत्य अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय है।

कांग्रेस ने हमेशा किसानों के साथ छल किया है। कर्जमाफी के नाम पर कांग्रेस ने वर्ष 2018 में 15 महीनों की सत्ता में किसानों से वादा तोड़कर लाखों किसानों को डिफॉल्टर बना दिया। भाजपा सरकार ने उन्हें डिफॉल्टर की श्रेणी से बाहर निकालने का काम किया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के संकल्प पर कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान कल्याण निधि जैसी योजनाओं से प्रदेश के लगभग 85 लाख किसानों को प्रति वर्ष 12 हजार रुपये की सहायता दी जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हाल ही में भावांतर योजना लागू कर यह सुनिश्चित किया है कि किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य मिले और किसी प्रकार का नुकसान न हो।

कांग्रेस पार्टी को किसानों से किए गए छलावे और अन्न के अपमान के लिए माफी मांगनी चाहिए। भाजपा के लिए किसान सर्वोच्च प्राथमिकता में थे, हैं और आगे भी रहेंगे। ■



घुसपैठ, जनसांख्यिकीय, एसआईआर देश का मुद्दा है- अमित शाह



घुसपैठ, जनसांख्यिकीय का बदलाव और लोकतंत्र, तीनों विषयों पर बेझिझक कहना चाहता हूँ, कि तीनों विषय, जब तक प्रत्येक भारतीय और विशेषकर युवा, जिसने 50-60-75 साल तक देश में जीना है, वो नहीं समझता है, इसकी समस्या से परिचित नहीं होता है, तो हम हमारे देश, हमारी संस्कृति, हमारी भाषाएं और देश की स्वतंत्रता को सुनिश्चित नहीं कर सकते।

घुसपैठ, जनसांख्यिकीय परिवर्तन और लोकतंत्र, ये एक प्रकार से हमारी भाषा, सभ्यता, संस्कृति और साहित्य सबको प्रभावित करने वाला विषय है। ‘हिंदी है हम’ एक वाक्य जो है हमें हमारी हजारों साल की बहती हुई सांस्कृतिक नदी के साथ जोड़ने वाला वाक्य है और यही वाक्य हमें सच्चे मायने में सच्चा भारतीय भी बनाता है। क्योंकि कोई भी राष्ट्र, अपनी सांस्कृतिक धारा से कटकर चल नहीं सकता, कोई भी राष्ट्र हमारे साहित्य के धारा प्रवाह से कटकर खड़ा नहीं हो सकता और कोई भी राष्ट्र अपनेपन के गौरव को छोड़कर, विश्व में सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता, इन तीनों चीजों को हमने राजनीति से ऊपर उठकर कभी ना कभी स्वीकार करना होगा।

घुसपैठ, जनसांख्यिकीय का बदलाव और

लोकतंत्र, तीनों विषयों पर बेझिझक कहना चाहता हूँ, कि तीनों विषय, जब तक प्रत्येक भारतीय और विशेषकर युवा, जिसने 50-60-75 साल तक देश में जीना है, वो नहीं समझता है, इसकी समस्या से परिचित नहीं होता है, तो हम हमारे देश, हमारी संस्कृति, हमारी भाषाएं और देश की स्वतंत्रता को सुनिश्चित नहीं कर सकते। ये तीनों विषय एक दूसरे के साथ जुड़े हुए विषय हैं, देश में 1951 में, 1971 में, 1991 में और 2011 में जनगणना हुई। जनगणना के रिपोर्ट का एनालिसिस है, क्योंकि हमारे यहां जनगणना में शुरू से, आजादी के बाद तुरंत से धर्म पूछने का एक परंपरा है, जनगणना में बाकी सब पूछते हैं, उसमें आप कौन से धर्म के अनुयायी हो, वह पूछा जाता है, मुझे मालूम नहीं है उस वक्त 1951 में क्यों यह निर्णय हुआ

होगा? मगर निर्णय हमने नहीं करा है, 1951 में मेरी पार्टी बनी ही नहीं थी, उस वक्त जब यह जनगणना का निर्णय हुआ, हम निर्णायक तो नहीं ही थे। मैं आंकड़े बताना चाहता हूँ, 1951 की जनगणना में हिंदू 84 प्रतिशत थे और मुस्लिम समाज की आबादी 9.8 प्रतिशत थी, 1971 में 82 प्रतिशत हुए हिंदू और मुस्लिम समाज की आबादी 11 प्रतिशत हुई, 1991 में 81 प्रतिशत हुए हम और मुस्लिम समाज की आबादी 12.12 प्रतिशत हुई और 2011 में 79 प्रतिशत हुए और मुस्लिमों की संख्या 14.2 प्रतिशत हुई, इसमें ऐसे संशय में मत रहिएगा, कि मैं क्यों दो ही धर्म की आबादी बोल रहा हूँ, क्योंकि मैं घुसपैठ की बात करना चाहता हूँ, इसलिए इसकी बात की और इसके रेफरेंस में बाद में मैं बताऊंगा, हमारा विभाजन भी है। अगर देश का विभाजन ना हुआ होता, तो धर्म के आधार पर जनगणना करने की कभी जरूरत ही नहीं पड़ती। परंतु देश का विभाजन क्योंकि धर्म के आधार पर हुआ है, तो इसीलिए शायद कांग्रेस के नेताओं ने 1951 की जनगणना से धर्म को पूछना मुनासिब समझा होगा, तो एक प्रकार से बहुत सारी गिरावट हुई है। मुस्लिम आबादी की बढ़ोत्तरी 24.6 प्रतिशत के दर से हुई है और हिंदू आबादी 4.5 प्रतिशत कमी हुई है, अब मैं इसलिए बताता हूँ कि ये फर्टिलिटी रेट के कारण नहीं हुआ है यह घुसपैठ के कारण हुआ है, जब भारत का विभाजन हुआ, धर्म के आधार पर हुआ, हमारी दोनों ओर पाकिस्तान बनाया गया, जो बाद में बांग्लादेश में कन्वर्ट हुआ और पाकिस्तान में कन्वर्ट हुआ और उन दोनों जगह से घुसपैठ के कारण आबादी में इतना बड़ा परिवर्तन आया और हमारे पड़ोसी देश, हमारे ही देश का एक हिस्सा जिसमें से पाकिस्तान और बांग्लादेश बना, उसमें स्थिति क्या हुई, वो भी देखना चाहिए। देश आजाद हुआ 1951 में, तब पाकिस्तान में हिंदुओं की संख्या 13 प्रतिशत थी, अन्य माइनॉरिटी 1.2 प्रतिशत थे और अब पाकिस्तान में हिंदुओं की संख्या 1.73 प्रतिशत बची है, बांग्लादेश में हिंदुओं की संख्या 22 प्रतिशत थी, अब वहां पर 7.9 प्रतिशत बची है और अफगानिस्तान में 2,20,000 हिंदू सिख थे, आज 150 बचे हैं, यह मैं इसलिए कह रहा हूँ, मैं हिंदू मुस्लिम के



रेफरेंस से नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि आगे मैं बताऊंगा, कि घुसपैठ और शरणार्थी के बीच में क्या अंतर है, यह सारे जो हिंदू कम हुए, वह मतांतरित नहीं हुए। सारे नहीं हुए, बहुत ने भारत में आकर शरण ले ली और सारे मुस्लिम जो बड़े हैं, वो मैंने कहा फर्टिलिटी के कारण नहीं बढ़े हैं, वहां से ढेर सारे मुस्लिम भाई यहां घुसकर आए। अब हमने विभाजन करा, तब तय था कि दोनों देशों में सभी प्रकार के धर्मों के मनाने की छुट्टी रहेगी, भारत में तो वो रहा, आर्टिकल 19 और 21 ने सबको प्रोटेक्शन दिया। पाकिस्तान और बांग्लादेश घोषित इस्लामिक राष्ट्र बन गए, उनका राज्य का धर्म इस्लाम को बनाया गया और फिर कई बार अनेक प्रकार के अत्याचार हुए, अनेक प्रकार की प्रताड़नाएं हुईं, इसके कारण वहां से हिंदू भागकर भारत की शरण में आए और यह आजादी के वक्त, आजादी के तुरंत बाद भारत के सभी नेताओं ने वादा किया था, कि अभी यहां आपदापी में बहुत बड़े दंगे हो रहे हैं, आप अभी मत आइए, जब भी आप आना चाहोगे, आपको हम स्वीकार करेंगे, ये वादा था और एक प्रकार से नेहरू-लियाकत पैक्ट का हिस्सा था, जिस पर देश के प्रधानमंत्री ने सिग्नेचर किया था। मगर वे जब आए, तो उनको शरणार्थी मानकर इस देश में स्वीकार कर लिया गया, परंतु इनको नागरिकता नहीं दी। आप मुझे बताइए, कोई 1965 में आया, कोई 1971 में आया, कोई 1981 में आया, कोई 1991 में आया, कोई 2001 में आया, चार-चार पीढ़ी हो गई, उसको नागरिकता नहीं मिली, क्यों नहीं मिली? कि आप वहां थे, क्यों वहां थे? भारत ने विभाजन को स्वीकार किया, इसलिए वे वहां थे, और हमने वादा किया था, कि 1951 में वादा किया था, आप जब भी आओगे हम आपको स्वीकार करेंगे। तो एक शरणार्थियों की वैधानिक नागरिकता के बगैर बड़ी फौज खड़ी हुई है और इसके लिए जब भारतीय जनता पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला, नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने, सीएए का कानून लेकर हम आए और उनको नागरिकता देने का काम किया। उस वक्त बहुत प्रचारित किया गया, कि सीएए से मुसलमानों की नागरिकता चली जाएगी। मैं बोल-बोल कर थक गया और मीडिया ने भी मेरे साथ अन्याय किया है, इस बात को कभी प्रमुखता से नहीं दोहराया, कि सीएए किसी की नागरिकता ले नहीं सकता, छीन नहीं सकता, सीएए नागरिकता देने का कार्यक्रम है, नागरिकता प्रदान करने का कार्यक्रम है। उस एक्ट के किसी भी प्रावधान में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई किसी की नागरिकता छीनने का रास्ता ही नहीं, जो शरणार्थी है,

उसको नागरिकता देने का प्रावधान है, जो ऐतिहासिक गलती 1951 से लेकर 2014 तक हुई थी, उसको नरेंद्र मोदी सरकार ने सबसे पहले, जो यहां अवैध रूप से कानूनी दृष्टि से, अवैध रूप से हिंदू शरणार्थी रहते थे, उनको लॉन टर्म वीजा देने का काम किया, उनको एक सर्टिफिकेट दिया और बाद में उनको नागरिकता देने का कानून लेकर आए, इससे 1951 से लेकर 2014 तक 2019 तक जो गलतियां भारतीयों से हुई थी, उसका एक प्रकार से तर्पण करने का काम नरेंद्र मोदी जी ने किया। क्योंकि हमारा वादा था, जवाहरलाल नेहरू जी का वादा था, कि अब आप जब आप आओगे, तब आपको हम स्वीकार कर लेंगे और हम मुकर गए, पीढ़ियों तक वो अपने नाम से मकान नहीं खरीद सकते थे, सरकारी नौकरी नहीं मिलती थी, सरकारी राशन नहीं मिलता था, सरकारी अस्पताल में उनका इलाज नहीं होता था, ये ढाई-तीन करोड़ लोगों का गुनाह क्या है? उनको पूछकर तो विभाजन किया नहीं गया था, धर्म के आधार पर जो विभाजन का फैसला था वह कांग्रेस वर्किंग कमेटी का था, देश की संसद का नहीं था और इसके कारण ये लोग चार-चार पीढ़ी तक प्रताड़ित होते रहे, क्या उनको अधिकार नहीं है? गरीबों को मिलने वाले सस्ते राशन पर, 5 लाख तक के इलाज पर, भारत में वोट देने पर, संपत्ति खरीदने पर और जब यह कानून लेकर आए, इसको बिल्कुल, मैं कह सकता हूँ, कि अन्याय पूर्ण तरीके से इसको बदनाम करने का काम भी हुआ और दंगे भी हुए। मगर आज कोई व्यक्ति दृढ़ता से काम करता है, तो कैसे काम होता है? आज इतना सारा विरोध होने के बावजूद सीएए अस्तित्व में है और सब शरणार्थियों को इस देश में नागरिकता का अधिकार है। 1951 से जो वंचित किया, उसको देने का काम किया है, अब वह कहते हैं कि घुसपैठिया और शरणार्थी के बीच में अंतर क्या है? वह भी मैं आज समझाना चाहता हूँ, जो अपने धर्म को बचाने के लिए जो उसका अधिकार है, हमारे संविधान के हिसाब से तो उसका अधिकार है, आर्टिकल 19 और 21 में हमने अधिकार दिया है, वो अपने धर्म को बचाने के लिए भारत की शरण में आता है, तो हम उसको शरणार्थी कहते हैं। अब धर्म बचाने के लिए सिर्फ हिंदू नहीं आए, हिंदू भी आए, बौद्ध भी आए, सिख भी आए, क्रिश्चियन भी आए, तो हमने सबको नागरिकता देने का सीएए में प्रावधान किया है। अब एक डिमांड आती है, तो बाकी घुसपैठिए कौन है? अब जिसके लिए, जिस पर धार्मिक प्रताड़ना नहीं हुई है और आर्थिक कारणों से या अन्य कारणों से देश में

अवैध रूप से आना चाहते हैं, वो घुसपैठिया है और फिर दुनिया में जिसको भी यहां आना है उसको आने दें, तो ये देश एक प्रकार से धर्मशाला बनकर रह जाएगा, हमारा देश चल नहीं पाएगा। हर एक को यहां आने की स्वतंत्रता नहीं है, विभाजन के परिपेक्ष में जिनके साथ वहां न्याय हुआ है, वह यहां आए, स्वागत है, मैं इस देश के गृह मंत्री नाते कहता हूँ, जितना मेरा अधिकार इस देश की मिट्टी पर है, इतना ही पाकिस्तान, बांग्लादेश के हिंदुओं का अधिकार इस देश की मिट्टी पर है और, अगर कोई आर्थिक रूप से कमाने के लिए या अन्य कोई कारणों से, मैं बोलना नहीं चाहता था बहुत सारे कारण हैं, वरना विवाद बहुत गहरा होगा, लोग अन्य कारण से यहां आते हैं, तो उसको भारत कैसे स्वीकार कर ले, तो मैं भी पजल में था, ढंग से प्रेशर में जवाब भी नहीं दे पाया था, तो एक 18 साल का बच्चा हरियाणा का मेरे घर पर समय लेकर आया और बाहर आकर खड़ा ही रह गया, मैंने उसको टाइम दिया, मैंने बोला यार काहे परेशान करते हो, कि भाई साहब आप क्यों जवाब नहीं दे पाते हो? मैं सवाल ठीक नहीं है इसलिए। जवाब देना, तो बच्चे का है मेरे साथ मत जोड़ना, उसने कहा साहब आप सबको कहो कि हम हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई सबको देश में प्रवेश कर देंगे, तो उसने मैंने कहा यार ऐसे कैसे हो सकता है? उसने कहा कि वो भूमि लेकर आए, जो भूमि ले गए, वह भूमि के साथ सारे के सारे यहां आ जाए, हमें कोई आपत्ति नहीं, बड़ा सरल रास्ता उसने सुझाया, मैंने बेचारे को चाय नाश्ता कराके भेजा, मैंने कहा देश ऐसे नहीं चलता है भाई, कि वो अकेले ना आए, बस जो भूमि हमारी चली गई, वो भूमि के साथ सारे आ जाए, हम स्वागत कर देते हैं इनका, बड़ा सरल तरीका बताया, मगर मैं भी जानता हूँ यह संभव नहीं जब होगा तब होगा। परंतु अभी शरणार्थी और घुसपैठिया, दोनों को एक पेज पर रखकर नहीं सोचना चाहिए। जो हमारे संविधान को जानते हैं, जो हमारे इतिहास को जानते हैं, हमारे देश के राजनीतिक इतिहास को जानते हैं, उनको कम से कम यह गलती नहीं करनी चाहिए। हमारा संविधान बहुत स्पष्ट है, इस देश में हर एक व्यक्ति को अपने धर्म के अनुसार अपने ईश्वर की उपासना करने का अधिकार है, इसमें किसी को दखल नहीं देना चाहिए। इस देश में रहना, जिन्होंने पसंद किया वो सभी मुसलमानों को कोई डिस्टर्ब नहीं किया, इनकी नागरिकता पर कोई सवाल नहीं उठा। अगर आप घुसपैठ कर आते हो, अलग-अलग उद्देश्यों से आते हो, तो आपको जरूर घुसपैठिये का लेवल लगेगा और वो लगाना चाहिए शासन



में। फिर कुछ लोग दलील करते हैं, कि अगर वह भारत में ही रहना चाहते हैं, तो हम क्यों सीमित करते हैं, सीमित नहीं करते, इसके लिए भी कानून है। पाकिस्तान से किसी भी धर्म का व्यक्ति एप्लीकेशन करें और एप्लीकेशन करके वैध तरीके से पासपोर्ट लेकर, वीजा लेकर आए, हम उनके क्रेडेंशियल देखकर, उनको नागरिकता देंगे, ये रास्ता खुला ही है। मगर आप अवैध तरीके से घुसपैठ करोगे, तो सीमाएं पोरस नहीं हो सकती, सीमाओं से घुसपैठ नहीं होनी चाहिए और उनको संभालना भी चाहिए और कुछ जगह कैसा हुआ? 2011 में असम में जनगणना हुई, क्योंकि 2011 की जनगणना एक प्रकार से हमारे शासन में नहीं हुई थी, तो सारे लिबरलर्स, जितने भी उदात्त विचार के प्रतिनिधि है वह और कांग्रेस हम पर आरोप नहीं कर सकते, क्योंकि वह कांग्रेस के टाइम है, 2011 की जनगणना में असम के अंदर दशकीय वृद्धि दर मुस्लिम भाइयों का 29.6 प्रतिशत हुआ, जो संभव ही नहीं है, अगर घुसपैठ नहीं हुई है, तो यह संभव ही नहीं है और पश्चिम बंगाल के कई सारे जिलों में यह वृद्धि दर 40 प्रतिशत क्रॉस कर गया, जो कह रहे हैं कि घुसपैठ काल्पनिक चीज है, उनको मैं कहना चाहता हूँ, आप कैसे जस्टिफाई करते हो और ये वृद्धि दर बॉर्डर के जिलों में 70-70 प्रतिशत है, मैं तो राज्य की एवरेज बता रहा हूँ। यही साबित करती है कि घुसपैठ बनती है, होती है। पार्लियामेंट में विशेषकर तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस की सांसद मुझ पर आरोप करते हैं, कि चलो पहले जो हुआ वो हुआ, अभी हो रही है या नहीं हो रही? मैंने कहा अभी भी हो रही है। तो उन्होंने कहा तो जिम्मेदारी किसकी है? बीएसएफ किसकी है? आपकी जिम्मेदारी है, मेरी जिम्मेदारी है भाई। मगर एक बार देश की सीमा देखकर आओ, सिर्फ बांग्लादेश के सीमा पर कई सारे झरने, महासागर जैसी नदियां, कई सारा जंगल का एरिया, कई सारी पहाड़ी चोटियां हैं, जहां बॉर्डर नहीं बनी है और वहां से घुसपैठ कोई नहीं रोक सकता है, वहां से घुसपैठ होती है। पकड़ते भी हैं, रोकते भी हैं, गोलियां भी चलती हैं, परंतु जिस प्रकार की टोपोग्राफी है, जिस प्रकार की भौगोलिक सीमा है, इसमें यह थोड़ा कठिन है। मगर मैंने बोला, मैं अब आपको पूछना चाहता हूँ घुसपैठ कर वो कहा जाता है? तो स्वाभाविक है, पहले जिले में जाता है, तो गांव में कोई भी आदमी आएगा, पटवारी को मालूम पड़ेगा या नहीं पड़ेगा? एक भी पश्चिम बंगाल के पटवारी ने थाने में फरियाद लिखाई हो, तो मुझे बताओ आप, एक भी पुलिस स्टेशन में फरियाद हुई है तो बताओ, आधार कौन



बनाता है, वो जिले की कलेक्टर ऑफिस बनाती है और आधार के आधार पर सारी चीजें होती हैं, तो घुसपैठ इस तरह की विकट सीमाओं में अकेला केंद्र नहीं रोक सकता। केंद्र की जिम्मेदारी है, केंद्र ने बड़ी बाड़ भी लगाई है। मगर ऐसा भौगोलिक क्षेत्र जहां बाड़ लगाना ही असंभव है, बाड़ को पानी बहा कर ले जाएगा, इतने कठोर पत्थर है जहां ड्रिलिंग भी नहीं हो सकती, तो वहां से जो घुसपैठ होती है उसको प्रश्रय कौन देता है, वहां की राज्य सरकारें देती हैं, प्रश्रय क्यों देते हैं, आश्रय क्यों देते हैं, क्योंकि कुछ पार्टियों ने उसमें वोट बैंक देखना शुरू कर दिया है, इसलिए वहां आश्रय मिलता है। मैं, सभी राजनीतिक दलों को कहना चाहता हूँ, घुसपैठ का मुद्दा, जनसांख्यिकीय का मुद्दा, एसआईआर का मुद्दा, इसको राजनीति से मत जोड़िए। एक समय आएगा, आप भी नहीं बचोगे। यह राजनीतिक मुद्दा नहीं है, देश का मुद्दा है। कोई व्यक्ति अवैध रूप से घुसकर देश में आता है और आपके जिले का तंत्र उसको आइडेंटिफाई नहीं करता है, तो कैसे रोक सकता है कोई इसको? हमारे यहां भी सीमा है, गुजरात में भी सीमा है, राजस्थान में भी सीमा है, क्यों घुसपैठ नहीं होती है भाई? वहाँ पर भी बॉर्डर है, वहाँ पर भी बाड़ लगाई है, वहाँ पर भी बीएसएफ ही है, ये अंतर है। घुसपैठ को राजनीतिक दृष्टि से नहीं देखना चाहिए, राजनीतिक संरक्षण भी नहीं देना चाहिए और शरणार्थी और घुसपैठिया, ये दोनों के बीच में जो अंतर नहीं समझेगा, वो अपने आप के साथ, अपनी आत्मा के साथ छलावा कर रहा है। मैं, कुछ चीजें पूछना चाहता हूँ, युगांडा में 70 के दशक में ईदी अमीन का शासन आया था, वहां से ढेर सारे भारतीय भागकर यहां आए, क्यों कांग्रेस की सरकार ने उस वक्त उनको शरण दी थी? वो कहा जाएगा? यही आएगा, इसकी नेचुरल जगह है, इसलिए वो शरणार्थी है। वहां राजनीतिक हालात बदले, प्रताड़ना हुई, हमने शरण दी थी। यहां वह



धर्म को बचाने के लिए, अपने परिवार की महिलाओं की एक प्रकार से सम्मान बचाने के लिए यहां आता है, उसको राजनीतिक शरण देना हमारा दायित्व है, ये 1951 से भारतीय संघ का उनके साथ किया गया वादा है, तो घुसपैठिया और शरणार्थी के बीच में उसको अलग दृष्टिकोण से सुनना चाहिए, देखना चाहिए और इसका इवैल्यूएशन भी अलग दृष्टिकोण से होना चाहिए और ये सुरक्षा के भी प्रॉब्लम हुए, मजदूरी के भी प्रॉब्लम हुए, गरीबी का भी प्रॉब्लम हुआ है, ढेर सारी ड्रग कार्टेल, हथियारों की तस्करी, जाली नोटों की तस्करी में घुसपैठिये पकड़े जाते हैं। अब यह सारी चीजें राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी हुई चीजें हैं सामाजिक विवाद भी खड़ा करने का काम हो रहा है। झारखंड में ट्राइबलों की संख्या में बहुत ज्यादा गिरावट आ गई, बहुत बड़ी गिरावट आई, इसका कारण क्या? बांग्लादेश से हुई घुसपैठ है। अभी-अभी हमारा चुनाव आयोग एसआईआर कर रहा है, यह कांग्रेस पार्टी डिनायल मोड में आ गई है, उनका सच और झूठ का दायरा बड़ा सीमित हो गया है, जो नरेंद्र मोदी सरकार कहती है वो झूठ है और वो काल्पनिक झूठ का हम विरोध कर रहे हैं, इसलिए हम सच हैं, उनका सच और झूठ का दायरा सीमित हो गया है। एसआईआर पहली बार नहीं हो रहा है 1951 से एसआईआर हो रहे हैं और एसआईआर एक प्रकार से चुनाव आयोग का दायित्व है, हमारी राजनीतिक प्रक्रिया को शुद्ध रखने की जिम्मेदारी चुनाव आयोग की है और ये जब तक हम मानेंगे नहीं, चुनाव आयोग कभी काम नहीं कर पाएगा। हमारे संविधान के अंदर फ्री एंड फेयर चुनाव करने की जिम्मेदारी चुनाव आयोग को दी है और फ्री एंड फेयर चुनाव तभी हो सकता है जब हम मतदाता सूची मतदाता की व्याख्या के अनुरूप करें। हमारे लोक प्रतिनिधित्व कानून के अंदर मतदाता की व्याख्या की गई है, सबसे पहली इसकी मतदाता बनने की योग्यता वो भारत का



नागरिक है, ऐसा लिखा है। आप लोपित करना चाहते हो, तो एक प्रस्ताव लेकर आइए पार्लियामेंट में, कि इस देश में कोई भी वोट डाल सकता है और दूसरी योग्यता 18 साल का आयु है। अब आप 18 साल का आयु पूछोगे है या नहीं है, तो एसआईआर में पूछना पड़ेगा और आप भारत के नागरिक हो या नहीं हो, वो एसआईआर में पूछना पड़ेगा, वो भी समझते हैं कि यह पूछना पड़ेगा। परंतु वह इसलिए विरोध कर रहे हैं इसके कारण जो वोट कटते हैं, वह वोट उनकी वोट बैंक जो मानकर बैठे हैं उनके कटते हैं। ये चुनाव आयोग का दायित्व है। मतदाता सूची का शुद्धिकरण अगर चुनाव आयोग नहीं करेगा, तो पॉलिटिकल पार्टी करेगी क्या? और फिर भी चुनाव आयोग के प्रक्रिया से कोई भी आपत्ति हो तो कोर्ट में जा सकते हो, इसके खिलाफ जुलूस निकाल सकते हो क्या? इसके खिलाफ जुलूस नहीं निकाल सकते, संवैधानिक मर्यादाओं का हर दृष्टि से उल्लंघन है सुप्रीम कोर्ट में गए, सुप्रीम कोर्ट में मॉनिटरिंग में चल रहा है एसआईआर। फिर भी आप स्वीकार नहीं करोगे और कई क्षेत्रों के अंदर 30 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, 15 प्रतिशत, 11 प्रतिशत घुसपैठिये पकड़े गए हैं, ये चुनाव आयोग का मतदाता शुद्धिकरण का जो कार्यक्रम है मतदाता सूची शुद्धिकरण का एसआईआर, मैं सभी को कहना चाहता हूँ कि मतदाता की उम्र 18 साल है या नहीं है, वो उनको पूछना ही पूछना है और मतदाता देश का नागरिक है या नहीं है वह पूछने का अधिकार नहीं, दायित्व हमारे संविधान ने चुनाव आयोग को दिया है और यह प्रक्रिया में किसी ने हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

घुसपैठ की जो व्याख्या हो रही है उसमें यह भी बताना चाहता हूँ। दुनिया में 90 प्रतिशत जियोपॉलिटिकल देश भू राजनीतिक देश है। उनकी देशों की रचना कोई युद्ध के कारण या कोई नोटिफिकेशन से या कौन युद्ध जीता, इसके आधार पर हुई। भारत एक मात्र देश

ऐसा है, बहुत कम देशों में से सबसे बड़ा देश हमारा एक मात्र ऐसा है, हमारे देश की रचना जियोपॉलिटिकल नेचर से स्वभाव से नहीं हुई है, हम जियो कल्चर देश हैं, भू-सांस्कृतिक देश है और ये भू-सांस्कृतिक देश को अगर इसकी आत्मा को समझना है, तो हमने ये राज्य की सीमाओं के दायरे से ऊपर उठना पड़ेगा, इनको शरण क्यों दी? उनको शरण क्यों दी? जो इस देश का वादा था 1951 में, हम उसका वादा पूरा करने का काम कर रहे हैं। विभाजन जब हुआ मैं अभी भी मानता हूँ मन से मानता हूँ, मेरे कई साथी मेरा विरोध कर रहे हैं, मगर फिर भी मानता हूँ कि इस देश का विभाजन धर्म के आधार पर करना बहुत बड़ी गलती थी। आपने भारत माता की दो भुजाओं को काटकर अंग्रेजों के षड्यंत्र को सफल करा है, ये कभी नहीं होना चाहिए था। हमारे यहां तो अनेक प्रकार के धर्म सदियों से चल रहे हैं, जैन धर्म कई हजारों साल से चल रहा है, बौद्ध धर्म कई हजारों साल से चल रहा है, दशम पिता ने सिख धर्म की स्थापना की, कई सदियों से हम दशम पिता का भी सम्मान करते हैं। इस देश में कभी धर्म के आधार पर विवाद नहीं हुआ, धर्म के आधार पर देश का राष्ट्रीयता का निर्णय कैसे हो सकता है? धर्म और राष्ट्रीयता दोनों को अलग करना चाहिए था। मगर धर्म और राष्ट्रीयता को अलग नहीं किया, इसके कारण ये सारे विवाद खड़े हुए हैं। अगर नेहरू-लियाकत समझौते का 1951 में ही पालन हो गया होता, तो आज शरणार्थी और घुसपैठियों का यह जो विवाद है वह विवाद नहीं होता है। जब घुसपैठिए मतदाता सूची में होते हैं, तो वह हमारे देश की राजनीतिक निर्णय प्रक्रिया के हिस्सेदार होते हैं। मैं देश के सभी नागरिकों को पूछना चाहता हूँ देश का प्रधानमंत्री कौन है, वह तय करने का अधिकार देश के नागरिक के अलावे किसी को मिलना चाहिए क्या, राज्य का मुख्यमंत्री कौन होगा इसका अधिकार? देश के नागरिकों के अलावे किसी को मिलना चाहिए क्या, तो

किसकी वकालत कर रहे हैं? देश की जनता ने उनको पूछना चाहिए। जब आप घुसपैठिए को बचाने का काम कर रहे हो, हमारे लोकतंत्र को, हमारे पवित्र संविधान की स्पिरिट को दूषित कर रहे हो। क्योंकि चुनाव ही तो जो है जो लोकतंत्र में देश कौन चलाएगा, उसका फैसला करता है और चुनाव की प्रक्रिया में जो देश का नागरिक नहीं है, उसको मताधिकार देते हो, तब मत देने का कारण राष्ट्र का हित नहीं बनता है, मुझे कौन इस देश में रहने देगा वो कारण से वोट की जाती है और जब मत देने का कारण राष्ट्र का हित नहीं रहता है, लोकतंत्र कभी सफल नहीं हो सकता है। इसीलिए भारतीय जनता पार्टी ने डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट, ये तीन सूत्रों को 50 के दशक से स्वीकार कर चले हैं। घुसपैठियों को हम डिटेक्ट भी करेंगे, हम पूरा प्रयास करेंगे कि मतदाता सूची से वह डिलीट हो जाए और बाद में उनके देश में उनको वापस भेजने का भी हम काम करेंगे, किसी को संशय रखने की जरूरत नहीं है और मैं मानता हूँ, देश की जनता ने तीन डी के मुद्दे पर भारतीय जनता पार्टी का समर्थन करना चाहिए। क्योंकि ये तीन डी देश की आत्मा को बचाने के लिए है, देश की संस्कृति को बचाने के लिए है, देश के लोकतंत्र को बचाने के लिए है। इस देश में भी कई करोड़ मुसलमान रहते हैं, कई करोड़ क्रिश्चियन भाई, बौद्ध भाई, सिख भाई रहते हैं, किसी पर किसी ने कुछ आरोप नहीं लगाया, वो भी वोट देते हैं चुनाव प्रक्रिया में, उनका स्वागत है, जो मत है उसका स्वागत है। इस देश में बहुमत में हिंदू समाज रहता है, उसने सालों तक हमें सत्ता पर नहीं आने दिया। ठीक है सत्ता पर से निकाला भी है। कई राज्यों में भी हम चुनाव हारे हैं, अटल जी के छः साल की सरकार के बाद भी हम चुनाव हारे थे, परिणाम जो आए वो आए, परंतु मत देने का अधिकार उसी को होना चाहिए, जो इस देश का नागरिक है, इस देश की संस्कृति, इस देश की भाषा और इस देश के लोकतंत्र के साथ जुड़े हुए निष्ठा रखे। यह मूल दायित्व हमारे संविधान ने दिया है, अनुच्छेद 326 में वयस्क मतदाता को ही अधिकार दिया है, 18 साल का और जो हमारा 1950 और 1951 में अमेंडमेंट के साथ जनप्रतिनिधि पीपल्स रिप्रेजेंटेशन एक्ट बना, उसमें मतदाता पंजीकरण, चुनाव प्रक्रिया और उम्मीदवारों की पात्रता और मतदाता की पात्रता, यह इसका सटीक जांच करने का अधिकार हमारे चुनाव आयोग को दिया है और एसआईआर पहली बार नहीं हो रही। मैं समझ सकता हूँ राहुल गांधी जी को तो मालूम ना हो, मगर अभी भी कुछ वरिष्ठ कांग्रेसी नेता बचे हैं, उनको तो कहना चाहिए, कि आपके नाना ने भी कराया था, आपकी दादी ने भी कराया था,

आपके पिता ने भी कराया था, काहे को विरोध कर रहे हो? वह बोलते ही नहीं है हमने कराया था। मगर मैं निश्चित रूप से मानता हूँ, कि ये मतदाता सूची को शुद्ध करने का काम, ये पवित्र काम है हमारे लोकतंत्र को शुद्धि देगा।

फिर से मैं कहना चाहता हूँ घुसपैठिए की इतनी बड़ी संख्या किसी देश को सुरक्षित नहीं रखती, सीमावर्ती क्षेत्र की राजनीति तथा कानून और व्यवस्था दोनों को वह प्रभावित कर रही है, शहरी क्षेत्रों में भी भारत के गरीब मजदूरों के अधिकार को वह छीनते हैं, जनजातीय क्षेत्रों में सांस्कृतिक आक्रमण के साथ-साथ जमीन पर कब्जा करने का भी अभियान चला है और यह किसी भी प्रकार से देश के हित में नहीं है। इसीलिए इस 15 अगस्त को नरेंद्र मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से हाई पावर डेमोग्राफिक चेंज मिशन बनाने की घोषणा की है, वो मिशन अनेक प्रकार के काम करेंगे। अवैध प्रवासन मतलब घुसपैठियों की जनसंख्यिक परिवर्तनों का वैज्ञानिक मूल्यांकन भी वो डेमोग्राफिक मिशन करेगा, धार्मिक और सामाजिक समाज जीवन पर जो असर पड़ रहे हैं इसका भी अभ्यास करेगा, जनसंख्यिकी के बदलाव के संभावित कारणों का भी अभ्यास करेगा, असामान्य वसावट की पैटर्न और दीर्घकालीन प्रभाव जो सोसाइटी पर पड़ रहे हैं इसका भी अभ्यास करेगा और सीमा प्रबंधन पर जो बोझ आता है इसका भी ये अध्ययन करके, भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट देंगे। मुझे मालूम है यह रिपोर्ट आते ही फिर से एक बार बड़ा विवाद होने वाला है, मगर, विवादों तथा देश की सुरक्षा और हमारे देश की संस्कृति को बचाना तथा हमारे लोकतंत्र को बचाना, इन दोनों में से अगर किसी का चयन करना है, तो भारतीय जनता पार्टी लोकतंत्र बचाने को, संस्कृति बचाने को चयनित करती है और दृढ़ता के साथ जो विवाद खड़े होते हैं, इसका हम जवाब देश की जनता के सामने देंगे और मेरी देश की जनता से भी करबद्ध निवेदन है कि गलत प्रचार में आए बगैर, तथ्यों की गहराई में जाइए, तथ्यों में गोता लगाकर सत्य को ढूंढिए। जब तक हम, हमारे देश के लिए, देश के नागरिकों के अधिकारों के लिए जागरूक नहीं होते हैं, विश्व में हमें कोई नहीं बचा सकता, देश के नागरिकों के अधिकार बचाने की जिम्मेदारी देश के नागरिकों की ही होती है। पड़ोस के देश से जो धार्मिक प्रताड़ना के कारण आते हैं वो घुसपैठिए नहीं हैं, वो शरणार्थी हैं, शरणार्थियों का भारत में स्वागत है। उनकी नागरिकता भी मिलेगी, अब कानून बन चुका है और घुसपैठियों के लिए डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट, ये तीन ही रास्ते बचे हैं। ■

देश की बागडोर मोदी जी के सुरक्षित हाथों में है - हेमंत खण्डेलवाल



- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश को मजबूत बनाने का कार्य कर रहे हैं।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल को कांग्रेस ने दबाकर रखा और आगे नहीं बढ़ने दिया।
- कांग्रेस के जमाने में 30 से 32 प्रतिशत टैक्स लगता था।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जीएसटी रिफॉर्म का ऐतिहासिक कार्य किया जिसका पूरे देश को लाभ मिल रहा है। कांग्रेस के जमाने में सात-आठ टैक्स लगते थे और 30 से 32 प्रतिशत तक टैक्स लगता था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने पहले टैक्स को एक किया गया फिर जीएसटी रिफॉर्म किया। प्रधानमंत्री जी देश को मजबूत और कार्यप्रणाली को ठीक करने का कार्य कर रहे हैं, इसलिए यह बात जनमानस तक पहुंचाना हमारा कर्तव्य है। हमारी पार्टी के कार्यकर्ता जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी हो या फिर सेवा पखवाड़ा सहित अन्य कार्य कार्यकर्ता पूरी लगन के साथ करते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सोच रोजगार बढ़ाने और स्वदेशी अपनाकर आत्मनिर्भर भारत बनाने की है। महात्मा गांधी के स्वदेशी के मूलमंत्र को लेकर आगे बढ़ाकर कार्य किया जा रहा है। हमारा इंपोर्ट घटे और एक्सपोर्ट बढ़े। इसी अवधारणा के साथ हमारी सरकार कार्य कर रही है। सरदार वल्लभ भाई पटेल का व्यक्तित्व सरल और प्रभावशाली

था। सरदार पटेल अगर प्रधानमंत्री होते तो देश की दशा अलग होती, चीन-अमेरिका पीछे होते और हमारा देश आगे होता। कोई कल्पना नहीं कर सकता कि उन्होंने 562 रियासतों को एक करने का काम किया। भोपाल-हैदराबाद को भी एक किया, जिनकी भारतीय विचारधारा में कोई रुचि नहीं थी, उन्हें भी एक करने का काम किया। ऐसे व्यक्तित्व को कांग्रेस ने 50 साल तक दबाकर रखा। नेहरू परिवार ने आगे बढ़ने नहीं दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सरदार वल्लभ भाई पटेल को आगे लाकर चेताने का काम किया कि अगर गांधी जी के साथ इस देश की नींव किसी ने रखी तो उसका नाम सरदार वल्लभ भाई पटेल था, नेहरू-गांधी परिवार ने नहीं रखी। सरदार वल्लभ भाई पटेल की सोच यात्राओं, कार्यशालाओं के माध्यम से घर-घर तक पहुंचना चाहिए।

आतंकवादी संगठन देश को अस्थिर करने का कई प्रयास करते हैं, लेकिन दुनिया की कोई भी ताकत हमें अस्थिर नहीं कर सकती। पहले हमारे नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल थे और अब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों में हमारे देश की सुरक्षित बागडोर है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 'मन की बात' कार्यक्रम सितंबर माह में 80 प्रतिशत बूथों पर सुना गया। देश भर के बड़े राज्यों में हम प्रथम स्थान पर रहे इसके लिए हर कार्यकर्ता बधाई का पात्र है। पिछले तीन महीनों से 'मन की बात' कार्यक्रम को बूथों पर सुनने का ग्राफ लगातार बढ़ता जा रहा है।

कार्यकर्ताओं को इसे बरकरार रख सौ प्रतिशत तक पहुंचाना है, ताकि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से बात हर घर तक पहुंच सके। हमें राष्ट्र और पार्टी को आगे रखकर आगे बढ़ना चाहिए और केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाना चाहिए। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव लगातार जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से लोगों को लाभ पहुंचाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। किसानों के हित में भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को लाभ देने का काम किया जा रहा है। किसानों तक यह बात पहुंचाना भी हमारा कर्तव्य है। ■



आत्मनिर्भर भारत-आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश हेतु प्रतिबद्ध - मुख्यमंत्री डॉ. यादव



ऐतिहासिक रूप से भारत में व्यापार व्यवसाय समृद्ध रहा है। अनुशासित जीवन पद्धति जियो और जीने दो के विचार का अनुसरण करने के परिणाम स्वरूप भारतीय समाज सदैव पुष्पित पल्लवति होता रहा है। समाज में विद्यमान धर्मादा की परम्परा से शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी जनकल्याण गतिविधियों का संचालन होता था।

■ प्रदेशवासी स्वदेशी अपनावें।

- आत्मनिर्भर भारत की लक्ष्य प्राप्ति के लिए स्वदेशी अपनाने की शपथ दिलाई गई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत मिशन के माध्यम से विश्व में एक महत्वपूर्ण विनिर्माण केंद्र के रूप में उभर रहा है। अपने दैनिक जीवन में स्वदेशी उत्पाद अपनाकर और भारतीय उद्यमियों और कारीगरों का समर्थन कर हम एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

ऐतिहासिक रूप से भारत में व्यापार व्यवसाय समृद्ध रहा है। अनुशासित जीवन पद्धति जियो और जीने दो के विचार का अनुसरण करने के

परिणाम स्वरूप भारतीय समाज सदैव पुष्पित पल्लवति होता रहा है। समाज में विद्यमान धर्मादा की परम्परा से शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी जनकल्याण गतिविधियों का संचालन होता था। पिछली सरकारों की लाइसेंस, कोटा, परमिट जैसी नीतियों से देश की मुद्रा का अवमूल्यन हुआ और समाज द्वारा संचालित व्यवस्थाओं में भी शासकीय हस्तक्षेप के दुष्परिणाम सामने आने लगे।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने अतीत को गौरव के साथ देखने की दृष्टि दी और संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देकर भारतीय बौद्धिक सामर्थ्य को विश्व में स्थापित किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और पहल से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की साख और आर्थिक सामर्थ्य स्थापित हुई है। प्रधानमंत्री श्री मोदी किसानों के हितैषी होने के

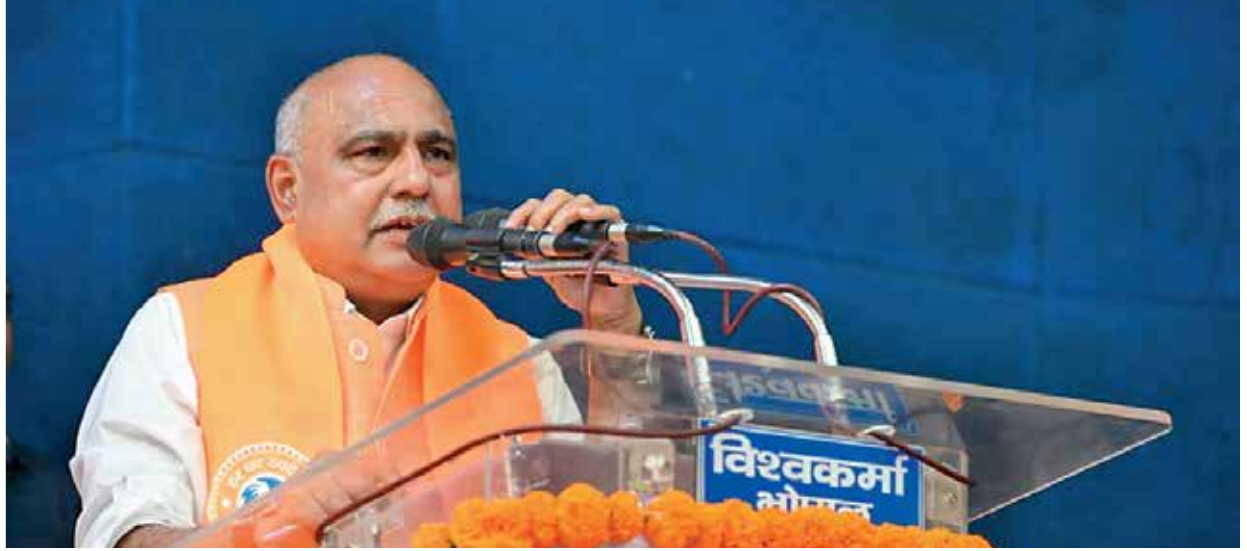
साथ ही मजदूरों, व्यापारियों सहित सभी वर्गों के हित चिंतक हैं। उनके मार्गदर्शन में व्यापार-व्यवसाय और कर व्यवस्था में लागू सरल और पारदर्शी नीतियों ने आम आदमी के जीवन को सुगम बनाया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत-आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। प्रदेश में उद्योग तथा निवेश गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए जारी गतिविधियों से स्वदेशी को बल मिलेगा।

नागरिकों को अपने दैनिक जीवन में अधिकतम भारतीय उत्पादों का उपयोग करने, आयातित वस्तुओं की जगह देसी विकल्प अपनाने, घर, काम और समाज में भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता देने और गांव, किसान तथा कारीगरों का समर्थन कर स्थानीय उद्योग को बढ़ावा देने के लिए शपथ दिलाई गई। युवाओं और बच्चों को स्वदेशी अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए नई पीढ़ी को पारिवारिक और सामाजिक जीवन में भारतीय भाषाओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया। पर्यावरण के प्रति सजग रहकर स्वदेशी और प्रकृति-अनुकूल उत्पादों का प्रयोग करने तथा देश के पर्यटन स्थलों को प्राथमिकता देने का संकल्प भी दिलाया गया। ■



मध्यप्रदेश आत्मनिर्भर भारत बनाने में बड़ा योगदान देगा - हेमंत खण्डेलवाल



महात्मा गांधी ने आजादी से पहले स्वदेशी का जो सपना देखा था, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी उसे पूरा करने के लिए स्वदेशी अपनाने का अभियान चला रहे हैं। प्रधानमंत्री जी वर्ष 2014 से ही भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं।

- आजादी के बाद की सरकारों की नीतियां ठीक नहीं होने से स्वदेशी का नारा पीछे छूटा।
- आत्मनिर्भर भारत बनाने जनता वही सामान खरीदे, जिसे बनाने में भारतीयों का पसीना बहा हो।
- स्वदेशी सामान खरीदें, तभी भारत आत्मनिर्भर बनेगा।

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा देश की बागडोर संभालने के बाद महात्मा गांधी द्वारा आजादी के आंदोलन के साथ शुरू किए गए स्वदेशी के नारे को बुलंद किया गया। प्रधानमंत्री जी वर्ष 2014 से ही भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। महात्मा गांधी ने आजादी से पहले स्वदेशी का जो सपना देखा था, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

मोदी जी उसे पूरा करने के लिए स्वदेशी अपनाने का अभियान चला रहे हैं। प्रधानमंत्री जी वर्ष 2014 से ही भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी की नीतियों से आज भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। भारत आने वाले दो वर्षों में जर्मनी को पीछे छोड़कर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बनने जा रहा है। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने और आत्मनिर्भर बनाने में मध्यप्रदेश भी पीछे नहीं रहेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार मध्यप्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने में बड़ा योगदान दे रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की डबल इंजन सरकार पर निवेशकों का इतना भरोसा है कि देशी-विदेशी कंपनियां मध्यप्रदेश में निवेश की इच्छुक हैं।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वदेशी

के अभियान को घर-घर तक पहुंचाना होगा। मध्यप्रदेश के लोग अपने देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वदेशी को बढ़ावा दें। हम जब भारत में बना सामान खरीदेंगे, तभी आयात कम होगा और भारत की अर्थव्यवस्था और मजबूत होगी। आप जब सामान खरीदने जाएं तो एक बार जरूर विचार करें कि जो सामान आप खरीदकर अपने घर ले जा रहे हैं, क्या उसे बनाने में किसी भारतीय का पसीना बहा है या नहीं। क्या उस सामान को खरीदने से किसी गरीब रेहड़ी-पट्टरी पर व्यवसाय करने वाले का भला हो रहा या नहीं।

अगर आप रेहड़ी-पट्टरी वाले, लघु और कुटीर उद्योगों में बनने वाले स्वदेशी सामानों को खरीदेंगे तो निश्चित रूप से भारत बहुत जल्दी ही आत्मनिर्भर बन जाएगा। प्रधानमंत्री जी की नीतियों और कार्यों से भारत रक्षा उपकरणों के साथ मोबाइल निर्यात में तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत पेट्रोलियम पदार्थों का सबसे अधिक आयात करने वाले देशों में शामिल है। प्रधानमंत्री जी ने पेट्रोलियम में 20 प्रतिशत एथनॉल मिलाने का कारगर उपाय किया है, इससे आयात कम होगा और हमारा देश आर्थिक रूप से और सशक्त होगा। मध्यप्रदेश और भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हम सभी को स्वदेशी सामानों का ही उपयोग करना चाहिए। ■



श्री विजयादशमी उत्सव 2025 में सरसंघचालक जी का उद्बोधन

स्वदेशी तथा स्वावलंबन का कोई पर्याय नहीं



यह वर्ष श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज के पावन देहोत्सर्ग का तीन सौ पचास वाँ वर्ष है। हिन्द की चादर बनकर उनके उस बलिदान ने विदेशी विधर्मी अत्याचार से हिन्दू समाज की रक्षा की। अंग्रेजी दिनांक के अनुसार आज स्व. महात्मा गांधी जी का जन्म दिवस है। अपनी स्वतंत्रता के शिल्पकारों में वे अग्रणी हैं ही, भारत के 'स्व' के आधार पर स्वातंत्र्योत्तर भारत की संकल्पना करने वाले दार्शनिकों में भी उनका स्थान विशिष्ट है।

॥ॐ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य के शतवर्ष पूर्ण करने वाली इस विजयादशमी के निमित्त हम यहाँ एकत्रित हैं। संयोग है कि यह वर्ष श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज के पावन देहोत्सर्ग का तीन सौ पचास वाँ वर्ष है। हिन्द की चादर बनकर उनके उस बलिदान ने विदेशी विधर्मी अत्याचार से हिन्दू समाज की रक्षा की। अंग्रेजी दिनांक के अनुसार आज स्व. महात्मा गांधी जी का जन्म दिवस है। अपनी स्वतंत्रता के शिल्पकारों में वे अग्रणी हैं ही, भारत के 'स्व' के आधार पर स्वातंत्र्योत्तर भारत की संकल्पना करने वाले दार्शनिकों में भी उनका स्थान विशिष्ट है।

सादगी, विनम्रता, प्रामाणिकता तथा दृढ़ता के धनी व देशहित में अपने प्राण तक न्यौछावर करने वाले हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म दिवस भी आज ही है। भक्ति, समर्पण व देश सेवा के ये उत्तुंग आदर्श हम सभी के लिए अनुकरणीय हैं। मनुष्य वास्तविक दृष्टि से मनुष्य कैसे बने और जीवन को जिये यह शिक्षा हमें इन महापुरुषों से मिलती है। आज की देश व दुनिया की परिस्थिति भी हम भारतवासियों से इसी प्रकार से व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चारित्र्य से सुसंपन्न जीवन की माँग कर रही है। गत वर्ष भर के कालावधि में हम सब ने एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जो राह तय की है उसके पुनरावलोकन से यह बात ध्यान में आती है।

वर्तमान परिदृश्य - आशा

और चुनौतियाँ

यह बीती कालावधि एक तरफ विश्वास तथा आशा को अधिक बलवान बनाने वाली है तथा दूसरी ओर हमारे सम्मुख उपस्थित पुरानी व नयी चुनौतियों को अधिक स्पष्ट रूप में उजागर करते हुए हमारे लिए विहित कर्तव्य पथ को भी निर्देशित करने वाली है।

गत वर्ष प्रयागराज में संपन्न महाकुंभ ने श्रद्धालुओं की सर्व भारतीय संख्या के साथ



ही उत्तम व्यवस्थापन के भी सारे कीर्तिमान तोड़कर एक जागतिक विक्रम प्रस्थापित किया। संपूर्ण भारत में श्रद्धा व एकता की प्रचण्ड लहर जगायी।

दिनांक 22 अप्रैल को पहलगाम में सीमापार से आये आतंकवादियों के हमले में 26 भारतीय यात्री नागरिकों की उनका हिन्दू धर्म पूछ कर हत्या कर दी गई। संपूर्ण भारत वर्ष में नागरिकों में दुःख और क्रोध की ज्वाला भड़की। भारत सरकार ने योजना बनाकर मई मास में इसका पुरजोर उत्तर दिया। इस सब कालावधि में देश के नेतृत्व की दृढ़ता तथा हमारी सेना के पराक्रम तथा युद्ध कौशल के साथ-साथ ही समाज की दृढ़ता व एकता का सुखद दृश्य हमने देखा। परन्तु अपनी तरफ से सबसे मित्रता की नीति व भाव रखते हुए भी हमें अपने सुरक्षा के विषय में अधिकाधिक सजग रहना व समर्थ बनते रहना पड़ेगा यह बात भी हमें समझ में आ गई।

विश्व में बाकी सब देशों के इस प्रसंग के संबंध में जो नीतिगत क्रियाकलाप बने उससे विश्व में हमारे मित्र कौन-कौन और कहाँ तक हैं इसकी परीक्षा भी हो गई।

देश के अन्दर उग्रवादी नक्सली आन्दोलन पर शासन तथा प्रशासन की दृढ़ कारवाई के कारण तथा लोगों के सामने उनके विचार का खोखलापन व क्रूरता अनुभव से उजागर होने के कारण, बड़ी मात्रा में नियंत्रण आया है। उन क्षेत्रों में नक्सलियों के पनपने के मूल में वहाँ चल रहा शोषण व अन्याय, विकास का अभाव तथा शासन-प्रशासन में इन सब बातों के प्रति संवेदना का अभाव ये कारण थे।

अब यह बाधा दूर हुई है तो उन क्षेत्रों में न्याय, विकास, सद्भावना, संवेदना तथा सामरस्य स्थापन करने के लिए कोई व्यापक योजना शासन-प्रशासन के द्वारा बने इसकी आवश्यकता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में भी प्रचलित परिमाणों के आधार पर हमारी अर्थ स्थिति प्रगति कर रही है, ऐसा कहा जा सकता है। अपने देश को विश्व में सिरमौर देश बनाने का सर्व सामान्य जनों में बना उत्साह हमारे उद्योग जगत में और विशेष कर नई पीढ़ी में दिखता है। परन्तु इस प्रचलित अर्थ प्रणाली के प्रयोग से अमीरी व गरीबी का अंतर बढ़ना, आर्थिक सामर्थ्य का केंद्रीकृत होना, शोषकों के लिए अधिक सुरक्षित शोषण का नया तंत्र दृढ़मूल होना, पर्यावरण की हानि, मनुष्यों के आपसी व्यवहार में संबंधों की जगह व्यापारिक दृष्टि व अमानवीयता बढ़ना, ऐसे दोष भी विश्व में सर्वत्र उजागर हुए हैं। इन दोषों की बाधा हमें न हों तथा अभी अमेरिका ने अपने

स्वयं के हित को आधार बनाकर जो आयात शुल्क नीति चलायी उसके चलते, हमको भी कुछ बातों का पुनर्विचार करना पड़ने वाला है। विश्व परस्पर निर्भरता पर जीता है। परन्तु स्वयं आत्मनिर्भर होकर, विश्व जीवन की एकता को ध्यान में रखकर हम इस परस्पर निर्भरता को अपनी मजबूरी न बनने देते हुए अपने स्वेच्छा से जिएं, ऐसा हमको बनना पड़ेगा। स्वदेशी तथा स्वावलंबन को कोई पर्याय नहीं है।

जड़वादी पृथगात्म दृष्टि पर आधारित विकास की संकल्पना को लेकर जो विकास की जड़वादी व उपभोगवादी नीति विश्व भर में प्रचलित है उसके दुष्परिणाम सब ओर उत्तरोत्तर बढ़ती मात्रा में उजागर हो रहे हैं। भारत में भी वर्तमान में उसी नीति के चलते वर्षों का अनियमित व अप्रत्याशित वर्षामान, भूस्खलन, हिमनदियों का सूखना आदि परिणाम गत तीन-चार वर्षों में अधिक तीव्र हो रहे हैं। दक्षिण पश्चिम एशिया का सारा जलस्त्रोत हिमालय से आता है। उस हिमालय में इन दुर्घटनाओं का होना भारतवर्ष और दक्षिण एशिया के अन्य देशों के लिए खतरे की घंटी माननी चाहिए।

गत वर्षों में हमारे पड़ोसी देशों में बहुत उथल-पुथल मची है। श्रीलंका में, बांग्लादेश में और हाल ही में नेपाल में जिस प्रकार जन-आक्रोश का हिंसक उद्रेक होकर सत्ता का परिवर्तन हुआ वह हमारे लिए चिंताजनक है। अपने देश में तथा दुनिया में भी भारतवर्ष में इस प्रकार के उपद्रवों को चाहने वाली शक्तियाँ सक्रिय हैं। शासन प्रशासन का समाज से टूटा हुआ सम्बन्ध, चुस्त व लोकभिमुख प्रशासकीय क्रिया-कलापों का अभाव यह असंतोष के स्वाभाविक व तात्कालिक कारण होते हैं। परन्तु हिंसक उद्रेक में वांछित परिवर्तन लाने की शक्ति नहीं होती। प्रजातांत्रिक मार्गों से ही समाज ऐसे आमूलाग्र परिवर्तन ला सकता है। अन्यथा ऐसे हिंसक प्रसंगों में विश्व की वर्चस्ववादी ताकतें अपना खेल खेलने के अवसर ढूँढे, यह संभावना बनती है। यह हमारे पड़ोसी देश सांस्कृतिक दृष्टि से तथा जनता के नित्य संबंधों की दृष्टि से भी भारत से जुड़े हैं। एक तरह से हमारा ही परिवार है। वहाँ पर शांति रहे, स्थिरता रहे, उन्नति हो, सुख और सुविधा की व्यवस्था हो, यह हमारे लिए हमारे हितरक्षण से भी अधिक हमारी स्वाभाविक आत्मीयताजन्य आवश्यकता है।

विश्व में सर्वत्र ज्ञान-विज्ञान की प्रगति, सुख-सुविधा तकनीकी का मनुष्य जीवन में कई प्रकार की व्यवस्थाओं को आरामदायक बनाने वाला स्वरूप, संचार माध्यमों व अंतराष्ट्रीय व्यापार के कारण दुनिया के राष्ट्रों

में बढ़ी हुई निकटता जैसे परिस्थिति का सुखदायक रूप दिखता है। परन्तु विज्ञान एवं तकनीकी की प्रगति की गति व मनुष्यों की इन से तालमेल बनाने की गति इस में बड़ा अंतर है। इसलिए सामान्य मनुष्यों के जीवन में बहुत सारी समस्याएँ उत्पन्न होती दिखाई दे रही हैं। वैसे ही सर्वत्र चल रहे युद्धों सहित अन्य छोटे बड़े कलह, पर्यावरण के क्षरण के कारण प्रकृति के उग्र प्रकोप, सभी समाजों में तथा परिवारों में आई हुई टूटन, नागरिक जीवन में बढ़ता हुआ अनाचार व अत्याचार ऐसी समस्याएँ भी साथ में चलती हुई दिखाई देती हैं। इन सबके उपाय के प्रयास हुए हैं परन्तु वे इन समस्याओं की बढ़त को रोकने में अथवा उनका पूर्ण निदान देने में असफल रहे हैं। मानव मात्र में इसके चलते आई हुई अस्वस्थता, कलह और हिंसा को और बढ़ाते हुए, सभी प्रकार के मांगल्य, संस्कृति, श्रद्धा, परंपरा आदि का संपूर्ण विनाश ही, आगे अपने आप इन समस्याओं को ठीक करेगा, ऐसा विकृत और विपरीत विचार लेकर चलने वाली शक्तियों का संकट भी, सभी देशों में अनुभव में आ रहा है। भारतवर्ष में भी कम-अधिक प्रमाण में इन सब परिस्थितियों को हम अनुभव कर रहे हैं। अब विश्व इन समस्याओं के समाधान के लिए भारत की दृष्टि से निकले चिंतन में से उपाय की अपेक्षा कर रहा है।

हम सब की आशा और आश्वस्त बढ़ाने वाली बात यह है कि अपने देश में सर्वत्र तथा विशेषकर नई पीढ़ी में देश-भक्ति की भावना अपने संस्कृति के प्रति आस्था व विश्वास का प्रमाण निरंतर बढ़ रहा है। संघ के स्वयंसेवकों सहित समाज में चल रही विविध धार्मिक, सामाजिक संस्थाएँ तथा व्यक्ति समाज के अभावग्रस्त वर्गों की निःस्वार्थ सेवा करने के लिए अधिकाधिक आगे आ रहे हैं, और इन सब बातों के कारण समाज का स्वयं सक्षम होना और स्वयं की पहल से अपने सामने की समस्याओं का समाधान करना व अभावों की पूर्ति करना बढ़ा है। संघ के स्वयं सेवकों का यह अनुभव है कि संघ और समाज के कार्यों में प्रत्यक्ष सहभागी होने की इच्छा समाज में बढ़ रही है। समाज के बुद्धिजीवियों में भी विश्व में प्रचलित विकास तथा लोकप्रबंधन के प्रतिमान के अतिरिक्त अपने देश के जीवन दृष्टि, प्रकृति तथा आवश्यकता के आधार पर अपना स्वतन्त्र और अलग प्रकार का कोई प्रतिमान कैसा हो सकता है इसकी खोज का चिंतन बढ़ा है।

भारतीय चिन्तन दृष्टि

भारत का तथा विश्व का विचार भारतीय दृष्टि के आधार पर करने वाले हमारे सभी आधुनिक



मनीषी, स्वामी विवेकानंद से लेकर तो महात्मा गांधीजी, दीनदयालजी उपाध्याय, राम मनोहर लोहिया जी, ऐसे हमारे समाज का नेतृत्व करने वाले सभी महापुरुषों ने, उपरोक्त सभी समस्याओं का परामर्श करते हुए, एक समान दिशा का दिग्दर्शन किया है। आधुनिक विश्व के पास जो जीवन दृष्टि है वह पूर्णतः गलत नहीं, अधूरी है। इसलिए उसके चलते मानव का भौतिक विकास तो कुछ देशों और वर्गों के लिए आगे बढ़ा हुआ दिखता है। सबका नहीं। सबको छोड़िये, अकेले भारत को अमेरिका जैसा तथाकथित समृद्ध और प्रगत भौतिक जीवन जीना है तो और पांच पृथिव्यों की आवश्यकता होगी ऐसा कुछ अभ्यासक कहते हैं। आज की इस प्रणाली से भौतिक विकास के साथ-साथ मानव का मानसिक व नैतिक विकास नहीं हुआ। इसलिए प्रगति के साथ-साथ ही मानव व सृष्टि के सामने नयी-नयी समस्याएँ प्राण संकट बन खड़ी हो रही हैं। इसका कारण - वही दृष्टि का अधूरापन !

हमारी सनातन, आध्यात्मिक, समग्र व एकात्म दृष्टि में मनुष्य के भौतिक विकास के साथ-साथ मन, बुद्धि तथा आध्यात्मिकता का विकास, व्यक्ति के साथ-साथ मानव समूह व सृष्टि का विकास, मनुष्य की आवश्यकताओं - इच्छाओं के अनुरूप आर्थिक स्थिति के साथ-साथ ही, उसके समूह और सृष्टि को लेकर कर्तव्य बुद्धि का तथा सब में अपनेपन के साक्षात्कार को अनुभव करने के स्वभाव का विकास करने की शक्ति है। क्योंकि हमारे पास सबको जोड़ने वाले तत्त्व का साक्षात्कार है। उसके आधार पर सहस्रों वर्षों तक इस विश्व में हमने एक सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण, परस्पर संबंधों को पहचानने वाला, मनुष्य और सृष्टि का सहयोगी जीवन प्रस्थापित किया था। उस हमारी समग्र तथा एकात्म दृष्टि के आधार पर, आज के विश्व की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए, आज विश्व जिन समस्याओं का सामना कर रहा है, उनका शाश्वत निदान देने वाली एक नई रचना की विश्व को आवश्यकता है। अपने उदाहरण से उस रचना का अनुकरणीय प्रतिमान विश्व को देना यह कार्य नियति हम भारतवासियों से चाहती है।

संघ का चिन्तन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने कार्य के शतवर्ष पूर्ण कर चुका है। संघ में विचार व संस्कारों को प्राप्त कर समाज जीवन के विभिन्न आयामों में, विविध संगठनों में, संस्थाओं में, तथा स्थानीय स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक स्वयंसेवक सक्रिय हैं। समाज जीवन में सक्रिय

अनेक सज्जनों के साथ भी स्वयंसेवकों का सहयोग व संवाद चलते रहता है। उन सबके संकलित अनुभव के आधार पर संघ के कुछ निरीक्षण व निष्कर्ष बने हैं।

1. भारत वर्ष के उत्थान की प्रक्रिया गति पकड़ रही है। परन्तु अभी भी हम उसी नीति व व्यवस्था के दायरों में ही सोच रहे हैं जिस का अधूरापन उस नीति के जो परिणाम आज मिल रहे हैं उन से उजागर हो चुका है। यह बात सही है कि उन तरीकों पर विश्व के साथ हम भी इतना आगे पहले ही बढ़ गये हैं कि एकदम परिवर्तन करना संभव नहीं होगा। एक लम्बे वृत्त में धीरे-धीरे ही मुड़ना पड़ेगा। परन्तु हमारे सहित विश्व के सामने खड़ी समस्याओं तथा भविष्य के खतरों से बचने का दूसरा उपाय नहीं है। हमें अपनी समग्र व एकात्म दृष्टि के आधार पर अपना विकास पथ बनाकर, विश्व के सामने एक यशस्वी उदाहरण रखना पड़ेगा। अर्थ व काम के पीछे अंधी होकर भाग रही दुनिया को पूजा व रीति रिवाजों के परे, सबको जोड़ने वाले, सबको साथ में लेकर चलने वाले, सबकी एक साथ उन्नति करने वाले धर्म का मार्ग दिखाना ही होगा।
2. संपूर्ण देश का ऐसा आदर्श चित्र विश्व के सामने खड़ा करने का काम केवल देश की व्यवस्थाओं का ही नहीं है। क्योंकि व्यवस्थाओं का अपने में परिवर्तन का सामर्थ्य व इच्छा, दोनों मर्यादित होती हैं। इन सब की प्रेरणा व इन सब का नियंत्रण समाज की प्रबल इच्छा से ही होता है। इसलिए व्यवस्था परिवर्तन के लिए समाज का प्रबोधन तथा उसके आचरण का परिवर्तन यह व्यवस्था परिवर्तन की पूर्व शर्तें हैं। समाज के आचरण में परिवर्तन भाषणों से या ग्रंथों से नहीं आता। समाज का व्यापक प्रबोधन करना पड़ता है तथा प्रबोधन करने वालों को स्वयं परिवर्तन का उदाहरण बनना पड़ता है। स्थान-स्थान पर ऐसे उदाहरण स्वरूप व्यक्ति, जो समाज के लिए उसके अपने हैं, उनके जीवन में पारदर्शिता है, निःस्वार्थता है और जो संपूर्ण समाज को अपना मानकर समाज के साथ अपना नित्य व्यवहार करते हैं, समाज को उपलब्ध होने चाहिए। समाज में सबके साथ रहकर अपने उदाहरण से समाज को प्रेरणा देने वाला ऐसा स्थानीय सामाजिक नेतृत्व चाहिए। इसलिए व्यक्ति निर्माण से समाज परिवर्तन और समाज परिवर्तन से व्यवस्था परिवर्तन यह देश में

और विश्व में परिवर्तन लाने का सही पथ है यह स्वयंसेवकों का अनुभव है।

3. ऐसे व्यक्तियों के निर्माण की व्यवस्था भिन्न-भिन्न समाजों में सक्रिय रहती है। हमारे समाज में आक्रमण की लंबी अवधि में यह व्यवस्थाएँ ध्वस्त हो गईं। इसलिए इसकी युगानुकूल व्यवस्था घर में, शिक्षा पद्धति में व समाज के क्रियाकलापों में फिर से स्थापित करनी पड़ेगी। यह कार्य करने वाले व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। मन बुद्धि से इस विचार को मानने के बाद भी उनको आचरण में लाने के लिए मन, वचन, कर्म, की आदत बदलनी पड़ती है, उसके लिए व्यवस्था चाहिए। संघ की शाखा वह व्यवस्था है। सौ वर्षों से सब प्रकार की परिस्थितियों में आग्रहपूर्वक इस व्यवस्था को संघ के स्वयंसेवकों के द्वारा सतत् चलाया गया है और आगे भी ऐसे ही चलाना है। इसलिए स्वयंसेवकों को नित्य शाखा के कार्यक्रमों को मन लगाकर करते हुए अपनी आदतों में परिवर्तन करने की साधना करनी पड़ती है। व्यक्तिगत सदगुणों की तथा सामूहिकता की साधना करना तथा समाज के क्रियाकलापों में सहभागी, सहयोगी होते हुए समाज में सदगुणों का व सामूहिकता का वातावरण निर्माण करने के लिए ही संघ की शाखा है।
4. किसी भी देश के उत्थान में सबसे महत्वपूर्ण कारक उस देश के समाज की एकता है। हमारा देश विविधताओं का देश है। अनेक भाषाएँ अनेक पंथ, भौगोलिक विविधता के कारण रहन-सहन, खान-पान के अनेक प्रकार, जाति-उपजाति आदि विविधताएँ पहले से ही हैं। पिछले हजार वर्षों में भारतवर्ष की सीमा के बाहर के देशों से भी यहाँ पर कुछ विदेशी संप्रदाय आ गए। अब विदेशी तो चले गए लेकिन उन संप्रदायों को स्वीकार कर आज भी अनेक कारणों से उन्हीं पर चलने वाले हमारे ही बंधु भारत में विद्यमान हैं। भारत की परंपरा में इन सब का स्वागत और स्वीकार्य है। इनको हम अलगता की दृष्टि से नहीं देखते। हमारी विविधताओं को हम अपनी-अपनी विशिष्टताएँ मानते हैं और अपनी-अपनी विशिष्टता पर गौरव करने का स्वभाव भी समझते हैं। परंतु यह विशिष्टताएँ भेद का कारण नहीं बननी चाहिए। अपनी सब विशिष्टताओं के बावजूद हम सब एक बड़े समाज के अंग हैं। समाज, देश, संस्कृति तथा राष्ट्र के नाते हम एक हैं। यह हमारी बड़ी पहचान



हमारे लिए सर्वोपरि है यह हमको सदैव ध्यान में रखना चाहिए। उसके चलते समाज में सबका आपस का व्यवहार सद् भावना पूर्ण व संयमपूर्ण रहना चाहिए। सब की अपनी-अपनी श्रद्धाएँ, महापुरुष तथा पूजा के स्थान होते हैं। मन, वचन, कर्म से आपस में इनकी अवमानना न हो इसका ध्यान रखना चाहिए। इसलिए प्रबोधन करने की आवश्यकता है। नियम पालन, व्यवस्था पालन करना व सद्भावपूर्वक व्यवहार करना यह इसीलिए अपना स्वभाव बनना चाहिये। छोटी-बड़ी बातों पर या केवल मन में संदेह है इसलिए, कानून हाथ में लेकर रास्तों पर निकल आना, गुंडागर्दी, हिंसा करना यह प्रवृत्ति ठीक नहीं। मन में प्रतिक्रिया रखकर अथवा किसी समुदाय विशेष को उकसाने के लिए अपना शक्ति प्रदर्शन करना ऐसी घटनाओं को योजनापूर्वक कराया जाता है। उनके चंगुल में फँसने का परिणाम, तात्कालिक और दीर्घकालिक, दोनों दृष्टि से ठीक नहीं है। इन प्रवृत्तियों की रोकथाम आवश्यक है। शासन-प्रशासन अपना काम बिना पक्षपात के तथा बिना किसी दबाव में आये, नियम के अनुसार करें। परन्तु समाज की सज्जन शक्ति व तरुण पीढ़ी को भी सजग व संगठित होना पड़ेगा, आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप भी करना पड़ेगा।

5. हमारी इस एकता के आधार को डॉक्टर अंबेडकर साहब ने Inherent cultural unity (अन्तर्निहित सांस्कृतिक एकता) कहा है। भारतीय संस्कृति प्राचीन समय से चलती आई हुई भारत की विशेषता है। वह सर्व समावेशक है। सभी विविधताओं का सम्मान और स्वीकार करने की सीख देती है क्योंकि वह भारत के आध्यात्मिक सत्य तथा करुणा, शुचिता व तप के सदाचार पर यानी धर्म पर आधारित है। इस देश के पुत्र रूप हिंदू समाज ने इसे परंपरा से अपने आचरण में जतन किया है, इसलिए उसे हिंदू संस्कृति भी कहते हैं। प्राचीन भारत में ऋषियों ने अपने तपोबल से इस को निःसृत किया। भारत के समृद्ध तथा सुरक्षित परिवेश के कारण उनसे यह कार्य हो पाया। हमारे पूर्वजों के परिश्रम, त्याग व बलिदानों के कारण यह संस्कृति फली-फूली व अक्षुण्ण रहकर आज हम तक पहुँची है। उस हमारी संस्कृति का आचरण, उसका आदर्श बनें हमारे पूर्वजों का मन में गौरव व कृति में विवेकपूर्ण

अनुसरण तथा यह सब जिसके कारण संभव हुआ उस हमारे पवित्र मातृभूमि की भक्ति यह मिलकर हमारी राष्ट्रीयता है। विविधताओं के संपूर्ण स्वीकार व सम्मान के साथ हम सब को एक माला में मिलाने वाली यह हिन्दू राष्ट्रीयता ही हमें सदैव एक रखती आयी है। हमारी 'Nation State' जैसी कल्पना नहीं है। राज्य आते हैं और जाते हैं, राष्ट्र निरन्तर विद्यमान है। हम सब की एकता का यह आधार हमें कभी भी भूलना नहीं चाहिए।

6. संपूर्ण हिंदू समाज का बल संपन्न, शील संपन्न संगठित स्वरूप इस देश के एकता, एकात्मता, विकास व सुरक्षा की गारंटी है। हिंदू समाज इस देश के लिए उत्तरदायी समाज है, हिंदू समाज सर्व-समावेशी है। ऊपर के अनेकविध नाम और रूपों को देखकर, अपने को अलग मानकर, मनुष्यों में बटवारा व अलगाव खड़ा करने वाली 'हम और वे' इस मानसिकता से मुक्त है और मुक्त रहेगा।

'वसुधैव कुटुंबकम्' की उदार विचारधारा का पुरस्कर्ता व संरक्षक हिंदू समाज है। इसलिए भारतवर्ष को वैभव संपन्न व संपूर्ण विश्व में अपना अपेक्षित व उचित योगदान देने वाला देश बनाना, यह हिंदू समाज का कर्तव्य बनता है। उसकी संगठित कार्य शक्ति के द्वारा, विश्व को नयी राह दे सकने वाले धर्म का संरक्षण करते हुए, भारत को वैभव संपन्न बनाना, यह संकल्प लेकर संघ सम्पूर्ण हिंदू समाज के संगठन का कार्य कर रहा है। संगठित समाज अपने सब कर्तव्य स्वयं के बलबूते पूरे कर लेता है। उसके लिए अलग से अन्य किसी को कुछ करने की आवश्यकता नहीं रहती।

7. उपरोक्त समाज का चित्र प्रत्यक्ष साकार होना है तो व्यक्तियों में, समूहों में व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय चारित्र्य, दोनों के सुदृढ़ होने की आवश्यकता रहेगी। अपने राष्ट्र स्वरूप की स्पष्ट कल्पना व गौरव संघ की शाखा में प्राप्त होता है। नित्य शाखा में चलने वाले कार्यक्रमों से स्वयंसेवकों में व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व, भक्ति व समझदारी का विकास होता है। इसलिए शताब्दि वर्ष में व्यक्ति निर्माण का कार्य देश में भौगोलिक दृष्टि से सर्वव्यापी हो तथा सामाजिक आचरण में सहज परिवर्तन लाने वाला पंच परिवर्तन कार्यक्रम स्वयंसेवकों के उदाहरण से समाजव्यापी बने यह संघ का प्रयास रहेगा।

सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन,

पर्यावरण संरक्षण, स्व बोध तथा स्वदेशी व नियम, कानून, नागरिक अनुशासन व संविधान का पालन इन पांच विषयों में व्यक्ति व परिवार, कृतिरूप से स्वयं के आचरण में परिवर्तन लाने में सक्रिय हो तथा समाज में उनके उदाहरणों का अनुकरण हो ऐसा यह कार्यक्रम है। इसमें अंतर्भूत कृतियाँ आचरण के लिए सरल और सहज है। गत दो-तीन वर्षों में समय-समय पर संघ के कार्यक्रमों में इसका विस्तृत विवेचन हुआ है। संघ के स्वयंसेवकों के अतिरिक्त समाज में अनेक अन्य संगठन व व्यक्ति भी इन्हीं प्रकार के कार्यक्रम चला रहे हैं। उन सब के साथ संघ के स्वयंसेवकों का सहयोग व समन्वय साधा जा रहा है।

विश्व के इतिहास में समय-समय पर भारत का महत्वपूर्ण अवदान, विश्व का खोया हुआ संतुलन वापस लाने वाला, विश्व के जीवन में संयम और मर्यादा का भान उत्पन्न करने वाला विश्व धर्म देना, यही रहा है। हमारे प्राचीन पूर्वजों ने भारत भूमि में निवास करने वाले विविधतापूर्ण समाज को संगठित कर एक राष्ट्र के रूप में इसी कर्तव्य के बारंबार आपूर्ति करने के साधन के नाते खड़ा किया था। हमारे स्वातंत्र्य संग्राम के तथा राष्ट्रीय नवोत्थान के पुरोधाओं के सामने स्वतन्त्र भारत की समृद्धि व क्षमताओं के विकास के मंगल परिणाम का यही चित्र था।

हमारे बंगाल प्रांत के पूर्ववर्ती संघचालक स्व. केशवचन्द्र चक्रवर्ती महाशय ने बहुत सुन्दर काव्य पंक्तियों में इसका वर्णन किया है-

बाली सिंघल जबद्वीपे

प्रांतर माझे उठे।

कोतो मठ कोतो मन्दिर

कोतो प्रस्तर फूल फोटे।।

तादेर मुखेर मधुमय बानी

सुने थेमें जाय सब हानाहानी।

विश्वेर घरे-घरे।।

(सिंहल और जावा-द्वीप तक भारतीय संस्कृति का प्रभाव फैला हुआ था। जगह-जगह मठ-मंदिर थे, जहाँ जीवन की सुगंध फूलों-सी बिखरती थी। भारत की मधुर और ज्ञानमयी वाणी सुनकर अन्य देशों में भी वैर-भाव और अशांति समाप्त हो जाती थी)

आइए, भारत का यही आत्मस्वरूप आज की देश-काल-परिस्थिति से सुसंगत शैली में फिर से विश्व में खड़ा करना है। पूर्वज प्रदत्त इस कर्तव्य को, विश्व की आज की आवश्यकता को, पूर्ण करने के लिए हम सब मिलकर, साथ चलकर, अपने कर्तव्य-पथ पर अग्रसर होने के लिए विजयादशमी के मुहूर्त पर सीमोल्लंघन को संपन्न करें।

॥ भारत माता की जय ॥ ■

हर निर्णय किसानों के कल्याण हेतु - डॉ. मोहन यादव



- किसान हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं।
- मध्यप्रदेश का अन्नदाता अब बन रहा है ऊर्जादाता।
- सूखे खेत को पानी मिल जाये तो फसल हो जाती है सोना।
- हम हर खेत तक पहुंचाएंगे पानी।
- किसानों की खुशहाली ही हमारे विकास का है मुख्य आधार।
- सोलर पंप स्थापना के लिये किसानों को 90 प्रतिशत सब्सिडी देगी सरकार।
- विद्युत पंप से एक स्टेप अधिक पॉवर केपिसिटी का दिया जायेगा सोलर पंप।
- सोयाबीन पर भावांतर भुगतान।
- प्रदेश की जीडीपी में कृषि का योगदान 39 प्रतिशत से अधिक।
- फसल कटने से पहले मुआवजा दे रही सरकार।
- भाजपा सरकार किसानों को आत्मनिर्भर बना रही है।

किसान भाई ही मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। किसानों का हित हमारे लिए सर्वोपरि है। सरकार का हर निर्णय किसानों के कल्याण को ध्यान में रखकर लिया जा रहा है। किसानों की भलाई के लिए हमारी सरकार हर जरूरी कदम उठायेगी।

राज्य सरकार हर संभव तरीके से किसानों की आय बढ़ाकर उनकी माली हालत मजबूत करने के लिए प्रयासरत है। भावांतर योजना किसानों को खुले बाजार में फसलों की कीमतों के उतार-चढ़ाव से सुरक्षा देती है। यह योजना किसान हित में सरकार की एक बड़ी पहल है। सूखे खेत को अगर पानी दे दिया जाये, तो फसल सोना हो जाती है, हम प्रदेश के हर खेत तक पानी पहुंचाएंगे। मध्यप्रदेश के अन्नदाता अब ऊर्जादाता बन रहे हैं। किसान भाई अपने खेतों में सोलर पंप जरूर लगाएं। सोलर पंप लगाने से बिजली के अस्थाई कनेक्शन के खर्च से मुक्ति मिलेगी।

सोलर पॉवर पंप स्थापना के लिये किसानों को अब 90 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। पहले 40 प्रतिशत सब्सिडी दी जाती थी। किसानों को विद्युत पंप से एक स्टेप अधिक पॉवर केपिसिटी का सोलर पॉवर पंप दिया जायेगा अर्थात् 3 एचपी वाले किसान को 5 एचपी का सोलर पॉवर पंप और 5 एचपी वाले किसान को 7.5 एचपी का सोलर पॉवर पंप दिया जायेगा।

किसान भाईयों की मेहनत से ही प्रदेश की जीडीपी में कृषि 39 प्रतिशत से अधिक का

योगदान देती है। किसान भाई सच्चे अर्थों में मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। खाद्यान्न, दलहन, तिलहन, फलों और सब्जियों के उत्पादन की दृष्टि से मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। प्लांट बेस्ड प्रोटीन के उत्पादन के मामले में भी हम कम नहीं हैं। संतरा, मसाले, लहसुन, अदरक और धनिया उत्पादन में मध्यप्रदेश नंबर वन है। मटर, प्याज, मिर्च, अमरूद उत्पादन में दूसरे तथा फूल, औषधीय एवं सुगंधित पौधों के मामले में तीसरे स्थान पर मध्यप्रदेश है।

आज मध्यप्रदेश सोयाबीन स्टेट, मिलेट्स स्टेट, मसाला स्टेट, लहसुन स्टेट और संतरा स्टेट के रूप में प्रसिद्ध होकर देश का फूड बास्केट कहलाने लगा है। खेती-किसानी के लिए जल अमृत तुल्य होता है। इसीलिए जल-संरक्षण के हर जरूरी उपाय कर जल अवश्य बचायें। सरकार ने प्रदेश के सभी अंचलों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 3 बड़ी नदी जोड़ो परियोजनाओं पर काम प्रारंभ किया है। राजस्थान के साथ पार्वती-काली सिंध-चंबल (पीकेसी) नदी जोड़ो से बुंदेलखंड और चंबल, उत्तरप्रदेश के साथ केन-बेतवा से बुंदेलखंड और महाराष्ट्र के साथ ताप्ती मेगा रिचार्ज परियोजना से हम प्रदेश के सभी अंचलों में सिंचाई की स्थाई सुविधा उपलब्ध कराने की ओर बढ़ रहे हैं।

किसान धरती माता के वास्तविक पुत्र हैं। मध्यप्रदेश नदियों का मायका है। प्रदेश में 250 से अधिक नदियां निकलती हैं। मां नर्मदा प्रदेश के किसानों के लिए वरदान। राज्य सरकार किसानों



को अनुदान पर सोलर पंप प्रदान कर रही है। किसान को 90 प्रतिशत अनुदान पर सोलर पंप दे रहे हैं। किसानों को 32 लाख सोलर पंप दिए जा रहे हैं। किसान 5 हॉर्स पावर तक के सोलर पंप लगाएं। बिजली का खर्च बचाएं और अतिरिक्त बिजली सरकार को बेचें। सरकार आने पर प्रदेश में अब 52 लाख हेक्टेयर रकबा सिंचित हुआ है। नदी जोड़ो योजना के माध्यम से किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध करा रहे हैं। किसानों की फसल को पानी मिल जाए, फसल सोने की हो जाती है। राज्य सरकार ने सिंचाई का रकबा 100 लाख हेक्टेयर तक करने का लक्ष्य रखा है। किसानों को उनकी फसल का समुचित दाम मिले, इसके लिए फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स भी स्थापित की जा रही हैं, जिससे अधिक उत्पादन होने पर किसान भाइयों को फसल फेंकनी न पड़े। पहले फसल का सीजन निकल जाने पर मुआवजे की राशि भेजी जाती थी। लेकिन अब राज्य सरकार ने सोयाबीन की फसल काटने से पहले ही राशि बांटना शुरू कर दिया है। किसानों की परेशानी किसान का बेटा ही समझ सकता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश के किसानों के लिए भावांतर योजना का लाभ मिल रहा है। किसान भाई पवित्र मन से दूसरों का पेट भरने के लिए अन्न उगाते हैं। पुरानी सरकारों ने मां नर्मदा के जल का उपयोग नहीं किया। आज वही नर्मदा सिंचाई, पेयजल और उद्योगों को पानी उपलब्ध कराती है।

प्रदेश में प्रभु श्रीराम के ओरछा धाम को भव्य रूप दिया जा रहा है। राम वन गमन पथ भी विकसित कर रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण से जुड़े हर स्थान को तीर्थ के रूप में विकसित कर रहे हैं। किसान भाई अपने बच्चों को पढ़ाएं।

मुख्यमंत्री निवास किसानों का अपना आवास है। जब चाहें, यहां आयें। पिछले साल सोयाबीन के लिए 2 लाख किसानों का पंजीयन हुआ था, भावांतर योजना दोबारा शुरू होने पर 9 लाख से अधिक सोयाबीन उत्पादक किसानों से पंजीयन करा लिया है। लाइली बहनों को भाई दूज से 250 रुपए अतिरिक्त लाभ दिया।

राज्य सरकार किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी एवं पारदर्शिता लाकर डिजिटली सिस्टम को और भी सरल बनाने पर विशेष ध्यान दे रही है। किसानों की खुशहाली ही विकास का आधार है। जब अन्नदाता (किसान) खुश होता है, तो पूरी कायनात में खुशी छा जाती है। प्रदेश के इतिहास में पहली बार सोयाबीन की फसल को भावांतर योजना के दायरे में लाया गया है। पहले सोयाबीन उत्पादक किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम कीमत पर फसल बेचनी पड़ती थी, इससे

किसानों के आंसू पोंछेगी सरकार - हेमंत खण्डेलवाल



- किसानों की उन्नति के लिए लगातार प्रयास कर रहे मुख्यमंत्री डॉ. यादव।
- मोदी जी किसानों को जो दे रहे हैं, वो कांग्रेस ने कभी सोचा भी नहीं।
- कांग्रेस सरकार ने किसानों पर चलवाई गोली, मोदी सरकार दे रही सुविधाएं।

किसानों की तरक्की हो, कृषि आधारित उद्योग लगे, किसान भी पैसा कमाए और उसके बेटे को भी रोजगार मिले, इसकी चिंता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कर रहे हैं। जब-जब किसान की आंखों में आंसू आएगा, तो उसके पोंछने का काम मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और उनकी सरकार करेगी।

जब सोयाबीन के रेट कम हुए और किसानों की चिंता बढ़ी, तो वो मध्यप्रदेश सरकार ही थी, जिसने देश में सबसे पहले भावांतर योजना लागू की। चाहे गेहूं पर समर्थन मूल्य देने की बात हो, या मक्का और धान के सही रेट हों, इसकी चिंता मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव लगातार कर रहे हैं। मध्यप्रदेश ही वह राज्य है, जहां पेट्रोल में मिक्स किए जाने वाले एथेनॉल के उत्पादन के लिए सबसे ज्यादा संयंत्रों की अनुमति दी गई

है। किसानों को उनकी फसलों का वाजिब दाम मिले, इसकी चिंता तो मुख्यमंत्री डॉ. यादव लगातार करते ही हैं, वो यह भी मानते हैं कि किसानों की उन्नति सिर्फ अनाज के उत्पादन से नहीं होगी। इसीलिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव डेयरी उद्योग के विकास के लिए भी लगातार प्रयासरत हैं। प्रदेश में दूध उत्पादन को बढ़ाकर 50 लाख लीटर तक ले जाने अमूल की बराबरी पर हमारा सांची ब्रांड खड़ा हो सके, इसके लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। सांची के दुग्ध उत्पादों के एक्सपोर्ट के लिए भी करार किए गए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार लगातार किसानों की चिंता करती है। कांग्रेस ने किसानों को कभी फसल बीमा नहीं दिया, वह देने का काम मोदी सरकार ने किया। किसानों को किसान सम्मान निधि देने का काम भी हमारी सरकार ने किया, जिसमें 6 हजार रुपये केंद्र सरकार देती है और 6 हजार रुपये राज्य सरकार मिलाती है।

गेहूं की बोरी उठाकर प्रदर्शन करने वाले कांग्रेस के नेताओं ने जब कांग्रेस सरकार थी, तो कांग्रेस सरकार ने मुलताई में किसानों पर गोलियां चलवाई। कांग्रेस ने कभी नहीं सोचा कि किसानों को समर्थन मूल्य दे सकते हो, किसान सम्मान निधि दे सकते हो, कांग्रेस भी फसल बीमा दे सकते हो, भावांतर दे सकते हो। जब कांग्रेस सरकार रही, तब कांग्रेस ने किसानों की चिंता नहीं की और स्टंट करके, तरह-तरह के हथकंडे अपनाकर उस सरकार का विरोध कर रहे हैं, जो लगातार किसानों की चिंता करती है। जिसके दिल में किसान बसे हैं। सभी किसान भाई कांग्रेस के ऐसे हर षडयंत्र को बेनकाब करें, जनता को जागरूक करें। किसानों को बताएं कि यही वो सरकार है, जिसने समर्थन मूल्य दिया, जिसने फसल बीमा दिया। कांग्रेस के 70 सालों में ऐसी कोई योजना नहीं आई। ■

उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ता था। सरकार ने ऐसे किसानों की पीड़ा समझी और सोयाबीन की फसल को भी भावांतर योजना में लेकर आये हैं। ऐसे किसानों को फसल के शासकीय खरीदी मूल्य और बाजार में बिक्री भाव में अन्तर की राशि की भरपाई अब सरकार करेगी।

किसानों को उनकी फसल की उचित मूल्य

की गारंटी लेंगे। भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को उनके परिश्रम का पूरा मूल्य दिलाएंगे। भावान्तर योजना सिर्फ एक योजना नहीं है, यह सरकार और किसानों के बीच विश्वास का रिश्ता है। हमारा संकल्प है कि किसान का पसीना सूखने से पहले उसका हक उसके हाथ में पहुँचे। ■



पहचान

अटल बिहारी वाजपेयी

पेड़ के ऊपर चढ़ा आदमी
ऊँचा दिखाई देता है।
जड़ में खड़ा आदमी
नीचा दिखाई देता है।

आदमी न ऊँचा होता है,
न नीचा होता है,
न बड़ा होता है, न छोटा होता है।
आदमी सिर्फ आदमी होता है।

पता नहीं इस सीधे, सपाट सत्य को
दुनिया क्यों नहीं जानती?
और अगर जानती है,
तो मन से क्यों नहीं मानती?

इससे फर्क नहीं पड़ता
कि आदमी कहाँ खड़ा है?

पथ पर या रथ पर?
तीर पर या प्राचीर पर?

फर्क इससे पड़ता है कि जहाँ खड़ा है,
या जहाँ उसे खड़ा होना पड़ा है,
वहाँ उसका धरातल क्या है?

हिमालय की चोटी पर पहुँच,
एवरेस्ट-विजय की पताका फहरा,
कोई विजेता यदि ईश्या से दग्ध
अपने साथी से विश्वासघात करे,

तो क्या उसका अपराध
इसलिए क्षम्य हो जाएगा कि
वह एवरेस्ट की ऊँचाई पर हुआ था?

नहीं, अपराध अपराध ही रहेगा,
हिमालय की सारी धवलता
उस कालिमा को नहीं ढक सकती।

कपड़ों की दूधिया सफेदी जैसे

मन की मलिनता को नहीं छिपा सकती।

किसी संत कवि ने कहा है कि
मनुष्य के ऊपर कोई नहीं होता,
मुझे लगता है कि मनुष्य के ऊपर
उसका मन होता है।

छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता,
टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।

इसीलिए तो भगवान कृष्ण को
शस्त्रों से सज्ज, रथ पर चढ़े,
कुरुक्षेत्र के मैदान में खड़े,
अर्जुन को गीता सुनानी पड़ी थी।

मन हार कर, मैदान नहीं जीते जाते,
न मैदान जीतने से मन ही जीते जाते हैं।

चोटी से गिरने से
अधिक चोट लगती है।
अस्थि जुड़ जाती,
पीड़ा मन में सुलगती है।

इसका अर्थ यह नहीं कि
चोटी पर चढ़ने की चुनौती ही न मानें,
इसका अर्थ यह भी नहीं कि
परिस्थिति पर विजय पाने की न ठानें।

आदमी जहाँ है, वहीं खड़ा रहे?
दूसरों की दया के भरोसे पर पड़ा रहे?
जड़ता का नाम जीवन नहीं है,
पलायन पुरोगमन नहीं है।

आदमी को चाहिए कि वह जूझे
परिस्थितियों से लड़े,
एक स्वप्न टूटे तो दूसरा गढ़े।

किंतु कितना भी ऊँचा उठे,
मनुष्यता के स्तर से न गिरे,
अपने धरातल को न छोड़े,
अन्तर्यामी से मुँह न मोड़े।

एक पाँव धरती पर रख कर ही
वामन भगवान ने आकाश, पाताल
को जीता था।

धरती ही धारण करती है,
कोई इस पर भार न बने,
मिथ्या अभिमान से न तने।

आदमी की पहचान,
उसके धन या आसन से नहीं होती,
उसके मन से होती है।
मन की फकीरी पर
कुबेर की सम्पदा भी रोती है।



युवाओं को जोड़ने का काम कर रहा खेल महोत्सव - हेमंत खण्डेलवाल



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश भर में वोकल फॉर लोकल एवं आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के अंतर्गत आमजनों में उत्साह देखने को मिल रहा है। हर बार जब हम स्वदेशी उत्पाद चुनते हैं, हम केवल एक वस्तु नहीं खरीदते बल्कि किसी भारतीय का सपना, उसकी मेहनत और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देते हैं।

हर बार जब हम स्वदेशी उत्पाद चुनते हैं, हम केवल एक वस्तु नहीं खरीदते बल्कि किसी भारतीय का सपना, उसकी मेहनत और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देते हैं। देश की आजादी के बाद महात्मा गांधी ने एक सपना देखा था कि हमारे देश में बनी हुई चीजें लोग उपयोग में लाएं। लेकिन कांग्रेस की नीतियों में कुछ ऐसी कमी आई कि देश का आयात बढ़ता गया और निर्यात कम होता गया। धीरे-धीरे देश की स्थिति ऐसी आई जब विदेशी सामान इंपोर्ट करने के पैसे भी हमारी सरकार के पास नहीं था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जब 2014 में देश की बागडोर संभाली तब से देश की आर्थिक स्थिति में सुधार आया। आज हमारे देश का आयात 27 प्रतिशत है, लेकिन निर्यात 67 प्रतिशत बढ़ा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार मध्यप्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने में बड़ा योगदान दे रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की डबल इंजन सरकार पर निवेशकों का इतना भरोसा है कि देशी-विदेशी कंपनियां मध्यप्रदेश में निवेश की इच्छुक हैं। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वदेशी के अभियान को घर-घर तक पहुंचाना होगा। हम जब भारत में बना सामान खरीदेंगे, तभी निर्यात कम होगा और भारत की अर्थव्यवस्था और मजबूत होगी। ■

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों से देश में आया खेलों का स्वर्णिम युग।
- युवाओं में अनुशासन, आत्मविश्वास और राष्ट्र प्रेम की भावना जगाते हैं खेल।
- प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज हमारे देश का आयात 27 प्रतिशत है, लेकिन निर्यात 67 प्रतिशत बढ़ा है।
- प्रदेश सरकार मध्यप्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने में बड़ा योगदान दे रही है।

विकसित करते हैं। सांसद खेल महोत्सव न सिर्फ प्रतिभावान खिलाड़ियों को मंच उपलब्ध कराता है, बल्कि ग्रामीण और शहरी युवाओं को जोड़ने का भी कार्य कर रहा है। सांसद खेल महोत्सव के माध्यम से मजरे, टोलों, गांवों की खेल प्रतिभाओं को आगे लाकर उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। विकास सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर से नहीं होता बल्कि विकास के लिए समाज को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहना भी आवश्यक है। समाज को स्वस्थ बनाने और बच्चों को खेलों में आगे बढ़ाने के लिए सरकार मिशन मोड में काम कर रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश भर में वोकल फॉर लोकल एवं आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के अंतर्गत आमजनों में उत्साह देखने को मिल रहा है।



खे ल युवा पीढ़ी में अनुशासन, आत्मविश्वास और राष्ट्र प्रेम की भावना



संघ शाखा से स्वयंसेवक की अहम से वयम की यात्रा शुरू होती है- पीएम मोदी



संघ की 100 वर्ष की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के जारी किए हैं। 100 रुपये के सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय चिन्ह है और दूसरी ओर सिंह के साथ वरद-मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि और समर्पण भाव से उसे नमन करते स्वयंसेवक दिखाई देते हैं।

- राष्ट्र के प्रति आरएसएस के योगदान को रेखांकित करते हुए विशेष रूप से डिजाइन किया गया स्मारक डाक टिकट और सिक्का जारी।
- एक शताब्दी पहले हुई आरएसएस की स्थापना राष्ट्रीय चेतना की स्थायी भावना दर्शाती है, जो हर युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए उभरी है।

- आरएसएस के स्वयंसेवक राष्ट्र की सेवा और समाज को सशक्त बनाने के लिए अथक रूप से समर्पित रहे हैं।
- जारी किया गया स्मारक टिकट एक श्रद्धांजलि है, जो 1963 के गणतंत्र दिवस परेड में गर्व से मार्च करने वाले आरएसएस स्वयंसेवकों का स्मरण कराता है।

- अपनी स्थापना से ही आरएसएस राष्ट्र निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता रहा है।
- आरएसएस की शाखा प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत है, जहां "मैं" से "हम" की यात्रा आरंभ होती है।
- आरएसएस के एक शताब्दी के कार्य की नाँव राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य, व्यक्तिगत विकास के एक स्पष्ट मार्ग और शाखा की गतिशील कार्यप्रणाली पर टिकी हुई है।
- आरएसएस ने अनगिनत बलिदान दिए हैं, "राष्ट्र पहले और एक लक्ष्य - एक भारत, श्रेष्ठ भारत" के सिद्धांत से निर्देशित है।
- संघ के स्वयंसेवक समाज के प्रति दृढ़



श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत

केंद्रीय संस्कार

श्रीमती रेखा गुप्ता

मुख्यमंत्री, दिल्ली



और प्रतिबद्ध बने रहते हैं और उनकी संवैधानिक मूल्यों में आस्था है।

- संघ देशभक्ति और सेवा का प्रतीक है।
- दूसरों के दुख को कम करने के लिए व्यक्तिगत कष्ट सहना प्रत्येक स्वयंसेवक की पहचान है।
- संघ ने जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों में आत्म-सम्मान और सामाजिक जागरूकता का संचार किया है।
- पंच परिवर्तन प्रत्येक स्वयंसेवक को राष्ट्र की चुनौतियों का सामना करने और उन पर विजय पाने के लिए प्रेरित करता है।

महानवमी, देवी सिद्धिदात्री का दिन है। विजयादशमी, अन्याय पर न्याय की जीत, असत्य पर सत्य की जीत, अंधकार पर प्रकाश की जीत, विजयादशमी भारतीय संस्कृति के इस विचार और विश्वास का कालजयी उद्घोष है। ऐसे महान पर्व पर 100 वर्ष पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना, ये कोई संयोग नहीं था। ये हजारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुनरुत्थान था, जिसमें राष्ट्र चेतना समय-समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए नए-नए अवतारों में प्रकट होती है। इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है।

यह हमारी पीढ़ी के स्वयंसेवकों का सौभाग्य

है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने को मिल रहा है।

संघ की 100 वर्ष की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के जारी किए हैं। 100 रुपए के सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय चिन्ह है और दूसरी ओर सिंह के साथ वरद-मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि और समर्पण भाव से उसे नमन करते स्वयंसेवक दिखाई देते हैं। भारतीय मुद्रा पर भारत माता की तस्वीर संभवतः स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है। इस सिक्के के ऊपर संघ का बोधवाक्य भी अंकित है “राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम!”

विशेष स्मृति डाक टिकट की भी अपनी एक महत्ता है, 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस की परेड की कितनी अहमियत होती है। 1963 में, आरएसएस के स्वयंसेवक भी 26 जनवरी की राष्ट्रीय परेड में शामिल हुए थे और उन्होंने आन-बान-शान से राष्ट्र भक्ति की धुन पर कदम ताल किया था। इस टिकट में उसी ऐतिहासिक क्षण की स्मृति है।

संघ के स्वयंसेवक जो अनवरत रूप से देश की सेवा में जुटे हैं, समाज को सशक्त कर रहे हैं, इसकी भी झलक इस स्मारक डाक टिकट में है।

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी और संघ की धारा में भी सैकड़ों जीवन पुष्पित-पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती है, उन क्षेत्रों को, वहां की भूमि को, वहां के गांवों को सुजलाम सुफलाम बनाती हुई अपने जल से समृद्ध करती है, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम उसको स्पर्श



किया है। यह अविरोध तप का फल है, यह राष्ट्र प्रवाह प्रबल है।

जिस तरह एक नदी कई धाराओं में खुद को प्रकट करती है, हर धारा अलग-अलग क्षेत्र को पोषित करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग-अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। शिक्षा हो, कृषि हो, समाज कल्याण हो, आदिवासी कल्याण हो, महिला सशक्तिकरण हो, कला और विज्ञान का क्षेत्र हो, हमारा श्रमिक भाई-बहन हो, समाज जीवन के ऐसे कई क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य कर रहा है और इस यात्रा की भी एक विशेषता रही है। संघ की एक धारा अनेक धारा तो बनी, मल्टीप्लाई तो होती गई, लेकिन उनमें कभी विरोधाभास पैदा नहीं हुआ, डिवीजन नहीं हुआ, क्योंकि हर धारा का विभिन्न क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है, भाव एक ही है, राष्ट्र प्रथम, नेशन फर्स्ट!

अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विराट उद्देश्य लेकर चला और यह उद्देश्य रहा राष्ट्र निर्माण, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने जो रास्ता चुना, वह था व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण और इस रास्ते पर सतत चलने के लिए जो कार्य पद्धति चुनी, वह थी नित्य नियमित चलने वाली शाखा।

परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी जानते थे कि हमारा राष्ट्र तभी सशक्त होगा, जब हर नागरिक के भीतर राष्ट्र के प्रति दायित्व का बोध जागृत होगा। हमारा राष्ट्र तभी ऊंचा उठेगा, जब भारत का हर नागरिक राष्ट्र के लिए जीना सीखेगा। इसलिए वह व्यक्ति निर्माण में निरंतर जुटे रहे और उनका तरीका भी कुछ अलग ही था। परम



पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी से हमने बार-बार सुना है, वह कहते थे जैसा है, वैसा लेना है। जैसा चाहिए, वैसा बनाना है। लोक संग्रह का डॉक्टर साहब का यह तरीका कुछ-कुछ अगर समझना है, तो हम कुम्हार को याद करते हैं। जैसे कुम्हार ईंट पकाता है, तो जमीन की सामान्य सी मिट्टी से शुरू करता है। कुम्हार मिट्टी को लाता है, उस पर मेहनत करता है, उसे आकार देकर तपाता है, खुद भी तपता है, मिट्टी को भी तपाता है। फिर उन ईंटों को इकट्ठा करके उनसे भव्य इमारत बनाता है, ऐसे ही डॉक्टर साहब बिल्कुल सामान्य लोगों को चुनते थे, फिर उनको सिखाते थे, विज्ञान देते थे, उनको गढ़ते थे, इस तरह वह देश के लिए समर्पित स्वयंसेवक तैयार करते थे। इसलिए संघ के बारे में कहा जाता है कि इसमें सामान्य लोग मिलकर असामान्य अभूतपूर्व कार्य करते हैं।

व्यक्ति निर्माण की यह सुंदर प्रक्रिया हम संघ की शाखाओं में देखते हैं। संघ शाखा का मैदान एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहां से स्वयंसेवक की अहम से वयम की यात्रा शुरू होती है। संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की यज्ञ वेदी हैं। इन शाखाओं में व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास होता है। स्वयंसेवकों के मन में राष्ट्र सेवा का भाव और साहस दिन प्रतिदिन पनपता रहता है। उनके लिए त्याग और समर्पण सहज हो जाता है, श्रेय के लिए प्रतिस्पर्धा की भावना समाप्त हो जाती है और उन्हें सामूहिक निर्णय और सामूहिक कार्य का संस्कार मिलता है।

राष्ट्र निर्माण का महान उद्देश्य, व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल जीवंत कार्य पद्धति यही संघ की 100 वर्षों की यात्रा का आधार बने हैं। इन्हीं स्तंभों पर खड़े होकर संघ ने

लाखों स्वयंसेवकों को गढ़ा, जो विभिन्न क्षेत्रों में देश को अपना सर्वोत्तम दे रहे हैं, देश को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं, समर्पण से, सेवा से और राष्ट्र के उत्कर्ष की साधना से!

संघ जब से अस्तित्व में आया है, संघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही है, इसलिए जिस कालखंड में जो बड़ी चुनौती देश के सामने आई, संघ ने उस कालखंड के अंदर अपने आप को झोंक दिया, संघ उससे जुड़ा रहा। आजादी की लड़ाई के समय देखें, तो परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी समेत अनेकों कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया। डॉक्टर साहब कई बार जेल तक गए, आजादी के लड़ाई के कितने ही स्वतंत्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहा, उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता रहा। 1942 में, जब चिमूर में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन हुआ, तो उसमें अनेकों स्वयंसेवकों को अंग्रेजों के भीषण अत्याचार का सामना करना पड़ा। आजादी के बाद भी हैदराबाद में निजाम के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष से लेकर गोवा के स्वतंत्रता आंदोलन और दादरा नगर हवेली की मुक्ति तक संघ ने कितने ही बलिदान दिए और भाव एक ही रहा- राष्ट्र प्रथम। लक्ष्य एक ही रहा- एक भारत, श्रेष्ठ भारत।

राष्ट्र साधना किसी यात्रा में ऐसा नहीं है कि संघ पर हमले नहीं हुए, संघ के खिलाफ साजिशें नहीं हुईं। आजादी के बाद भी संघ को कुचलने का प्रयास हुआ। मुख्यधारा में आने देने का और उसे न आने से रोकने के अनगिनत षड्यंत्र हुए। परम पूज्य गुरु जी को झूठे केस में फँसाया गया, उन्हें जेल तक भेज दिया गया। लेकिन जब पूज्य गुरु जी जेल से बाहर आए, तो उन्होंने सहज

रूप से कहा और शायद इतिहास की तारीख में यह भाव, यह शब्द एक बहुत बड़ी प्रेरणा है, तब परम पूज्य गुरु जी ने बहुत सहजता से कहा था, कभी-कभी जीभ दांतों के नीचे आकर दब जाती है, कुचल भी जाती है, लेकिन हम दांत नहीं तोड़ देते। क्योंकि दांत भी हमारे हैं, जीभ भी हमारी हैं। आप कल्पना कर सकते हैं, जिन्हें जेल में इतनी यातनाएं दी गईं, जिन पर भांति-भांति के अत्याचार हुए, उसके बाद भी परम पूज्य गुरु जी के मन में कोई रोष नहीं था, कोई दुर्भावना नहीं थी। यही परम पूज्य गुरु जी का ऋषि तुल्य व्यक्तित्व था। उनकी यही वैचारिक स्पष्टता संघ के प्रत्येक स्वयंसेवक के जीवन का मार्गदर्शन बनीं। इसी ने समाज के प्रति एक एकात्मता और आत्मीयता के संस्कारों को सशक्त किया और इसीलिए चाहे संघ पर प्रतिबंध लगे, चाहे षड्यंत्र हुए, झूठे मुकदमे हुए, संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया, क्योंकि वह जानते हैं हम समाज से अलग नहीं हैं, समाज हम सबसे ही तो बना है, जो अच्छा है, वह भी हमारा है, जो कम अच्छा है, वह भी हमारा है।

और दूसरी बात जिसने कभी कटुता को जन्म नहीं दिया, वह है प्रत्येक स्वयंसेवक का लोकतंत्र और संवैधानिक संस्थानों में अडिग विश्वास, जब देश पर इमरजेंसी थोपी गई तो इसी एक विश्वास ने हर स्वयंसेवक को ताकत दी, उसे संघर्ष करने की क्षमता दी। इन्हीं दो मूल्यों, समाज के साथ एक एकात्मता और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति आस्था ने संघ के इस स्वयंसेवकों को हर संकट में स्थितप्रज्ञ बना करके रखा, समाज के प्रति संवेदनशील बनाए रखा। इसलिए समाज के अनेक थपेड़े झेलते हुए भी संघ विराट वट वृक्ष



की तरह अडिग खड़ा है। देश और समाज की सेवा में निरंतर कार्य कर रहा है।

एक स्वयंसेवक ने इतनी सुंदर प्रस्तुति दी-

**शून्य से एक शतक बने,
अंक की मनभावना भारती की
जय-विजय हो,
ले हृदय में प्रेरणा,
कर रहे हम साधना,
मातृ-भू आराधना**

और उस गीत का संदेश था, हमने देश को ही देव माना है और हमने देह को ही दीप बनाकर के जलने का सीखा है।

प्रारंभ से संघ राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। जब विभाजन की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया, तब स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की, संघ के ही स्वयंसेवक अपनी सीमित संसाधनों के साथ सबसे आगे खड़े थे। यह केवल राहत नहीं था, यह राष्ट्र की आत्मा को संबल देने का कार्य था।

1956 में, गुजरात के कच्छ के अंजार में बहुत बड़ा भूकंप आया था। तबाही इतनी बड़ी थी, चारों ओर विनाश का दृश्य था। उस समय भी संघ के स्वयंसेवक राहत और बचाव में जुटे थे। तब परम पूज्य गुरु जी ने गुजरात के वरिष्ठ संघ के प्रचारक वकील साहब को जो उस समय गुजरात का कार्य संभालते थे, उन्हें एक पत्र लिखा था, उन्होंने लिखा था किसी दूसरे के दुख को दूर करने के लिए निःस्वार्थ भाव से खुद कष्ट उठाना, एक श्रेष्ठ हृदय का परिचायक है।

खुद कष्ट उठाकर दूसरों के दुख हरना, यह हर स्वयंसेवक की पहचान है। 1962 के युद्ध का वह समय, संघ के स्वयंसेवकों ने दिन-रात खड़े रहकर सेना की मदद की, उनका हौसला बढ़ाया,

सीमा पर बसे गांवों में मदद पहुंचाई। 1971 में लाखों शरणार्थी पूर्वी पाकिस्तान से भारत की धरती पर आए, उनके पास ना घर था ना साधन, उस कठिन घड़ी में स्वयंसेवकों ने उनके लिए अन्न जुटाया, आश्रय दिया, स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई, उनके आंसुओं को पोछा, उनकी पीड़ा को साझा किया। 1984, सिखों के खिलाफ जो कत्लेआम चलाया गया था, अनेक सिख परिवार संघ के स्वयंसेवकों के घरों में आकर के आश्रय ले रहे थे। यह स्वयं सेवकों का स्वभाव रहा है।

एक बार पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम चित्रकूट गए थे। वहां उन्होंने नाना जी देशमुख जी जिस कार्य को कर रहे थे, उस आश्रम स्थान को देखा था, वहां के सेवा कार्य देखे, वह हैरान रह गए थे। उसी प्रकार से पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी जी भी जब नागपुर गए, तो वह भी संघ के अनुशासन, संघ की सादगी, उसको देखकर बहुत प्रभावित हुए थे।

पंजाब की बाढ़, हिमाचल-उत्तराखंड की आपदा, केरल के वायनाड की त्रासदी, हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचने वालों में से एक रहते हैं। कोरोना काल में तो पूरी दुनिया ने संघ के साहस और सेवा भाव का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा है।

100 वर्ष की इस यात्रा में संघ का एक बड़ा काम ये रहा है, उसने समाज के अलग-अलग वर्गों में आत्मबोध जगाया, स्वाभिमान जगाया और इसके लिए संघ देश के उन क्षेत्रों में भी कार्य करता रहा है, जो दुर्गम हैं, जहां पहुंचना सबसे कठिन है। हमारे देश में लगभग 10 करोड़ आदिवासी भाई-बहन हैं, जिनके कल्याण के लिए संघ लगातार प्रयासरत है। लंबे समय तक सरकारों ने उन्हें प्राथमिकता नहीं दी, लेकिन संघ ने उनकी संस्कृति, उनके पर्व, उत्सव, उनकी

भाषा और परंपराओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। सेवा भारती, विद्या भारती, एकल विद्यालय, वनवासी कल्याण आश्रम, आदिवासी समाज के सशक्तिकरण का स्तंभ बनकर के उभरे हैं। आदिवासी भाई-बहनों में जो आत्मविश्वास आया है, वह उनके जीवन को बदल रहा है।

संघ दशकों से आदिवासी परंपराओं, आदिवासी रीति-रिवाजों, आदिवासी मूल्यों को सहेजने संवारने में अपना सहयोग देता रहा है, अपना कर्तव्य निभा रहा है, उसकी तपस्या ने भारत की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने में बड़ी भूमिका निभाई है।

समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियाँ हैं, जो ऊंच-नीच की भावना है, जो कुप्रथाएं हैं, छुआछूत जैसी गंदगी भरी पड़ी है, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं। ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है। एक बार महात्मा गांधी जी वर्धा में संघ के शिविर में गए थे। उन्होंने भी संघ में समता, ममता, समरसता, समभाव, ममभाव, ये जो कुछ भी देखा, उसकी खुलकर तारीफ की थी और डॉक्टर साहब से लेकर आज तक संघ की हर महान विभूति ने, हर सर-संघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। परम पूज्य गुरु जी ने निरंतर 'न हिन्दू पतितो भवेत्' की भावना को आगे बढ़ाया। यानी, हर हिन्दू एक ही परिवार है। कोई भी हिन्दू कभी पतित या नीचा नहीं हो सकता। पूज्य बाला साहब देवरस जी के शब्द भी हम सबको याद हैं, वो कहते थे- छुआछूत अगर पाप नहीं, तो दुनिया में कोई पाप नहीं है! सरसंघचालक रहते हुए पूज्य रज्जू भैया जी और पूज्य सुदर्शन जी ने भी इसी भावना को आगे बढ़ाया। वर्तमान



सरसंघचालक आदरणीय मोहन भागवत जी ने भी समरसता के लिए समाज के सामने स्पष्ट लक्ष्य रखा है और गांव-गांव तक इस बात की ज्योत जगाई है, उन्होंने कहा-

एक कुआं, एक मंदिर और एक श्मशान, इसे लेकर संघ देश के कोने-कोने में गया है। कोई भेदभाव नहीं, कोई मतभेद नहीं, कोई मनभेद नहीं, यही समरसता का आधार है, यही सर्वसमावेशी समाज का संकल्प है और संघ इसी को निरंतर नई शक्ति दे रहा है, नई ऊर्जा दे रहा है।

जब 100 साल पहले संघ अस्तित्व में आया था, तो उस समय की आवश्यकताएं, उस समय के संघर्ष कुछ और थे। तब हमें सैकड़ों वर्षों की राजनीतिक गुलामी से मुक्ति पानी थी, अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करनी थी। लेकिन आज 100 वर्ष बाद, जब भारत विकसित होने की तरफ बढ़ रहा है, जब भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बनने जा रहा है, जब देश और देश का बहुत बड़ा गरीब वर्ग गरीबी को परास्त करके, गरीबी को पराजित करके आगे आ रहा है, जब हमारे युवाओं के लिए नए-नए सेक्टर में नए अवसर बन रहे हैं, जब ग्लोबल डिप्लोमेसी से क्लाइमेट पॉलिसीज तक, भारत विश्व में अपनी आवाज बुलंद कर रहा है। तब आज के समय की चुनौतियां अलग हैं, संघर्ष भी अलग हैं। दूसरे देशों पर आर्थिक निर्भरता, हमारी एकता को तोड़ने की साजिशें, डेमोग्राफी में बदलाव के षडयंत्र, एक प्रधानमंत्री के नाते मैं नम्रतापूर्वक कहूंगा कि मुझे बहुत संतोष है कि हमारी सरकार इन चुनौतियों से तेजी से निपट रही है। वहीं एक स्वयंसेवक के नाते मुझे ये भी खुशी है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने ना केवल इन

चुनौतियों की पहचान की है, बल्कि इन चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस रोडमैप भी बनाया है।

संघ के पंच परिवर्तन,

स्व बोध,

सामाजिक समरसता,

कुटुम्ब प्रबोधन,

नागरिक शिष्टाचार और

पर्यावरण,

ये संकल्प हर स्वयंसेवक के लिए देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को परास्त करने की बहुत बड़ी प्रेरणा हैं।

स्व बोध- यानी स्वयं का बोध, स्व बोध यानि गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर अपनी विरासत पर गर्व करना, स्वभाषा पर गर्व करना, स्व बोध यानि स्वदेशी, आत्मनिर्भर होना और आत्मनिर्भर ये विकल्प के तौर पर नहीं है, ये अनिवार्यता के रूप में है। स्वदेशी के मूल मंत्र को समाज का संकल्प बनाना है। वोकल फॉर लोकल के अभियान को, उसकी सफलता के लिए, वोकल फॉर लोकल, ये हमारा निरंतर एक नई ऊर्जा प्रदान करने वाला घोष वाक्य होना चाहिए, प्रयास होना चाहिए।

संघ ने सामाजिक समरसता को हमेशा अपनी प्राथमिकता बनाए रखा है। सामाजिक समरसता यानी, वंचित को वरीयता देकर सामाजिक न्याय की स्थापना करना, देश की एकता को बढ़ाना। आज राष्ट्र के सामने ऐसे संकट खड़े हो रहे हैं, जो हमारी एकता, हमारी संस्कृति और हमारी सुरक्षा पर सीधा प्रहार कर रहे हैं। अलगाववादी सोच, क्षेत्रवाद, कभी जाति, कभी भाषा को लेकर विवाद, कभी बाहरी शक्तियों द्वारा भड़काई गई विभाजनकारी प्रवृत्तियाँ, ये सब अनगिनत चुनौतियाँ हमारे सामने खड़ी हैं। भारत की आत्मा हमेशा विविधता में एकता ही रही है। अगर इस सूत्र को तोड़ा गया, तो भारत की शक्ति भी कमजोर होगी। और इसलिए हमें इस सूत्र को निरंतर जीना है, उसे मजबूती देनी है।

सामाजिक समरसता को आज डेमोग्राफी में बदलाव के षडयंत्र से, घुसपैठियों से भी बड़ी चुनौती मिल रही है। ये हमारी आंतरिक सुरक्षा और भविष्य की शांति से भी जुड़ा हुआ प्रश्न है। और इसलिए डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की है। हमें इस चुनौती से सतर्क रहना है, इसका डटकर मुकाबला करना है।

कुटुम्ब प्रबोधन- समय की मांग है, जो समाज शास्त्र के सदियों से चली आई पंडितों की भाषा है, उनका कहना है, हजारों साल तक भारत के जीवन में ये जो प्राण शक्ति रही है, उसके अंदर एक कारण उसकी परिवार संस्था है। भारतीय समाज व्यवस्था की सबसे मजबूत इकाई अगर कोई है, तो भारतीय समाज में पनपी

हुई एक मजबूत परिवार व्यवस्था है। कुटुम्ब प्रबोधन यानी, उस परिवार संस्कृति का पोषण, जो भारतीय सभ्यता का आधार है, जो भारतीय संस्कृति से प्रेरित है, जो जड़ों से जुड़े हैं। परिवार के मूल्य, बुजुर्गों का सम्मान, नारी शक्ति का आदर, नौजवानों में संस्कार, अपने परिवार के प्रति दायित्वों को निभाना, उसे समझना, उस दिशा में परिवार को, समाज को जागरूक करना बहुत ही आवश्यक है।

नागरिक शिष्टाचार- अर्थात् कर्तव्य की भावना, नागरिक कर्तव्य का बोध हर देशवासी में हो, स्वच्छता को बढ़ावा, देश की संपत्ति का सम्मान, नियमों और कानूनों का सम्मान, हमें इसे लेकर आगे बढ़ना है। हमारे संविधान की भावना है, नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करें, हमें संविधान की इसी भावना को निरंतर सशक्त करना है।

पर्यावरण की रक्षा- वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत जरूरी है। ये पूरी मानवता के भविष्य से जुड़ा विषय है। हमें इकोनॉमी के साथ ही इकोलॉजी की भी चिंता करनी है।

जल संरक्षण, ग्रीन एनर्जी, क्लीन एनर्जी, ये सारे अभियान इसी दिशा में हैं।

संघ के ये पंच परिवर्तन, ये वो साधन हैं, जो देश का सामर्थ्य बढ़ाएंगे, जो देश को विभिन्न चुनौतियों से निपटने में मदद करेंगे, जो 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का आधार होंगे।

2047 का भारत तत्व ज्ञान और विज्ञान, सेवा और समरसता से गढ़ा हुआ वैभवशाली भारत हो। यही संघ की दृष्टि है, यही स्वयंसेवकों की साधना है और यही संकल्प है।

संघ बना है, राष्ट्र के प्रति अटूट आस्था से। संघ चला है, राष्ट्र के प्रति अगाध सेवा के भाव से। संघ तपा है, त्याग और तपस्या की अग्नि में। संघ निखरा है, संस्कार और साधना के संगम से। संघ खड़ा है, राष्ट्रधर्म को जीवन का परम धर्म मानकर के, संघ जुड़ा है, भारत माता की सेवा के विराट स्वप्न से।

संघ का आदर्श है- संस्कृति की जड़ें गहरी और सशक्त हों।

संघ का प्रयास है- समाज में आत्मविश्वास और आत्म गौरव हो।

संघ का लक्ष्य है- हर हृदय में जनसेवा की ज्योति प्रज्वलित हो।

संघ का दृष्टिकोण है- भारतीय समाज सामाजिक न्याय का प्रतीक बने।

संघ का ध्येय है- विश्व मंच पर भारत की वाणी और भी प्रभावी बने।

संघ का संकल्प है- भारत का भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल बने।■

मध्यप्रदेश में निवेश, नवाचार और रोजगार के संकल्प का अभ्युदय



डॉ. मोहन यादव

मध्यप्रदेश अपनी स्थापना के 70 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। एक नवंबर 1956 को अस्तित्व में आये मध्यप्रदेश में विकास की नई यात्रा विगत दो दशकों से आरंभ हुई, जो प्रदेश को देश में अग्रणी राज्य बनाने की संभावनाओं तक पहुंच गई है। यह सुखद संयोग है कि देवउठनी ग्यारस के पावन अवसर पर राज्योत्सव का आयोजन किया। हमारे तीज, त्यौहार और परंपराएं हमारी संस्कृति का आधार हैं। उत्सव के आनंद से ही भविष्य निर्माण के भाव निर्मित होते हैं। प्रदेश में सभी त्यौहारों को व्यापक स्वरूप में मनाया जा रहा है। अपने त्यौहारों का सांस्कृतिक संदर्भ ही हमें पुरातन से नूतन की प्रेरणा देता है।

हमारे लिए गर्व की बात है कि भारत का हृदय मध्यप्रदेश वन, जल, अन्न, खनिज, शिल्प, कला, संस्कृति, उत्सव और परंपराओं से समृद्ध है। हमें मां नर्मदा, चंबल, पार्वती, क्षिप्रा नदियों का सन्निध्य और बाबा महाकाल का आशीर्वाद प्राप्त है। यह भगवान परशुराम की जन्मस्थली, भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली और आदि शंकराचार्य जी की तपोस्थली है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने चित्रकूट में लंबा समय व्यतीत किया है। इतिहास प्रसिद्ध राजा नल, भर्तृहरि, विक्रमादित्य की जन्म स्थली भी मध्यप्रदेश रही है। सम्राट विक्रमादित्य ने ही शकों के आतंक से भारत को मुक्त किया था। संसार की पहली वैज्ञानिक कालगणना “विक्रम संवत्” का आरंभ भी मध्यप्रदेश के उज्जैन से हुआ था।

हम अपने ऐतिहासिक गौरव की दिव्यता और प्राकृतिक भव्यता के साथ विरासत से विकास की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत को विश्व में सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए विकसित भारत निर्माण का संकल्प दिया है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हमारा देश विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। प्रधानमंत्री जी के इस संकल्प को साकार करने और विकसित भारत निर्माण के लिए मध्यप्रदेश में निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

चौवेति

30 | नवम्बर 2025

हमारे लिए गर्व की बात है कि भारत का हृदय मध्यप्रदेश वन, जल, अन्न, खनिज, शिल्प, कला, संस्कृति, उत्सव और परंपराओं से समृद्ध है। हमें मां नर्मदा, चंबल, पार्वती, क्षिप्रा नदियों का सन्निध्य और बाबा महाकाल का आशीर्वाद प्राप्त है। यह भगवान परशुराम की जन्मस्थली, भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली और आदि शंकराचार्य जी की तपोस्थली है।

प्रदेश में उद्योग वर्ष मनाने के साथ राज्योत्सव की थीम उद्योग और रोजगार रखी गई है। इसमें प्रदेश के सतत विकास, सांस्कृतिक समृद्धि और जनभागीदारी का भाव है।

यशस्वी प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हमें निवेश और औद्योगिक विकास की यात्रा को परिणाम में बदलने का अवसर प्राप्त हो रहा है। विविधता से समृद्ध मध्यप्रदेश के हर क्षेत्र की अपनी विशेषता, क्षमता और दक्षता है, जिसमें अनंत संभावनाएं हैं। इसी को केन्द्र में रखकर हमने प्रदेश में रीजनल इन्वेस्टर्स समिट का नवाचार किया। प्रदेश के हर क्षेत्र का कौशल और उद्योग इसमें शामिल हुआ है। व्यापार को सरल बनाने और निवेशकों से सीधे संवाद के लिए मार्च 2024 से उज्जैन से निवेश यात्रा शुरू की और फिर जबलपुर, ग्वालियर, सागर, रीवा, शहडोल, नर्मदापुरम, मुंबई, कोयंबटूर, बेंगलुरु, पुणे, दिल्ली, यूके, जर्मनी, जापान, दुबई तक इसे विस्तार दिया। विभिन्न सम्मेलनों, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय रोड-शो के माध्यम से मध्यप्रदेश के निवेश में कई गुना वृद्धि हुई है।

निवेशकों को एक सक्षम, सरल और सुरक्षित वातावरण प्रदान किया गया है। प्रदेश में इनोवेशन हब, स्टार्टअप पॉलिसी, फंडिंग सपोर्ट और इन्क्यूबेशन नेटवर्क स्थापित कर देश की स्टार्टअप क्रांति को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है।

मध्यप्रदेश ने पिछले एक वर्ष में औद्योगिक निवेश के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों ने प्रदेश में निवेश के प्रति गहरी रुचि दिखाई है। खनिज कॉन्क्लेव में प्रदेश को 56 हजार करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव मिले, जो खनिज नीति और प्रशासनिक सरलता का परिणाम हैं। आईटी पार्क, इलेक्ट्रॉनिक

निर्माण इकाइयां और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में भी निवेश को प्रोत्साहन मिला है।

प्रदेश एक ऐसे परिवर्तनकाल से गुजर रहा है जहां निवेश, नवाचार और रोजगार आधार स्तंभ हैं। लगभग दो वर्षों में प्रदेश ने उद्योग, कृषि, दुग्ध उत्पादन, पर्यावरण, ऊर्जा और सामाजिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियां अर्जित की हैं।

भारत के समग्र विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हमें गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी (GYAN) के सम्मान का मंत्र दिया है। विकास के इन आधार स्तंभ के अनुरूप प्रदेश विकास और कल्याण के लिए युवा शक्ति, गरीब कल्याण, किसान कल्याण और नारी सशक्तिकरण मिशन के तहत कार्य किया जा रहा है।

गरीब कल्याण मिशन में स्वरोजगार और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, आवास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की सुविधा आदि की दिशा में कार्य किया जा रहा है। मध्यप्रदेश कौशल विकास मिशन और स्टार्टअप नीति 2025 ने युवाओं को जॉब सीकर से जॉब क्रिएटर में परिवर्तित किया है। कौशल विकास मिशन के माध्यम से युवाओं को उद्योग-आधारित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। रोजगार मेले, अप्रेंटिसशिप कार्यक्रम और डिजिटल स्किल सर्टिफिकेशन जैसे प्रयास युवाओं को रोजगार से जोड़ रहे हैं। रोजगार सृजन हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। शासकीय और निजी क्षेत्रों में युवाओं के लिए स्थायी, कुशल और सम्मानजनक अवसर उपलब्ध किये जा रहे हैं। मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जिसने शासकीय भर्ती का कैलेण्डर जारी किया और उसके अनुरूप भर्ती प्रक्रिया भी आरंभ हो गई है।

कृषि क्षेत्र को नवाचार के साथ सशक्त बनाने

की दिशा में एक नई क्रांति का सूत्रपात हुआ है। प्रदेश सरकार ने ड्रोन आधारित फसल निरीक्षण, स्मार्ट सिंचाई प्रणाली और कृषि उत्पाद मूल्य संवर्धन पर विशेष फोकस किया है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना और मुख्यमंत्री खेत-तालाब योजना सहित अन्य प्रयासों से किसानों के लिए सिंचाई क्षेत्र बढ़ाने का लगातार प्रयत्न किया जा रहा है। केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना से प्रदेश के किसानों को सिंचाई और पानी की सुविधा व्यापक स्तर पर उपलब्ध होगी। प्रदेश में सिंचाई का रकबा 52 लाख हेक्टेयर से अधिक हो चुका है। इसे दोगुना करने का लक्ष्य है। आगामी 3 वर्षों में सिंचाई क्षेत्र का रकबा 100 लाख हेक्टेयर करने की योजना है। कृषि उपज का प्रत्यक्ष भुगतान, ऑनलाइन मंडी व्यवस्था और जैविक खेती के प्रोत्साहन ने अन्नदाताओं की आय में वृद्धि की है। मध्यप्रदेश गेहूं, सोयाबीन, चना और मसालों के उत्पादन में अग्रणी प्रदेश है।

महिला सशक्तिकरण को आर्थिक स्वावलंबन से जोड़ने की दिशा में नारी शक्ति मिशन परिवर्तनकारी सिद्ध हो रहा है। लाड़ली बहना योजना के माध्यम से लाखों महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा मिली है। महिला उद्यमिता नीति के तहत महिलाओं को लघु उद्योग, डेयरी, हस्तशिल्प और सेवा क्षेत्र में अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। महिलाओं द्वारा संचालित स्व-सहायता समूह को वित्तीय सहायता और बाजार उपलब्ध कराया जा रहा है। यह मिशन नारी शक्ति ही नहीं बल्कि नये भारत की आधारशिला है।

गौ-धन हमारी अर्थव्यवस्था का स्थायी स्तंभ बने इसके लिए हमने गौ-संवर्धन और दुग्ध उत्पादन को आर्थिक नवाचार का केंद्र बनाया है। मुख्यमंत्री गौ-संवर्धन मिशन के तहत प्रदेश भर में गौ-अभयारण्य और गौ-सेवा केंद्रों की स्थापना की गई है। लगभग दो वर्षों में प्रदेश ने दुग्ध उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि हासिल की है।

प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन और प्रदेशवासियों के सहयोग और संबल से कल्याणकारी नीतियों और निर्णयों को अमल में लाने में सफलता प्राप्त हुई है। मध्यप्रदेश की स्वर्णिम यात्रा सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के साथ आगे बढ़ रही है। गरीब के चेहरे पर मुस्कान, किसान की खुशहाली, नारी का सम्मान और युवाओं का उज्ज्वल भविष्य हमारा संकल्प भी है और लक्ष्य भी। आइये, हम सब मिलकर समग्र विकास के साथ आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनाएं और विकसित भारत के निर्माण में सहभागी बनें।

प्रदेशवासियों को मध्यप्रदेश के 70 वें स्थापना दिवस की मंगलकामनाएं...।

(लेखक, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

सरदार पटेल एकता, दृढ़ता और राष्ट्रनिर्माण के प्रतीक- डॉ. मोहन यादव



- सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत माता की सेवा के भाव के साथ वर्तमान भारत की इबारत लिखी।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अतीत की गलतियों को सुधारने का कार्य कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने एकता परेड कार्यक्रम में राष्ट्र को संबोधित किया, तो ऐसा लगा मानो सरदार वल्लभभाई पटेल से लेकर आज के भारत तक की पूरी यात्रा उनके शब्दों में जीवंत हो उठी हो। सरदार पटेल ने केवल देश को आजादी दिलाने में भूमिका नहीं निभाई, बल्कि उन्होंने विभिन्न रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर आधुनिक भारत का नक्शा तैयार किया। उन्होंने अंग्रेजों की सार्वभौम सत्ता के बाद आने वाली चुनौतियों का समाधान पहले से ही खोज लिया था। स्वतंत्रता के संघर्ष के बीच, जब देश विभाजन की भीषण पीड़ा से गुजर रहा था, तब भी उन्होंने अटूट विश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ कहा कि “मुझे भारत माता की सेवा करनी है।” सरदार पटेल ने जो ठान लिया, उसे पूरा करके दिखाया। वे केवल नीति निर्माता नहीं, बल्कि भारत की एकता के शिल्पकार थे। सरदार पटेल ने पंडित नेहरू जी को कई बार अपनी असहमति और सुझाव स्पष्ट रूप से दिए थे। कश्मीर मुद्दे पर वे सीधी और दो-टूक बातचीत के पक्षधर थे, जबकि नेहरू जी ने इस विषय को संयुक्त राष्ट्र में ले जाकर एक अलग राह चुनी थी। भाजपा उन सभी को स्मरण करती है जिन्होंने राष्ट्र के लिए कार्य किया।

प्रधानमंत्री मोदी जी का यह दृष्टिकोण है कि महापुरुष किसी दल या विचारधारा की सीमाओं में नहीं बंधते। भारतीय जनता पार्टी ने सदा उन सभी महान व्यक्तित्वों को सम्मान दिया है जिन्होंने देश के लिए उल्लेखनीय कार्य किया, चाहे वे सरदार पटेल हों या पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय प्रणब मुखर्जी। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री

संग्रहालय का निर्माण कराया गया है, जहाँ सभी प्रधानमंत्रियों के योगदान को ससम्मान प्रदर्शित किया गया है। “सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास” की भावना के कारण ही भाजपा आज दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के रूप में उभरी है। ■

सरदार पटेल राष्ट्रभक्ति के अद्वितीय उदाहरण - हेमंत खण्डेलवाल

- सरदार वल्लभ भाई पटेल की सूझबूझ नहीं होती तो हमारी आजादी अधूरी रहती।
- हम मजबूत और एक रहेंगे तो प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में बुलंदियों पर पहुंचेंगे।
- एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को साकार कर रहे मोदी जी।

सरदार पटेल का जीवन कर्तव्य, सेवा और राष्ट्रभक्ति का अद्वितीय उदाहरण है। वे केवल भारत के पहले उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के वास्तुकार थे। उन्होंने प्रशासनिक कुशलता और दृढ़ नेतृत्व से भारतीय लोकतंत्र की मजबूत नींव रखी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आज सरदार पटेल के “एक भारत, श्रेष्ठ भारत” के विचारों को धरातल पर उतारा जा रहा है। यदि हम सब उनके बताए मार्ग पर चलकर एकता, परिश्रम और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखकर काम करेंगे तो भारत न केवल सशक्त बनेगा, बल्कि 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाएगा। ■



‘वन्देमातरम्’ की भावना भारत की अमर चेतना से जुड़ी है

- महापर्व संस्कृति, प्रकृति और समाज के बीच गहरी एकता का प्रतिबिंब है।
- मैंने खाने के तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कमी लाने का आग्रह किया था और लोगों ने इस पर बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है।
- बेंगलुरु स्थित CRPF के डॉन ब्रीडिंग एंड ट्रेनिंग स्कूल में मॉड्रैल्स, मुथोल हाउंड, कोम्बाई और पांडिकोना जैसे भारतीय नस्लों के डॉग्स को प्रशिक्षित किया जा रहा है।
- सरदार पटेल कानून के क्षेत्र में और भी अधिक ख्याति अर्जित कर सकते थे, लेकिन गांधीजी से प्रेरित होकर उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से स्वतंत्रता आंदोलन के लिए समर्पित कर दिया।
- “खेड़ा सत्याग्रह” से लेकर “बोरसद सत्याग्रह” तक, अनेक आंदोलनों में सरदार पटेल के योगदान को आज भी याद किया जाता है।
- कोरापुट कॉफी का स्वाद अदभुत है, और केवल इतना ही नहीं, स्वाद के अलावा, कॉफी की खेती ओडिशा के लोगों को भी लाभ पहुँचा रही है।
- ‘वन्देमातरम्’ - इस एक शब्द में कितने ही भाव हैं, कितनी ऊर्जाएं हैं। सहज भाव में ये हमें माँ-भारती के वात्सल्य का अनुभव कराता है।
- ‘वन्देमातरम् गीत’ की रचना बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने सदियों की गुलामी से शिथिल हो चुके भारत में नए प्राण फूंकने के लिए की थी।
- गुलामी के दौर में और आजादी के बाद भी, संस्कृत लगातार उपेक्षा का शिकार रही है।



त्योहारों के इस अवसर पर मैंने आप सभी के नाम एक पत्र लिखकर अपनी भावनाएँ साझा की थी। मैंने चिट्ठी में देश की उन उपलब्धियों के बारे में बताया था जिससे इस बार त्योहारों की रौनक पहले से ज्यादा हो गई है। मेरी चिट्ठी के जवाब में मुझे देश के अनेक नागरिकों ने अपने संदेश भेजे हैं। वाकई ‘ऑपरेशन सिंदूर’ ने हर भारतीय को गर्व से भर दिया है।

- कोमरम भीम केवल 40 वर्ष ही जीवित रहे, लेकिन उन्होंने अनगिनत लोगों, विशेषकर आदिवासी समाज के हृदय में अमिट छाप छोड़ी।

पूरे देश में इस समय त्योहारों का उल्लास है। हम सबने कुछ दिन पहले दीपावली मनाई है और अभी बड़ी संख्या में लोग छठ पूजा में व्यस्त हैं। घरों में ठेकुआ बनाया जा रहा है। जगह-जगह घाट सज रहे हैं। बाजारों में रौनक है। हर तरफ श्रद्धा, अपनापन और परंपरा का संगम दिख रहा है। छठ का व्रत रखने वाली महिलाएँ जिस समर्पण और निष्ठा से इस पर्व की तैयारी करती हैं वो अपने आप में बहुत प्रेरणादायक है।

छठ का महापर्व संस्कृति, प्रकृति और समाज

के बीच की गहरी एकता का प्रतिबिंब है। छठ के घाटों पर समाज का हर वर्ग एक साथ खड़ा होता है। ये दृश्य भारत की सामाजिक एकता का सबसे सुंदर उदाहरण है। आप देश और दुनिया के किसी भी कोने में हों, यदि मौका मिले, तो, छठ उत्सव में जरूर हिस्सा लें। एक अनोखे अनुभव को खुद महसूस करें।

त्योहारों के इस अवसर पर मैंने आप सभी के नाम एक पत्र लिखकर अपनी भावनाएँ साझा की थी। मैंने चिट्ठी में देश की उन उपलब्धियों के बारे में बताया था जिससे इस बार त्योहारों की रौनक पहले से ज्यादा हो गई है। मेरी चिट्ठी के जवाब में मुझे देश के अनेक नागरिकों ने अपने संदेश भेजे हैं। वाकई ‘ऑपरेशन सिंदूर’ ने हर भारतीय को गर्व से भर दिया है। इस बार उन इलाकों में भी खुशियों के दीप जलाए गए जहाँ



कभी माओवादी आतंक का अंधेरा छाया रहता था। लोग उस माओवादी आतंक का जड़ से खात्मा चाहते हैं जिसने उनके बच्चों का भविष्य संकट में डाल दिया था। GST बचत उत्सव को लेकर भी लोगों में बहुत उत्साह है। इस बार त्योहारों में एक और सुखद बात देखने को मिली। बाजारों में स्वदेशी सामानों की खरीदारी जबरदस्त तरीके से बढ़ी है। लोगों ने मुझे जो संदेश भेजे हैं, उसमें बताया है कि इस बार उन्होंने किन स्वदेशी चीजों की खरीदारी की है।

मैंने अपने पत्र में खाने के तेल में 10 प्रतिशत की कमी करने का भी आग्रह किया था, इस पर भी लोगों ने बहुत सकारात्मक रुख दिखाया है।

स्वच्छता और स्वच्छता के प्रयास, इस पर भी मुझे ढेर सारे संदेश मिले हैं। मैं आपसे देश के अलग-अलग शहरों की ऐसी गाथाएं साझा करना चाहता हूँ जो बहुत प्रेरणादायक हैं। छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर में शहर से प्लास्टिक कचरा साफ करने के लिए एक अनोखी पहल की गई है। अम्बिकापुर में Garbage Cafe चलाए जा रहे हैं। ये ऐसे cafe हैं, जहाँ प्लास्टिक कचरा लेकर जाने पर भरपेट खाना खिलाया जाता है। अगर कोई व्यक्ति एक किलो प्लास्टिक लेकर जाए उसे दोपहर या रात का खाना मिलता है और कोई आधा किलो प्लास्टिक ले जाए तो नाश्ता मिल जाता है। ये cafe अम्बिकापुर म्युनिसिपल कॉरपोरेशन चलाता है।

इसी तरह का कमाल बेंगलुरु में इंजीनियर कपिल शर्मा जी ने किया है। बेंगलुरु को झीलों का शहर कहा जाता है और कपिल जी ने यहां झीलों को नया जीवन देने का अभियान शुरू किया है। कपिल जी की टीम ने बेंगलुरु और आसपास के इलाकों में 40 कुओं और 6 झीलों को फिर से जिंदा कर दिया है। खास बात तो ये है कि उन्होंने अपने mission में corporates और स्थानीय लोगों को भी जोड़ा है। उनकी

संस्था पेड़ लगाने के अभियान से भी जुड़ी है।

अम्बिकापुर और बेंगलुरु, ये प्रेरक उदाहरण बताते हैं कि जब ठान लिया जाए तो बदलाव भी आकर के ही रहता है।

बदलाव के एक और प्रयास का उदाहरण, मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। आप सब जानते हैं जैसे पहाड़ों पर और मैदानी इलाकों में जंगल होते हैं ये जंगल मिट्टी को बांधे रहते हैं, कुछ वैसी ही अहमियत समंदर के किनारे mangrove की होती है। Mangrove समुद्र के खारे पानी और दलदली जमीन में उगते हैं और समुद्री eco-system का एक अहम हिस्सा होते हैं। सुनामी या cyclone जैसी आपदा आने पर ये Mangrove बहुत मददगार साबित होते हैं।

गुजरात के वन विभाग ने Mangrove के इस महत्व को समझते हुए खास मुहिम चलाई हुई है। 5 साल पहले वन विभाग की टीमों ने अहमदाबाद के नजदीक धोलेरा में Mangrove लगाने का काम शुरू किया था, और आज, धोलेरा तट पर साढ़े तीन हजार हेक्टेयर में Mangrove फैल चुके हैं। इन Mangrove

का असर आज पूरे क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। वहाँ के eco-system में dolphins की संख्या बढ़ गई है। केकड़े और दूसरे जलीय जीव भी पहले से ज्यादा हो गए हैं। यही नहीं, अब यहाँ प्रवासी पक्षी भी काफी संख्या में आ रहे हैं। इससे वहाँ के पर्यावरण पर अच्छा प्रभाव तो पड़ा ही है, धोलेरा के मछली पालकों को भी फायदा हो रहा है।

धोलेरा के अलावा गुजरात के कच्छ में भी इन दिनों Mangrove Plantation बहुत जोरों पर हो रहा है, वहाँ कोरी क्रीक में, 'Mangrove Learning Centre' भी बनाया गया है।

पेड़-पौधों की, वृक्षों की यही तो खासियत होती है। जगह चाहे कोई भी हो, वो हर जीव मात्र की बेहतरी के लिए काम आते हैं। इसीलिए तो हमारे ग्रन्थों में कहा गया है -

**धन्या महीरूहा येभ्यो,
निराशां यान्ति नार्थिनः॥**

अर्थात्, वो वृक्ष और वनस्पतियाँ धन्य हैं, जो किसी को भी निराश नहीं करते। हमें भी चाहिए, हम जिस भी इलाके में रहते हैं, पेड़ अवश्य लगाएं। 'एक पेड़ माँ के नाम' के अभियान को हमें और आगे बढ़ाना है।

क्या आप जानते हैं कि 'मन की बात' में हम जिन विषयों पर चर्चा करते हैं, उनमें मेरे लिए सबसे संतोष की बात क्या होगी? तो मैं इस बारे में यही कहूँगा कि 'मन की बात' में हम जिन विषयों की चर्चा करते हैं, उनसे लोगों को समाज के लिए कुछ अच्छा, कुछ Innovative करने की प्रेरणा मिलती है। इससे हमारी संस्कृति, हमारे देश के कई पहलू उभरकर सामने आते हैं।

आपमें से बहुतों को याद होगा कि करीब पाँच वर्ष पहले मैंने इस कार्यक्रम में भारतीय नस्ल के 'श्वान' यानि dogs की चर्चा की थी। मैंने देशवासियों के साथ ही अपने सुरक्षा बलों से आग्रह किया था कि वे भारतीय नस्ल



के Dogs को अपनाएं, क्योंकि वो हमारे परिवेश और परिस्थितियों के अनुरूप ज्यादा आसानी से ढल जाते हैं। मुझे ये बताते हुए खुशी हो रही है कि हमारी सुरक्षा एजेंसियों ने इस दिशा में काफी सराहनीय प्रयास किए हैं। BSF और CRPF ने अपने दस्तों में भारतीय नस्ल के Dogs की संख्या बढ़ाई है। Dogs की training के लिए BSF का National Training Centre ग्वालियर के टेकनपुर में है। यहाँ उत्तर प्रदेश के रामपुर हाउंड, कर्नाटक और महाराष्ट्र के मुधोल हाउंड इस पर विशेष रूप से focus किया जा रहा है। इस Centre पर trainers technology और innovation की मदद से श्वानों को बेहतर तरीके से train कर रहे हैं। भारतीय नस्ल वाले Dogs के लिए Training Manuals को फिर से लिखा गया है ताकि उनकी unique strengths को सामने लाया जा सके। बेंगलुरु में CRPF के Dog Breeding and training school में मोग्रेल्स, मुधोल हाउंड, कोम्बाई और पांडिकोना जैसे भारतीय श्वानों को train किया जा रहा है।

पिछले वर्ष लखनऊ में All India Police Duty Meet का आयोजन हुआ था। उस समय, रिया नाम की श्वान ने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा था। यह एक मुधोल हाउंड है जिसे BSF ने Train किया है। रिया ने यहाँ कई Foreign Breeds को पछाड़ते हुए पहला पुरस्कार जीता।

अब BSF ने अपने Dogs को विदेशी नामों के बजाय भारतीय नाम देने की परंपरा शुरू की है। हमारे यहाँ के देशी श्वान ने अद्भुत साहस भी दिखाया है। पिछले वर्ष, छत्तीसगढ़ के माओवाद से प्रभावित रहे क्षेत्र में गश्त के दौरान CRPF के एक देशी श्वान ने 8 किलोग्राम विस्फोटक का पता लगाया था।



मुझे 31 October का भी इंतजार है। यह लौहपुरुष सरदार पटेल की जयंती का दिन है। इस अवसर पर हर वर्ष गुजरात के एकता नगर में 'Statue of Unity' के समीप विशेष समारोह आयोजित किए जाते हैं। यहीं पर एकता दिवस परेड भी होती है और इस परेड में फिर से भारतीय श्वानों के सामर्थ्य का प्रदर्शन होगा।

सरदार पटेल जी की 150 वीं जयंती का दिन पूरे देश के लिए एक बहुत विशेष अवसर है। सरदार पटेल आधुनिक काल में राष्ट्र की सबसे महान विभूतियों में से एक रहे हैं। उनके विराट व्यक्तित्व में अनेक गुण एक साथ समाहित थे। वे एक अत्यंत प्रतिभाशाली छात्र रहे। उन्होंने भारत और ब्रिटेन दोनों ही जगह पढ़ाई में बेहतरीन प्रदर्शन किया। वे अपने समय के सबसे सफल वकीलों में से भी एक थे। वो वकालत में और नाम कमा सकते थे, लेकिन गांधी जी से प्रेरित होकर उन्होंने खुद को स्वतंत्रता आंदोलन में पूरी तरह समर्पित कर दिया। 'खेड़ा सत्याग्रह' से लेकर 'बोरसद सत्याग्रह' तक अनेक आंदोलनों में उनके योगदान को आज भी याद किया जाता

है। अहमदाबाद Municipality के प्रमुख के रूप में उनका कार्यकाल भी ऐतिहासिक रहा था। उन्होंने स्वच्छता और सुशासन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के रूप में उनके योगदान के लिए हम सभी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

सरदार पटेल ने भारत के bureaucratic framework की एक मजबूत नींव भी रखी। देश की एकता और अखंडता के लिए उन्होंने अद्वितीय प्रयास किए। 31 अक्टूबर को सरदार साहब की जयंती देश-भर में होने वाली Run For Unity में आप भी जरूर शामिल हों - और अकेले नहीं सब को साथ लेकर के शामिल हों। एक प्रकार से युवा चेतना का ये अवसर बनना चाहिए एकता की दौड़, एकता को मजबूती देगी। ये उस महान विभूति के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है, जिन्होंने भारत को एकता के सूत्र में पिरोया था।

चाय के साथ मेरा जुड़ाव तो आप सभी जानते ही हैं, लेकिन आज मैंने सोचा कि 'मन की बात' में क्यों न कॉफी पर चर्चा की जाए। आपको याद होगा, बीते साल हमने 'मन की बात' में अराकू कॉफी पर बात की थी। कुछ समय पहले ओडिशा के कई लोगों ने मुझसे कोरापुट कॉफी को लेकर भी अपनी भावनाएं साझा की। उन्होंने मुझे पत्र लिखकर कहा कि 'मन की बात' में कोरापुट कॉफी पर भी चर्चा हो।

मुझे बताया गया है कि कोरापुट कॉफी का स्वाद गजब होता है, और इतना ही नहीं, स्वाद तो स्वाद, कॉफी की खेती भी लोगों को फायदा पहुंचा रही है। कोरापुट में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अपने passion की वजह से कॉफी की खेती कर रहे हैं। corporate world में अच्छी-खासी नौकरी करते थे, लेकिन वो कॉफी को इतना पसंद करते हैं कि इस field में आ गए और अब सफलता से इसमें काम कर रहे





‘मन की बात’ में लघु भारत के दर्शन - डॉ. मोहन यादव



- प्रधानमंत्री जी ने अपने कार्यों से देश में सकारात्मक ऊर्जा की धारा का प्रवाह किया।
- ‘मन की बात’ कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी प्रेरक प्रसंगों से हम सभी को प्रेरित कर रहे हैं।
- हमारे त्योहार और विरासत समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं।
- भोपाल में आयोजित तीन दिवसीय स्थापना दिवस कार्यक्रम में सभी सहभागी बनें।
- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ‘‘मन की बात’’ कार्यक्रम सुनने के बाद लोगों को स्वदेशी अपनाने की शपथ दिलाई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की ‘मन की बात’ कार्यक्रम में भारत के सभी क्षेत्रों की बातों का उल्लेख होता है, जिससे लघु भारत का दर्शन हो जाता है। ‘मन की बात’ से हम सभी देशवासियों को पता चलता

है कि आने वाले समय में हमें किन बातों से प्रेरणा लेनी चाहिए, उनमें हमारी क्या भूमिका होनी चाहिए। प्रधानमंत्री जी ने खेलने वाले बच्चों द्वारा देव भाषा संस्कृति के माध्यम से अपने भाव को अभिव्यक्त करने की बात का उल्लेख किया है। भारत की कॉफी जैसे उत्पाद का भी जिक्र किया है। इसके साथ ही आने वाले नवंबर माह में वंदे मातरम के रचयिता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की जयंती और 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती मनाकर उनके योगदान को याद करना है और उसे लोगों तक पहुंचाना है।

हमारे त्योहार और विरासत समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं। प्रधानमंत्री जी ने



पूर्वांचल के सबसे बड़े पर्व छठ पर्व का जिक्र किया है। यह पर्व हम सभी को अपनी सनातन संस्कृति को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देने के साथ एकजुटता का भाव पैदा कराते हैं। यह पर्व हमें सनातन से जोड़ने के साथ संस्कृति के संरक्षण की प्रेरणा देता है।

देश के पहले उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वीं जयंती गुजरात के केवड़िया में मनाई जाएगी, जिसमें मध्यप्रदेश के युवा भी शामिल होंगे। केवड़िया को जिस प्रकार से एक बड़े पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है, वह वाकई अनुकरणीय है। प्रधानमंत्री जी ने केवड़िया के माध्यम से लोगों को अपनी संस्कृति से जोड़ने के साथ पर्यटन और रोजगार से भी जोड़ने का अद्भुत कार्य किया है।

मध्यप्रदेश का स्थापना दिवस समारोह 01 से 03 नवंबर तक भोपाल के लाल परेड मैदान में आयोजित किया जा रहा है। 02 और 03 नवंबर को सम्राट विक्रमादित्य के महानाट्य का मंचन किया जाएगा। सम्राट विक्रमादित्य ने दो हजार साल पहले अखंड भारत के राज्यों को स्वतंत्र कराकर कुशल शासक होने का परिचय दिया था, जो आज भी सुशासन के लिए सर्वोच्च प्रतिमान माना जाता है। ■

हैं। ऐसी कई महिलाएं भी हैं, जिनके जीवन में कॉफी से सुखद बदलाव हुआ है। कॉफी से उन्हें सम्मान और समृद्धि, दोनों हासिल हुई है। सच ही कहा गया है-

कोरापुट कॉफी अत्यंत सुस्वादु।

एहा ओडिशा गौरव।

Koraput Coffee is truly delectable!
This indeed is the pride of Odisha!

दुनिया-भर में भारत की कॉफी बहुत लोकप्रिय हो रही है। चाहे कर्नाटका में चिकमंगलुरु, कुर्ग और हासन हो। तमिलनाडु में पुलनी, शेवरॉय, नीलगिरी और अन्नामलाई के इलाके हों, कर्नाटक- तमिलनाडु सीमा पर बिलिगिरि क्षेत्र हो या फिर केरला में वायनाड, त्रावणकोर और मालाबार के इलाके - भारत की कॉफी की diversity देखते ही बनती है। हमारा

north-east भी coffee cultivation में आगे बढ़ रहा है। इससे भारतीय कॉफी की पहचान दुनिया-भर में और मजबूत हो रही है- तभी तो कॉफी को पसंद करने वाले कहते हैं- India's coffee is coffee at its finest. It is brewed in India and loved by the World.

अब ‘मन की बात’ में एक ऐसे विषय की



कार्यकर्ता भाव जाग्रत रहे - हेमंत खण्डेलवाल



- प्रधानमंत्री जी के 'मन की बात' कार्यक्रम में हर नागरिक के मन की बात होती है।
- सितंबर में मध्यप्रदेश के 82 प्रतिशत बूथों पर सुनी गई 'मन की बात', इसे 100 प्रतिशत तक ले जाएंगे।
- कांग्रेस ने देश-प्रदेश में 50 वर्षों तक शासन किया, लेकिन गरीबों का हित नहीं किया।
- मुख्यमंत्री एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने घरों में चिपकाए स्टीकर, दिलाई स्वदेशी अपनाने की शपथ।

मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि मैं ऐसे गांव व क्षेत्र में आया हूँ, जहाँ जनसंघ के जमाने से हमारी विचारधारा और पार्टी बहुत मजबूत स्थिति में रही है। आज भी भाजपा संगठन मध्यप्रदेश में बहुत मजबूत स्थिति में है। संगठन की मजबूती का पूरा श्रेय कार्यकर्ताओं को जाता है। भाजपा में हम किसी भी पद पर रहें, लेकिन हमारे अंदर कार्यकर्ता भाव हमेशा जाग्रत रहना चाहिए। पार्टी में दायित्व बदलते रहते हैं, लेकिन कार्यकर्ता भाव रहता है, तो हम संगठन को और अधिक ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 'मन की बात' कार्यक्रम में ऐसे सभी विषयों पर बात करते हैं, जो आम लोगों से जुड़ी होती हैं। प्रधानमंत्री जी ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वीं जयंती और भगवान बिरसा मुंडा की जयंती



का जिक्र किया है। मैं समझता हूँ कि मन की बात कार्यक्रम में देश के हर नागरिक के 'मन की बात' हो जाती है। मध्यप्रदेश में 'मन की बात' कार्यक्रम बहुत प्रभावी ढंग से सुना जा रहा है। इस वर्ष सितंबर माह में मध्यप्रदेश के 82 प्रतिशत बूथों पर मन की बात कार्यक्रम को सुना गया, जो देश के बड़े राज्यों में सबसे अधिक है। इस कार्यक्रम को भाजपा संगठन 100 प्रतिशत बूथ तक ले जाने का लक्ष्य लेकर कार्य कर रहा है।

देश की आजादी के बाद देश और मध्यप्रदेश में लगभग 50 वर्षों तक शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी ने कभी गरीबों के हक और भलाई के लिए कार्य नहीं किया। कांग्रेस पार्टी और उसके नेता सिर्फ वोटों की राजनीति करते रहे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार गरीबों के साथ सभी समाज वर्ग के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री जी गरीबों के कल्याण को ध्यान में रखकर जनहितैषी योजनाएं बनाकर लोगों की गरीबी दूर कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार प्रदेश में औद्योगीकरण करके लोगों को रोजगार देने का कार्य कर रही है। उद्योगों की स्थापना से जहाँ मध्यप्रदेश में रोजगार के अवसर पैदा होंगे, वहीं लोगों की आय में वृद्धि होगी और मध्यप्रदेश आत्मनिर्भर बनेगा।

'मन की बात' कार्यक्रम सुनने के बाद लोगों को स्वदेशी अपनाने की शपथ दिलाई। तत्पश्चात घरों और दुकानों पर स्वदेशी अपनाने के स्टीकर चिपकाकर लोगों को स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने की अपील की। ■

बात, जो हम सबके दिलों के बेहद करीब है। ये विषय है हमारे राष्ट्र गीत का - भारत का राष्ट्र गीत यानी 'वन्देमातरम्'। एक ऐसा गीत, जिसका पहला शब्द ही हमारे हृदय में भावनाओं का उफान ला देता है। 'वन्देमातरम्' इस एक शब्द में कितने ही भाव हैं, कितनी ऊर्जाएँ हैं। सहज भाव में ये हमें माँ-भारती के वात्सल्य का अनुभव कराता है। यही हमें माँ-भारती की संतानों के रूप में अपने दायित्वों का बोध कराता है। अगर कठिनाई का समय होता है तो 'वन्देमातरम्' का उद्घोष 140 करोड़ भारतीयों को एकता की ऊर्जा से भर देता है।

राष्ट्रभक्ति, माँ-भारती से प्रेम, यह अगर शब्दों से परे की भावना है तो वन्देमातरम् उस अमूर्त भावना को साकार स्वर देने वाला गीत है। इसकी रचना बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी ने सदियों की गुलामी से शिथिल हो चुके भारत में नए प्राण फूँकने के लिए की थी। 'वन्देमातरम्' भले ही 19 वीं शताब्दी में लिखा गया था लेकिन इसकी भावना भारत की हजारों वर्ष पुरानी अमर चेतना से जुड़ी थी। वेदों ने जिस भाव को

“माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः”

(Earth is the mother and I am her child)

कहकर भारतीय सभ्यता की नींव रखी थी। बंकिमचंद्र जी ने वन्देमातरम् लिखकर मातृभूमि और उसकी संतानों के उसी रिश्ते को भाव विश्व में एक मंत्र के रूप में बांध दिया था।

आप सोच रहे होंगे कि मैं अचानक से वन्देमातरम् की इतनी बातें क्यों कर रहा हूँ। दरअसल कुछ ही दिनों बाद, 7 नवंबर को हम वन्देमातरम् के 150 वें वर्ष के उत्सव में प्रवेश करने वाले हैं। 150 वर्ष पूर्व 'वन्देमातरम्' की रचना हुई थी और 1896 (अठ्ठारह सौ छियानवे) में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने पहली बार इसे गाया था।

'वन्देमातरम्' के गान में करोड़ों देशवासियों ने हमेशा राष्ट्र प्रेम के अपार उफान को महसूस किया है। हमारी पीढ़ियों ने 'वन्देमातरम्' के शब्दों में भारत के एक जीवंत और भव्य स्वरूप के दर्शन किए हैं।

**सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्!**

वंदे मातरम्!

हमें ऐसा ही भारत बनाना है। वन्देमातरम् हमारे इन प्रयासों में हमेशा हमारी प्रेरणा बनेगा। इसलिए, हमें वन्देमातरम् के 150 वें वर्ष को भी यादगार बनाना है। आने वाली पीढ़ी के लिए ये संस्कार सरिता को हमें आगे बढ़ाना है। आने वाले समय में 'वन्देमातरम्' से जुड़े कई कार्यक्रम होंगे, देश में कई आयोजन होंगे। हम

सब देशवासी 'वन्देमातरम्' के गौरवगान के लिए स्वतः स्फूर्त भावना से भी प्रयास करें। आप मुझे अपने सुझाव #VandeMatram150 के साथ जरूर भेजिए। आपके सुझावों का इंतजार रहेगा और हम सब इस अवसर को ऐतिहासिक बनाने के लिए काम करेंगे।

संस्कृत का नाम सुनते ही हमारे मन मस्तिष्क में आता है - हमारे 'धर्मग्रंथ', 'वेद', 'उपनिषद', 'पुराण', शास्त्र, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म और दर्शन। लेकिन एक समय, इन सबके साथ-साथ 'संस्कृत' बातचीत की भी भाषा थी। उस युग में अध्ययन और शोध संस्कृत में ही किये जाते थे। नाट्य मंचन भी संस्कृत में होते थे। लेकिन दुर्भाग्य से गुलामी के कालखंड में भी और आजादी के बाद भी संस्कृत लगातार उपेक्षा का शिकार हुई। इस वजह से युवा-पीढ़ियों में संस्कृत के प्रति आकर्षण भी कम होता चला गया। लेकिन अब समय बदल रहा है, तो संस्कृत का भी समय बदल रहा है। संस्कृति और Social Media की दुनिया ने संस्कृत को नई प्राणवायु दे दी है। इन दिनों कई युवा संस्कृत को लेकर बहुत रोचक काम कर रहे हैं। आप Social Media पर जाएंगे तो आपको ऐसी कई Reels दिखेंगी जहां कई युवा संस्कृत में, और संस्कृत के बारे में बात करते दिखाई देंगे। कई लोग तो अपने Social Media Channel के जरिए संस्कृत सिखाते भी हैं। ऐसे ही एक युवा Content Creator हैं - भाई यश सालुङ्के। यश की खास बात ये है कि वो Content Creator भी हैं और क्रिकेटर भी हैं। संस्कृत में बात करते हुए क्रिकेट खेलने की उनकी Reel लोगों ने खूब पसंद की है।

कमला और जान्हवी, इन दो बहनों का काम भी शानदार है। ये दोनों बहनें अध्यात्म, दर्शन और संगीत पर Content बनाती हैं। Instagram पर एक और युवा का चैनल है 'संस्कृत छात्रोहम्'। इस चैनल को चलाने वाले युवा-साथी संस्कृत से जुड़ी जानकारीयाँ तो देते ही हैं, वो संस्कृत में हास-परिहास के Video भी बनाते हैं। युवा संस्कृत में ये Video भी खूब पसंद करते हैं। आप में से कई साथियों ने समष्टि के Video भी देखे होंगे। समष्टि संस्कृत में अपने गानों को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत करती है। एक और युवा है 'भावेश भीमनाथनी'। भावेश संस्कृत श्लोकों, आध्यात्मिक दर्शन और सिद्धांतों के बारे में बात करते हैं।

भाषा किसी भी सभ्यता के मूल्यों और परंपराओं की वाहक होती है। संस्कृत ने ये कर्तव्य हजारों वर्षों तक निभाया है। ये देखना सुखद है कि अब संस्कृत के लिए भी कुछ युवा अपना कर्तव्य निभा रहे हैं।

कोमरम भीम की...
ना विनम्र निवाली।
आयन प्रजल हृदयाल्लो...
एप्पटिकी निलिचि-वूंटारू।

अब मैं आपको जरा Flashback में लेकर चलूँगा। आप कल्पना करिए, 20वीं सदी का शुरुआती कालखंड! तब दूर-दूर तक आजादी की कहीं कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही थी। पूरे भारत में अंग्रेजों ने शोषण की सारी सीमाएं लांघ दी थी और उस दौर में हैदराबाद के देश भक्त लोगों के लिए दमन का दौर और भी भयावह था। वे क्रूर और निर्दयी निजाम के अत्याचारों को भी झेलने को मजबूर थे। गरीबों, वंचितों और आदिवासी समुदायों पर तो अत्याचार की कोई सीमा ही नहीं थी। उनकी जमीनें छीन ली जाती थीं, साथ ही भारी टैक्स भी लगाया जाता था। अगर वे इस अन्याय का विरोध करते, तो उनके हाथ तक काट दिए जाते थे।

ऐसे कठिन समय में करीब बीस साल का एक नौजवान इस अन्याय के खिलाफ खड़ा हुआ था। आज एक खास वजह से मैं उस नौजवान की चर्चा कर रहा हूँ। उसका नाम बताने से पहले मैं उसकी वीरता की बात आपको बताऊँगा। उस दौर में जब निजाम के खिलाफ एक शब्द बोलना भी गुनाह था। उस नौजवान ने सिद्दीकी नाम के निजाम के एक अधिकारी को खुली चुनौती दे दी थी।

निजाम ने सिद्दीकी को किसानों की फसलें जब्त करने के लिए भेजा था। लेकिन अत्याचार के खिलाफ इस संघर्ष में उस नौजवान ने सिद्दीकी को मौत के घाट उतार दिया। वो गिरफ्तारी से बच निकलने में भी कामयाब रहा। निजाम की अत्याचारी पुलिस से बचते हुए वो नौजवान वहाँ से सैकड़ों किलोमीटर दूर असम जा पहुँचा।

मैं जिस महान विभूति की चर्चा कर रहा हूँ उनका नाम है कोमरम भीम। अभी 22 अक्टूबर को ही उनकी जन्म-जयंती मनाई है। कोमरम भीम की आयु बहुत लंबी नहीं रही, वो महज 40 वर्ष ही जीवित रहे लेकिन अपने जीवन-काल में उन्होंने अनगिनत लोगों, विशेषकर आदिवासी समाज के हृदय में अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने

निजाम के खिलाफ संघर्ष कर रहे लोगों में नई ताकत भरी। वे अपने रणनीतिक कौशल के लिए भी जाने जाते थे। निजाम की सत्ता के लिए वे बहुत बड़ी चुनौती बन गए थे। 1940 में निजाम के लोगों ने उनकी हत्या कर दी थी। युवाओं से मेरा आग्रह है कि वे उनके बारे में अधिक से अधिक जानने का प्रयास करें।

कोमरम भीम की...
ना विनम्र निवाली।
आयन प्रजल हृदयाल्लो...
एप्पटिकी निलिचि-वूंटारू।

My humble tributes to Komaram Bhimji,
He remains forever in the hearts of people.

अगले महीने की 15 तारीख को हम जनजातीय गौरव दिवस मनाएंगे। यह भगवान बिरसा मुंडा जी की जयंती का सुअवसर है। मैं भगवान बिरसा मुंडा जी को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ। देश की आजादी के लिए, आदिवासी समुदाय के अधिकारों के लिए, उन्होंने जो काम किया वो अतुलनीय है। मेरे लिए ये सौभाग्य की बात है कि मुझे झारखंड में भगवान बिरसा मुंडा जी के गाँव उलिहातु जाने का अवसर मिला था। मैंने वहाँ की माटी को माथे पर लगाकर प्रणाम किया था। भगवान बिरसा मुंडा जी और कोमरम भीम जी की तरह ही हमारे आदिवासी समुदायों में कई और विभूतियाँ हुई हैं।

'मन की बात' के लिए मुझे आपके भेजे हुए ढेरों संदेश मिलते हैं। कई लोग इन संदेशों में अपने आस-पास के प्रतिभाशाली लोगों के बारे में चर्चा करते हैं। मुझे पढ़कर बहुत खुशी होती है कि हमारे छोटे शहरों, कस्बों, गाँवों में भी innovative ideas पर काम हो रहे हैं। अगर आप ऐसे व्यक्ति या समूहों को जानते हैं, जो सेवा की भावना से समाज को बदलने में जुटे हैं, तो मुझे जरूर बताइये। ■

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री रानी लक्ष्मीबाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। अत्यंत सुन्दर होने के कारण पेशवा बाजीराव द्वितीय ने उन्हें एक और नाम दे रखा था- “छबीली”। मनुबाई का जन्म 19 नवम्बर 1835 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता का नाम मोरोपन्त ताम्बे तथा माता का नाम भागीरथी बाई था। चार वर्ष की आयु में ही मनु को माता के स्नेह से वंचित हो जाना पड़ा। उनके पिता मोरोपन्त को पेशवा बाजीराव द्वितीय ने कानपुर के पास विदूर में बुलवा लिया। यहाँ मनुबाई का पेशवा के पुत्र श्री नानासाहब के साथ घुड़सवारी करना, तलवार तथा धनुष, तीर चलाना सीखने का अवसर मिला। मनुबाई प्रतिभाशाली तो थी ही शीघ्र ही उन्होंने धनुर्विद्या एवं अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी निपुणता प्राप्त कर ली। तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हुआ। तब से वे रानी लक्ष्मीबाई कहलाने लगीं। सोलह वर्ष की आयु में वे माता बनीं। किन्तु नवजात पुत्र शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। पुत्र शोक में व्याकुल राजा गंगाधर राव भी नवम्बर 1853 में स्वर्गवासी हो गए। तब उन्होंने दामोदर राव को दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया।

राजा गंगाधर राव की मृत्यु का लाभ लेने के लिए तथा रानी को निर्बल मानकर 16 मार्च 1854 को तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने अपनी हड़प-नीति के अर्न्तगत झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करने की घोषणा कर दी। लार्ड डलहौजी की हड़प-नीति का रानी ने पुरजोर विरोध किया तथा ब्रिटिश साम्राज्य को स्पष्ट चेतावनी देते हुए घोषणा की- मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी। अंग्रेजों की इस कुटिल नीति का परिणाम झाँसी के अलावा सतारा, नागपुर, उदयपुर, जैतपुर, बामोर, संबलपुर, अवध आदि रियासतों को भी भोगना पड़ा। इस कुटिल नीति के अर्न्तगत अंग्रेजों ने राजाओं, नवाबों तथा यहां तक की दिल्ली बादशाह की पेंशन भी, या तो कम कर दी या बन्द ही कर दी और धीरे-धीरे उन रियासतों को येन केन प्रकारेण ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करना प्रारम्भ कर दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब, तात्याटोपे आदि के नेतृत्व में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि निर्मित हुई। इसी योजना के तहत झाँसी में भी 16 मार्च 1857 से लेकर 5 जून 1857 तक क्रांति की तैयारियां प्रारंभ हुईं। उन्होंने पुरुष सैनिकों के साथ-साथ वीर नारियों की भी एक सेना तैयार की

तथा उनको युद्ध करने का पूरा प्रशिक्षण दिया।

अंग्रेजों के साथ युद्ध सुनिश्चित था अतः

रानी ने झाँसी के राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए दीवान रघुनाथ सिंह को सेनापति नियुक्त किया। गोस मुहम्मद तोपों के दस्ते के प्रधान बनाए गए। भाऊ बख्शी को उनका सहयोगी बनाया गया। बुरहानुद्दीन और मोती बाई को जासूसी विभाग सौंपा। बारूद बनाने के लिए कुशल व्यक्ति बुलवाए गए। कड़क बिजली, भवानी शंकर जैसी नालदार तोपों को चुस्त-दुरुस्त किया गया पर अंग्रेजों के साथ युद्ध करने से पूर्व उन्हें दो युद्ध और लड़ने पड़े। इनमें पहला युद्ध महाराज गंगाधर राव के संबंधी सदाशिव राव से हुआ। उसने ग्वालियर की सहायता से झाँसी पर आक्रमण कर वहां के निकटवर्ती दुर्ग पर अधिकार कर लिया था और अपने को राजा घोषित कर लिया था। रानी ने उसका सामना किया और उसे बन्दी बनाकर झाँसी के किले में रख दिया। दूसरा युद्ध ओरछा राज्य के दीवान नरथे खान के साथ हुआ। नरथे खान ने बीस हजार की सेना लेकर झाँसी के मऊरानीपुर और बरुआ सागर पर अधिकार कर लिया था। उसने झाँसी के किले को चारों ओर से घेरकर तोपों से प्रहार किया। दोनों ओर से भीषण गोलाबारी हुई। अन्त में नरथे खान प्राण लेकर भागा।

इसके बाद रानी का भीषणतम और अन्तिम युद्ध अंग्रेजों के साथ हुआ। अंग्रेजी सेना के ब्रिगेडियर स्टुमर्ट के सहयोग से, सर ह्यूरोज ने 21 मार्च 1858 को झाँसी को घेर लिया। यह युद्ध बारह दिन तक चला पर इल्हा जू बुन्देला तथा अली बहादुर जैसे देशद्रोहियों ने विश्वासघात किया और किले का ओरछा दरवाजा अंग्रेजों की सेना के लिए खोल दिया। इस युद्ध में बानपुर के राजा मर्दनसिंह तथा बाँदा के नवाब ने रानी की सहायता की। 1 अप्रैल 1858 को कालपी से राव साहब ने तोपखाने के साथ बीस हजार की सेना सहायतार्थ भेजी पर उसका लाभ झाँसी को नहीं मिल सका। अब पराजय निश्चित थी क्योंकि रानी के महल के चारों ओर अंग्रेजों ने भीषण नरसंहार और अग्निकांड शुरू कर दिया था। तब रानी ने अपने सब सहयोगियों को बुलाकर उनसे भविष्य की रणनीति तय करने के लिए परामर्श किया। सबने मिलकर यह तय किया कि वे सब केसरिया झंडा

लेकर सूर्योदय के पूर्व ही किले से निकलकर, युद्ध करते हुए मृत्यु पर्यन्त शत्रुओं से जुझेंगे। जीवित रहते हुए अंग्रेजों के हाथ बन्दी नहीं होंगे। महारानी के लिए यह तय किया गया कि वह अपने दल के साथ रात्रि में ही कालपी के लिए प्रस्थान करेंगी।

रात के चौथे पहर में रानी अपने दल के साथ नगर की ओर के भांडेरी फाटक से मारकाट करती हुए निकली और कालपी के लिए प्रस्थान कर गई। झलकारी बाई ने रानी का पैचदार साफा बांधा और अंग्रेजों के सामने समर्पण कर दिया ताकि अंग्रेज युद्ध बन्द कर दें और रानी सुरक्षित रहें ह्यूरोज चालाक था। उसने रानी का पीछा किया। कालपी से रानी ग्वालियर पहुंची। उन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया पर 16 जून 1858 को अंग्रेजों ने वहां भी आक्रमण कर दिया। भीषण युद्ध हुआ पर अन्ततः झाँसी की सेना को परास्त होना पड़ा। रानी का घोड़ा उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए भागा पर एक बरसाती नाले के सामने आ जाने के कारण रानी को रूकना पड़ा। घोड़ा मारा गया। रानी की पसलियों में गोली लगी। एक गोरे की तलवार का भरपूर वार उनके माथे और कन्धे को चीर गया। रानी ने आदेश दिया कि उनकी मृत देह अंग्रेजों के हाथ न पड़ने पाए और साधु गंगादास के हाथ से गंगाजल पीकर देह का त्याग किया। उनकी मृत देह को घास की चिता पर रखकर अग्नि संस्कार किया गया। उनके इस बलिदान पर ह्यूरोज ने कहा- ‘समस्त विश्व में झाँसी की रानी सर्वाधिक वीर तथा कुशल योद्धा थीं। मखमली दस्तानों के भीतर उनकी उँगलियां फौलादी थीं। इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री ने देश के लिए बलिदान दिया। ■

बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया।

1894 में मानसून के छोटा नागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की। 1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजों से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केंद्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके में “धरती बाबा” के नाम से पुकारा और पूजा जाता था। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़त अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत से औरतें और बच्चे मारे गये



थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये। बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुंडा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुंडा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में राँची में बिरसा मुंडा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है। बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुई थी। उनके द्वारा चलाया जाने वाला सहसादवादी आंदोलन ने बिहार और झारखंड में खूब प्रभाव डाला था। केवल 25 वर्ष के जीवन में उन्होंने इतने मुकाम हासिल कर लिए थे कि आज भी भारत की जनता उन्हें याद करती है और भारतीय संसद में एकमात्र आदिवासी नेता बिरसा मुंडा का चित्र लगा है।

उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहलु से कुरुमदा आकर बस गया जहाँ वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया। अब वो अपने विद्रोह में इतने उग्र हो गये थे कि आदिवासी

जनता उनको भगवान मानने लगी थी और आज भी आदिवासी जनता बिरसा को भगवान बिरसा मुंडा के नाम से पूजती है। उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगों को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौ-हत्या का विरोध करने की लोगों को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो। उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जाता है।

अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था। बिरसा मुंडा ने सन् 1900 में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा “हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते हैं और कभी अंग्रेज नियमों का पालन नहीं करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजों, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।” इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजों के पास भेजा गया तो अंग्रेजों ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रुपये का इनाम रखा था। ■



सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया।

सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआ-छूत का विरोध किया।



महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 19वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरितियों को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किया। अछूतोद्धार, नारी शिक्षा, विधवा-विवाह और किसानों के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र, में हुआ था। परिवार बेहद गरीब था और जीवन-यापन के लिए बागबगीचों में माली का काम करता था। ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेद-भाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमें पढ़ने की ललक बनी रही। सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलू कार्यों के बाद जो समय बचता उसमें वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास-पड़ोस के बुजुर्गों से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे। अरबी-फारसी के विद्वान गफ्फार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ोसी थे। उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति रुचि देखकर उन्हें पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया। ज्योतिबा फिर से स्कूल जाने लगे। वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। धर्म पर टीका-टिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि धर्म में इतनी विषमता क्यों है? जाति भेद और वर्ण व्यवस्था क्या है? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोंडवे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिंतन किया करते।

उन्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं सूझता कि इतना

बड़ा देश गुलाम क्यों है? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी। उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथों पर बंटे इस देश का सुधार तभी संभव है जब लोगों की मानसिकता में सुधार होगा। उस समय समाज में वर्णभेद अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। उन्होंने स्त्री एवं दलितों की शिक्षा के लिए सामाजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि माताएँ जो संस्कार बच्चों पर डालती हैं, उसी में उन बच्चों के भविष्य के बीज होते हैं। इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है। उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबंध करेंगे। उस समय जात-पात, ऊँच-नीच की दीवारें बहुत ऊँची थी। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बंद थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चों को छिपाकर लाते और वापस पहुंचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुलेआम स्कूल चलाना प्रारंभ कर दिया।

स्कूल प्रारम्भ करने के बाद ज्योतिबा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके विद्यालय में पढ़ाने को कोई तैयार न होता। कोई पढ़ाता भी तो सामाजिक दबाव में उसे जल्दी ही यह कार्य बंद करना पड़ता। इन स्कूलों में पढ़ायेँ कौन? यह एक गंभीर समस्या थी। ज्योतिबा ने इस समस्या के हल हेतु अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ना सिखाया और फिर मिशनरीज के नामल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। प्रशिक्षण के बाद वह भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं। उनके इस कार्य से समाज के लोग कुपित हो उठे। जब सावित्री बाई स्कूल जाती तो लोग उनको तरह-तरह से अपमानित करते। परन्तु वह महिला अपमान का धूँट पीकर भी अपना कार्य करती रही। इस पर लोगों ने ज्योतिबा को समाज

से बहिष्कृत करने की धमकी दी और उन्हें उनके पिता के घर से बाहर निकलवा दिया।

गृह त्याग के बाद पति-पत्नी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु वह अपने लक्ष्य से डिगे नहीं। अँधेरी काली रात थी। बिजली चमक रही थी। महात्मा ज्योतिबा को घर लौटने में देर हो गई थी। वह सरपट घर की ओर बढ़े जा रहे थे। बिजली चमकी उन्होंने देखा आगे रास्ते में दो व्यक्ति हाथ में चमचमाती तलवारें लिए जा रहे हैं। वह अपनी चाल तेज कर उनके समीप पहुंचे। महात्मा ज्योतिबा ने उनसे उनका परिचय व इतनी रात में चलने का कारण जानना चाहा। उन्होंने बताया हम ज्योतिबा को मारने जा रहे हैं।

महात्मा ज्योतिबा ने कहा उन्हें मार कर तुम्हें क्या मिलेगा? उन्होंने कहा पैसा मिलेगा, हमें पैसे की आवश्यकता है। महात्मा ज्योतिबा ने क्षण भर सोचा फिर कहा मुझे मारो, मैं ही ज्योतिबा हूँ, मुझे मारने से अगर तुम्हारा हित होता है, तो मुझे खुशी होगी। इतना सुनते ही उनकी तलवारें हाथ से छूट गई। वह ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े, और उनके शिष्य बन गए। महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनों से अपने सिद्धांतों व कार्यक्रमों के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया। सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआ-छूत का विरोध किया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया। महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने 'एग्जीक्यूटिव एक्ट' पास किया। धर्म, समाज और परंपराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखीं। 28 नवम्बर सन 1890 को उनका देहावसान हो गया। ■



कांग्रेस बनाम जनसंघ



आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है।



पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद ध्येयविहीन कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं के समक्ष यह समस्या थी कि अब कौन सी वस्तु शेष है, जिसके लिए अपनी सेवाएं समर्पित की जाएं? कांग्रेस की इस ध्येयविहीनता को महात्मा गांधी ने समझा था और इसलिए वे कांग्रेस को समाप्त कर देने पर बराबर जोर देते थे, किंतु कांग्रेस के अन्य नेताओं ने कांग्रेस को अपने स्वार्थ का साधन बना लिया और उसे भंग नहीं किया।

उद्देश्य समाप्त होने पर संस्था निर्जीव हो

जाती है। कांग्रेस का काम खत्म हो गया, अब उसे समाप्त कर देना चाहिए था। परंतु नेताओं ने इसे भी नहीं माना। फलतः मृत कांग्रेस के शव को पंडित नेहरू लिए घूम रहे हैं और उसे जिलाने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। कांग्रेस का शव अधिक सड़ जाने से गल-गल कर गिरा। फलतः अनेक पार्टियों का जन्म हुआ, जिसमें पहले सोशलिस्टों का नंबर है। ये सब पार्टियां केवल विरोध के लिए बनी हैं, जिनका कोई आधार नहीं। हमें तो अपनी समस्याओं को हल करने के लिए एक मौलिक आधार को लेना है। हम अनुरोध करने के लिए हैं, विरोध करने के लिए नहीं। जनसंघ केवल कांग्रेस के विरोध के लिए नहीं है। देश को सुखी तथा वैभवशाली बनाने का कार्य इसके सामने प्रमुख है।

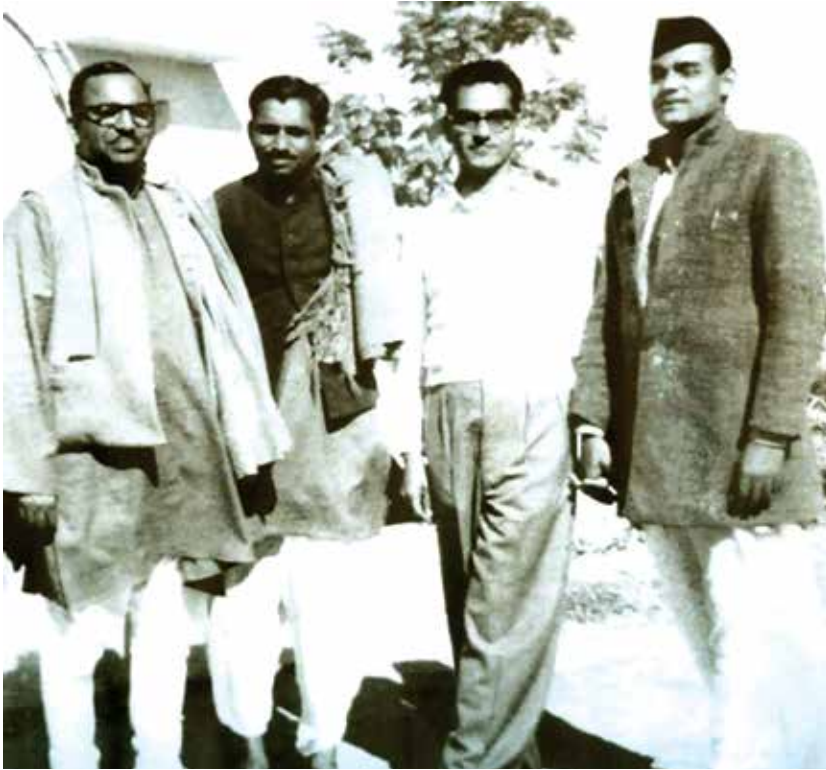
कांग्रेस की ध्येयविहीनता ने देश में निराशा का वातावरण ला दिया। लोग अनुभव करने

लगे कि उनका धर्म मिट रहा है, संस्कृति मिट रही है, जीवनोपयोगी वस्तुएं अन्न-वस्त्र अलय हो रहे हैं। अतः जन-मन में निराशा का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक था। जनसंघ का उदय इस निराशावाद के वातावरण को छिन्न-भिन्न कर देश में आशा और स्फूर्ति का संचार करने के लिए हुआ है।

स्वतंत्रता की लड़ाई में कांग्रेस केवल पेशवा थी और 35 करोड़ जनता उसके साथ उस लड़ाई में संलग्न थी। नेता होने के नाते उसे स्वतंत्रता प्राप्ति का यश प्राप्त हुआ। कांग्रेस के नेता आज यह कह रहे हैं कि स्वतंत्रता हमने दिलवाई है। उन लोगों से पूछना चाहिए कि योगी अरविंद जैसे लोग तथा जिन्होंने अंडमान में अपना जीवन व्यतीत किया और हंसते हुए स्वतंत्रता के लिए ही अपने जीवन की कुर्बानी की, क्या वे कांग्रेस के झंडे के नीचे आए थे? वासुदेव बलवंत फड़के कांग्रेस से बाहर ही स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। रासबिहारी बोस, भगतसिंह तथा वीर सावरकर क्या कांग्रेसी थे? सुभाष चंद्र बोस ने भी जो महान कार्य किए थे, वे भी कांग्रेस से अलग होने पर ही। परंतु इस सबका श्रेय कांग्रेस अपने ऊपर ले रही है। सच्ची बात तो यह है कि भारत की 40 करोड़ जनता ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और हम सबने इस युद्ध में भाग लिया।

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है। अभी हाल में मंडी के राजा को ब्राजील का राजदूत इसलिए बना दिया गया, क्योंकि उन्होंने राजकुमारी अमृत कौर के विरोध से अपना नाम वापस ले लिया है। पता नहीं उनमें उस पद की कहाँ तक योग्यता है।

उसी प्रकार स्वार्थ की सिद्धि के लिए ही कांग्रेस सरकार ने कंट्रोल लगा रखा है। यदि कंट्रोल जनता की भलाई के लिए हो तो ठीक भी है, किंतु यहाँ पर वह इसलिए है कि उसके कारण व्यापारी और पूंजीपति कांग्रेस के अँगूठे के नीचे रहते हैं। वोट लेने के समय लोगों को धमकियाँ दी जाती हैं कि उनके लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे। उनको याद दिलाया जाता है कि उन्हें कितने परमिट दिए गए हैं। इस प्रकार जनता को दुःख देने के लिए कांग्रेस और पूंजीपति मिल जाते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कांग्रेस सरकार ने 287 मन की चीनी मनमाने दामों में मिल मालिकों को बेचने की आज्ञा इसलिए दे दी थी कि उन्होंने कांग्रेस फंड में कुछ चंदा दे दिया था। कांग्रेस ने देश में तीन भयंकर भूलों की हैं। पहली, बिना



किसी आदर्श के कार्य किया है, दूसरी, केवल अपनी पार्टी की स्वार्थ सिद्धि की है, तीसरी, यदि आदर्श सम्मुख रखा भी तो वह विदेशी। उदाहरण स्वरूप यदि आज हमारे देश में अन्न की कमी है तो उसके लिए हमने विदेशों से ट्रैक्टर मंगाए किंतु यहां चलेंगे कैसे? मकानों की कमी होने पर हमने सीमेंट, लोहा और ईंट जनता को देने के बजाय मकान बनाने की फैक्टरी स्थापित की और करोड़ों रुपए फूंक दिए।

भारतीय जनसंघ का उद्देश्य भारतीय जीवन के लिए अत्यंत पवित्र और स्फूर्तिदायक है। ये सिद्धांत और आदर्श नए नहीं हैं। वे इतने पुराने हैं कि जबसे मानव मानव को पहचानने लगा, प्रकृति का प्रादुर्भाव इस भूमि पर हुआ तथा भारत भूमि को पहचानने के साथ राष्ट्रीयता का उदय हुआ। केवल एक राष्ट्रीयता की भावना को लेकर, जिसको 'एकं सद्विप्रा: बहुधा वदन्ति' कहा गया है, जनसंघ खड़ा हुआ है। इसीलिए देश के कोने-कोने में जहां जनसंघ गया है, जनता में उसका आदर हुआ है।

भारतीय जनसंघ का जन्म देश के सम्मुख एक स्वदेशीय आदर्शवाद रखने के निमित्त हुआ और उसका आधार कुछ मर्यादाओं पर स्थिर है। प्रथम तो जनसंघ भौगोलिक मर्यादा को मानता है और यह कहता है कि देश का विभाजन गलत है। यह ध्यान रखना चाहिए कि

यह कहना भावनाओं को उभारना नहीं है, वरन कुछ तथ्यों को तर्क की कसौटी पर कसना है। आज हमारे देश में अन्न की कमी है और करोड़ों रुपयों का अन्न हमें बाहर से मंगाना पड़ता है। पाकिस्तान में वह बहुतायत से है। दूसरी ओर पाकिस्तान के पास कोयला, लोहा और कपड़ा नहीं है, जिसके लिए उसको परेशानी होती है। पूर्वी बंगाल में जूट सड़ रहा है, पश्चिम में जूट मिलें बंद हैं। पाकिस्तान में रुई बहुतायत है, हम उसे तेज दामों पर मिस्त्र या अमरीका से खरीद रहे हैं। यदि दोनों देश एक हो जाएँ तो आर्थिक दृष्टि से हम फिर स्वावलंबी बन सकते हैं और हमारी सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने बजट का 55 प्रतिशत और पाकिस्तान 60 प्रतिशत केवल सेना पर व्यय कर रहे हैं, जिससे दोनों देशों की आर्थिक अवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही साथ इस विभाजन के ही कारण हमें ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में रहकर अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ रही है, क्योंकि दोनों को यह डर है कि एक के द्वारा उसका साथ छोड़ देने पर अंग्रेज दूसरे की अधिक सहायता करेगा।

सांप्रदायिक समस्या का भी हल इस विभाजन से नहीं हुआ, क्योंकि यदि कल 35 करोड़ में 10 करोड़ मुसलमान भारत में थे तो आज चार करोड़ रह गए हैं, किंतु वह समस्या हल नहीं

हुई। दूसरी ओर पाकिस्तान में रह गए हिंदुओं पर अत्याचार और उनका निष्कासन हमारी आर्थिक तथा राजनीतिक दशा को हर समय चिंता युक्त बनाए रखते हैं।

कश्मीर समस्या का भी सबसे सरल हल विभाजन का अंत है। इस प्रकार सब दृष्टियों से अखंडता अनिवार्य है। किंतु लोग कहते हैं कि यह बेमानी है। उत्तरी तथा दक्षिण कोरिया, मिस्त्र तथा सूडान और आयरलैंड इत्यादि की एकता की बात तथा उसका समर्थन करने वाले लोग भारत तथा पाकिस्तान की एकता को सुनकर केवल इसलिए बौखला जाते हैं कि उससे उनके स्वार्थों का हनन होता है। आठ साल पूर्व पाकिस्तान का बनना बेहूदा बात थी, किंतु वह बन गया। आज अखंडता 'बेहूदा' है, कल उन्हीं लोगों के सम्मुख वह भी हो जाएगा।

अखंड भारत की मांग हमारी नैतिक मांग है, क्योंकि श्री जिन्ना के अदला-बदली के प्रस्ताव को न मानकर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की शर्त हिंदुस्थान और पाकिस्तान दोनों के लिए कांग्रेस ने रखी थी। उस समय महात्माजी ने कहा था कि इस शर्त के पूरे न होने पर इनमें से कोई भी देश की अखंडता की मांग कर सकता है।

हमने अपनी शर्त पूरी कर दी है और अपना अधिकार प्राप्त कर लिया है। चार करोड़ मुसलमानों की रक्षा करने के लिए हिंदुस्थान का प्रत्येक दल तैयार है परंतु पाकिस्तान ने इस शर्त को पूरा नहीं किया। पूर्वी बंगाल के हिंदुओं पर किया गया बर्बर अत्याचार ही प्रमाण के लिए पर्याप्त है। पंडित नेहरू इसके लिए आज क्या कर रहे हैं? सरदार पटेल तो सांप्रदायिक नहीं थे, उन्होंने भी कहा था निवासियों को रखने के लिए आधा बंगाल पाकिस्तान से मांगा जाएगा। आज इस प्रश्न को नेहरूजी क्यों नहीं रखते?

किंतु यह अखंडता किसी आक्रमण से नहीं प्राप्त होगी। यह समस्या का ठीक हल नहीं है। वह तभी होगा जब यहां का हिंदू और यहाँ का मुसलमान इन बातों को समझ लेगा कि उसका भला इसी में है और यह विचार दिनों दिन जोर पकड़ते-पकड़ते एक दिन यह संभव हो जाएगा।

विचारों के ही कारण भारत बँटा है, विचारों से ही यह एक होगा। हमारी दूसरी मर्यादा एक राष्ट्र में विश्वास है। हम मुस्लिम लीग के द्वि-राष्ट्रवाद को नहीं मानते। हमारा कहना यह है कि यदि फारस, चीन और तुर्की का मुसलमान अपने धर्म को मानता हुआ अलग-अलग राष्ट्रीयता मानता है तो भारत का मुसलमान ऐसा क्यों नहीं कर सकता? उन देशों में लोग अपने देश की भाषा और संस्कृति को मानते हैं। यहाँ भी मुसलमानों को इस देश की संस्कृति और राष्ट्रभाषा हिंदी को मानना चाहिए। ■



- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक करोड़ 26 लाख बहनों के खातों में लाडली बहना योजना की राशि अंतरित की।



- प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने सक्रिय कार्यकर्ता सम्मेलन एवं दीपावली मिलन समारोह को संबोधित किया।



- प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने खादी के वस्त्र खरीदे।



- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बिहार में चुनावी जनसभाओं को संबोधित किया।



- प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने दीपावली मिलन समारोह को संबोधित किया।



- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव व प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने रन फॉर यूनिटी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।



- प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने छठ पूजा कर शुभकामनाएं दीं।



- भाजपा महासचिव श्री अरुण सिंह एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के अंतर्गत आयोजित पत्रकार-वार्ता को संबोधित किया।

सेवा का 25वां वर्ष

